Postal Regn. No. C.G./RYP DN/65/2022-24
रायपुर से प्रकाशित हिंदी मासिक पत्रिका
प्रकाशन तिथि, 1 अगस्त 2023

आर.एन.आई.पंजीयन क्र.
CHHHIN/2017/72506

किलोल

वर्ष 7 अंक 8, अगस्त 2023

http://www.kiloi.co.in

WINGS2FLY SOCIETY
COME LETS FLY

म. नं. 580/1, गली न. 17 बी,
दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर
ईमेल: wings2flysociety@gmail.com

मूल्य
खुदरा 80/-
वार्षिक 720/-
आजीवन 10000/-

संपादक- डॉ. रचना अजमेरा

सह-संपादक

डॉ. एम सुधीश, डॉ. सुधीर श्रीवास्तव, प्रीति सिंह, ताराचंद जायसवाल, बलदाऊ राम साहू, नीलेश वर्मा, धारा यादव, डॉ. शिप्रा बेग, पुर्णेश डडसेना, वाणी मसीह, राज्यश्री साहू

ई-पत्रिका, ले आउट, आवरण पृष्ठ

कुन्दन लाल साहू

अपनी बात

प्यारे बच्चों एवं शिक्षक साथियों,

अगस्त का महीना हम सब के लिए बहुत महत्वपूर्ण है. अगस्त के महीने में ही 15 अगस्त 1947 को बरसों की गुलामी से हमारा देश आजाद हुआ था. हमारे पुरखों ने बड़ी ही सूझ बूझ व जतन से हमें आजादी दिलाया है. आजादी के उत्साह को हम राष्ट्रीय पर्व के रूप में पूरे उत्साह से मनाते है. आप भी अपने विद्यालय में मित्रों के साथ कार्यक्रम में अपनी सक्रिय सहभागिता देते होंगे.

इस साल अगस्त का महीना इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अगस्त माह में ही भाई बहनों के अटूट रिस्ते व विश्वास का पर्व रक्षाबंधन है. रक्षा सूत्र का यह बंधन प्रेम स्नेह व आत्मीयता की जड़ से जुड़ा है. मुझे विश्वास है आप इस अवसर पर अपने छोटे भाई बहनों को आगे पढ़ने,बढ़ने व सीखने में हर संभव मदद के लिए संकल्पित होंगे.

और हरे हाँ! एक बात तो भूल ही गई थी किलोल के साथ आपका हमेशा का स्नेह बंधन है उसे बनाये रखने के लिए आप नियमित अपनी रचनायें भेजना व पढ़ना न भूलें.

आपकी अपनी
डॉ. रचना अजमेरा

संस्थापक- डॉ. आलोक शुक्ला

मुद्रक कीरत पाल सलूजा तथा प्रकाशक श्यामा तिवारी द्वारा
- विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी म. न. 580/1 गली न. 17बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर, छ. ग. के पक्ष में.
सलूजा ग्राफिक्स 108-109, दुबे कॉलोनी, विधान सभा रोड़, मोवा जिला रायपुर, छत्तीसगढ़ से मुद्रित
तथा विंग्स टू फ्लाई सोसाइटी, म.न.580/1 गली. न. 17 बी, दुर्गा चौक, आदर्श नगर, मोवा, रायपुर से प्रकाशित, संपादक डॉ. रचना अजमेरा.

अनुक्रमाणिका

कोयल 8

इमली 9

लोकप्रिय पत्रिका किलोल 10

पंचतंत्र की कहानी 11

सबसे बड़ा शत्रु अहंकार 13

पिता जिनके पास है उसकी बुलंद तकदीर खास है 15

मेरे पापा 17

अधूरी कहानी पूरी करो 19

लंगड़ा कुत्ता 19

अनन्या तंबोली, जांजगीर द्वारा पूरी की गई कहानी 20

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी 20

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी 22

सच्ची जीत 22

मैं भी पढ़ना चाहता हूं 24

धरती वंदना 26

प्यारा मोर 28

चित्र देख कर कहानी लिखो 29

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी 29

रामेश्वरी सी.के. जलहरे, बिनौरी द्वारा भेजी गई कहानी 31

आस्था तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी 32

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र 33

खुल गया ,स्कूल 34

कइसे जग सिरजाये 35

बाल पहेलियाँ सब्जियों की 36

चंद्रशेखर आजाद 38

महान वैज्ञानिक एम. जी. के. मेनन 43

चूहा दाँत ले गया 46

योग ध्यान का आधार है 48

कुकुर अउ कउंवा 49

अंतरात्मा की आवाज बताती है सही और गलत 51

प्रकृति में संरक्षण का नियम अपनाएंगे 54

नियमित योग करेंगे हम 55

आओ कुछ नया जाने 56
बाल पहेलियाँ 57
आलस्य 59
हमारे प्रेरणा स्रोत: स्वामी आत्मानंद 60
संवाद 62
पढ़-लिख नाँव कमाहूँ 63
दाखिला लें सरकारी 64
छत्तीसगढ़ी जनऊला 67
बादर तहूँ नहाये कर 69
बारिश आई 70
शिक्षा क्षेत्र में भारत को विश्वगुरु बनाना है 72
इतनी गर्मी का कारण 73
मोबाइल ने चोर पकड़ा 75
अब स्कूल जाना हैं 77
दृढ़ता और संतोष, खुशियों के स्त्रोत 78
स्वच्छता गीत 81
भारत में उत्पादित चीजें अपनाना है 83
पढ़ई-लिखई सबके अधिकार 85
युवा भारत बनाम नशे की लत 87
शाला प्रवेश दिवस 90
घर में बड़े बुजुर्गों ज़रूरी है 92
पिज्जा 94
सौर मंडल 96
आओ चलें उन राहों पर 97
मुस्कान में पराए भी अपने होते हैं 99
अधूरा कर्त्तव्य 101
भारतीय संस्कार 103
स्कूल खुल गे 105
भारतीय नारी सब पर भारी 106
मेहनत का फल 108
सुघ्घर हे घिवरा 109
साहित्य राष्ट्र की महानता 111
जरूरी है 113
बिजली खंभा 114

नशा नाश की जड़ 115
मैं उड़ती नील गगन में 117
मंजिल मिल ही जाएगी 118
नशा है देशप्रेम का 120
हे नौजवानों उठो,जागो 121
आजादी 123
यादें स्कूल की 124
खामियाँ नहीं, खुबियाँ ढूंढो 126
आदर्श शिक्षक 128
शिक्षा 129
मेरे प्यारे पापा 131
मेरा प्यारा देश 133
बर रुख 135
पानी बरसे 137
बरखा रानी 138
उमड़-घुमड़ कर बादल आया 139
जीत कर आना है 140
चलो स्कूल चलें हम 142
लू एक भीषण गर्मी 144
समय अमर है 146
सड़क की फिसलन 147
खान-पान 148
आगे बरखा रानी 149
नया भारत 150
बल तेरे कितने रूप 151
तीर्थयात्रा 154
सावन सुन्दरी 158
डिजिटल इंडिया का इंटरनेट उत्सव 160
पहली बारिश 164
रक्षाबंधन 165
पानी का मूल्य और मानव को समझना है 166
ओमी को मिला सबक 167
अन्नदाता किसान 171
विश्व जनसंख्या दिवस में चेतना जागृत करें 173

बादल छाया चारों ओर 175
किताबी शिक्षा बनाम व्यवहारिक शिक्षा 176
वर्तमान अवसर 179
WORLD WIDE WEB DAY 183
प्रवेश उत्सव 186
नारी 187
हमर गांव हमर गोठ 189
मुझे मेरे देश से प्यार है 190
पैरेंट्स दर्पण 191
बाँधसरोवर की समस्या टली 194
बारिश आई 198
परिश्रम से कमाया धन 199
आश्चर्यजनक बातें 201
जैसी करनी वैसी भरनी 202
नाव और व्यापार 203
सदाचार एक नैतिक गुण 204
माता-पिता में ही ईश्वर अल्लाह समाया है 205
स्कूल खुला फिर 207
ओलम्पिक छतीसगढ़िया 208
वर्षा रानी 209
सावन 210
जब देश की आजादी के 100 वर्ष पूरे होंगे 212
बाल पहेलियाँ 214
साथ मिलकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाना हैं 216
व्यायाम 218
मोर भारत माता के भुइयां 219
बारिश 220
पिताजी 221
शान तिरंगा 222
छतरी 224
हमारा तिरंगा 225
ओस 226
हाथी 227
गुरु का महत्व 228

संगति का असर 229
छुप जाता मच्छर 232
सुंदर हिंदुस्तान हमारा है 233
जिम्मेदार सोनू 234
पेड़ लगाओ 235
उमड़-घुमड़ के आओ बदरा 236
एक और अनोखी उड़ान, क्या होगा भारत का चाँद ? 237
झर-झर-झर बरसे पानी 240
प्रकृति कुछ कह रही है 241
रक्षाबंधन 243
हिम्मत न हारेंगे 244
मोर गाव 246
स्कूल चलो जायेंगे 247
पर्यावरण 248
पेड़ 249
उम्र के पड़ाव 250
बच्चे और बारिश 252
परिवार से बड़ा सृष्टि में कोई लोक नहीं 253
पृथ्वी 255
देश हमारा सबसे प्यारा 256
भाखा जनऊला 257

कोयल

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

कोयल गीत सुनाओ जी,
सबका मन बहलाओ जी.

अपनी मीठी बोली से,
गीत ख़ुशी के गाओ जी.

नीम पेड़ पे छुप बैठी,
जरा सामने आओ जी.

कागा को सब मार रहे,
पर तुम मत घबराओ जी.

अपने गुण से कोयलिया,
सबकी चाहत पाओ जी.

*****

इमली

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

खट्टी खट्टी धूम मचाती,
सारे बच्चों के मन भाती.

नमक संग चटखारे लेते,
मीठी चटनी खूब लुभाती.

चाट चटपटा सबको भाए,
पानी पूरी चटख बनाती.

गर्मी मौसम में जब आती,
चीकू मीठी को ललचाती.

*****

लोकप्रिय पत्रिका किलोल

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र

बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'किलोल 'है.
सबके मन में रही मधुर रस घोल है.

लेख, कहानी, कविता और पहेली सँग
नन्हें - मुन्नों की चित्रकारी अनमोल है.

रंगबिरंगे चित्रों से है सजी - धजी
मनोरंजन का पीट रही वह ढोल है.

पढ़कर इसको ज्ञान और विज्ञान बढ़े
भेद प्रकृति के सहज रही वह खोल है.

संस्कार, संदेश, सीख देती अनुपम
इसमें हिंदी, चित्रकला, भूगोल है.

लो खरीद, प्रत्येक महीने पढ़ा करो
हर बच्चे से, रही प्रेम से बोल है.

बच्चों की सर्वश्रेष्ठ पत्रिका बन करके
बच्चों के सँग करती खूब किलोल है.

*****

पंचतंत्र की कहानी

बंदर और खरगोश

एक बड़े-से जंगल में एक बंदर और एक खरगोश बड़े प्यार से रहते थे. दोनों में इतनी अच्छी दोस्ती थी कि हमेशा एक साथ खेलते और अपना सुख-दुख बांटते थे.

एक दिन खेलते-खेलते बंदर ने कहा, “मित्र खरगोश, आज कोई नया खेल खेलते हैं.” खरगोश ने पूछा, “बताओ कौन-सा खेल खेलने का मन है तुम्हारा?”

बंदर बोला, “आज हम दोनों को आँख-मिचोली खेलनी चाहिए.” खरगोश हंसते हुए कहने लगा, “ठीक है, खेल लेते है. बड़ा मज़ा आएगा.” दोनों यह खेल शुरू करने ही वाले थे कि तभी उन्होंने देखा कि जंगल के सारे पशु-पक्षी इधर-उधर भाग रहे हैं.

बंदर ने फ़ुर्ती दिखाते हुए पास से भाग रही लोमड़ी से पूछा, “अरे, ऐसा क्या हो गया है? क्यों सब भाग रहे हैं?” लोमड़ी ने जवाब दिया, “एक शिकारी जंगल में आया है, इसलिए हम सब अपनी जान बचाकर भाग रहे हैं. तुम भी जल्दी भागो वरना वह तुम्हें पकड़ लेगा.” इतना बोलकर लोमड़ी तेज़ी से वहाँ से भाग गई.

शिकारी की बात सुनते ही बंदर और खरगोश भी डर कर भागने लगे. भागते-भागते दोनों उस जंगल से काफ़ी दूर निकल आए. तभी बंदर ने कहा, “मित्र खरगोश, सुबह से हम भाग रहे हैं. अब शाम हो चुकी है. चलो, थोड़ा आराम कर लेते हैं. मैं थक गया हूँ.”

खरगोश बोला, “हाँ, थकान ही नहीं, प्यास भी बहुत लगी है. थोड़ा पानी पी लेते हैं. फिर आराम करेंगे.”

बंदर ने कहा, “प्यास तो मुझे भी लगी है. चलो, पानी ढूंढते हैं.”

दोनों साथ में पानी ढूंढने के लिए निकले. कुछ ही देर में उन्हें पानी का एक मटका मिला. उसमें बहुत कम पानी था. अब खरगोश और बंदर दोनों के मन में हुआ कि अगर इस पानी को मैं पी लूंगा, तो मेरा दोस्त प्यासा ही रह जाएगा.

अब खरगोश कहने लगा, तुम पानी पी लो. मुझे ज़्यादा प्यास नहीं लगी है. तुमने उछल-कूद बहुत की है, इसलिए तुम्हें ज़्यादा प्यास लगी होगी.

फिर बंदर बोला, “मित्र, मुझे प्यास नहीं लगी है. तुम पानी पी लो. मुझे पता है, तुमको बहुत प्यास लगी है.”

दोनों इसी तरह बार-बार एक दूसरे को पानी पीने के लिए कह रहे थे. पास से ही गुज़र रहा हाथी थोड़ी देर के लिए रुका और उनकी बातें सुनने लगा.

कुछ देर बाद हंसते हुए हाथी ने पूछा, “तुम दोनों पानी क्यों नहीं पी रहे हो?”

खरगोश ने कहा, “देखो न हाथी भाई, मेरे दोस्त को प्यास लगी है, लेकिन वो पानी नहीं पी रहा है.”

बंदर बोला, “नहीं-नहीं भाई, खरगोश झूठ बोल रहा है. मुझे प्यास नहीं लगी है. इसको प्यास लगी है, लेकिन यह मुझे पानी पिलाने की ज़िद कर रहा है.”

हाथी यह दृश्य देखकर बोलने लगा, “तुम दोनों की दोस्ती बहुत गहरी है. हर किसी के लिए यह एक मिसाल है. तुम दोनों ही इस पानी को क्यों नहीं पी लेते हो. इस पानी को आधा-आधा करके तुम दोनों पी सकते हो.”

खरगोश और बंदर दोनों को हाथी का सुझाव अच्छा लगा. उन्होंने आधा-आधा करके पानी पी लिया और फिर थकान मिटाने के लिए आराम करने लगे.

कहानी से सीख: सच्चे दोस्त हमेशा एक-दूसरे का ख्याल रखते हैं. सच्ची दोस्ती में स्वार्थ की कोई जगह नहीं होती.

*****

सबसे बड़ा शत्रु अहंकार

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर

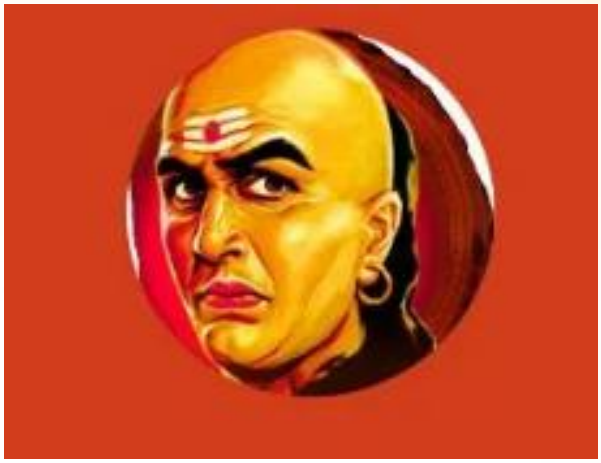

मनुष्य का सबसे बड़ा
शत्रु है अहंकार
अक्सर लोग नहीं कर पाते,
अहंकार को नकार

इस चार अक्षर के शब्द में
उलझ गई दुनिया सारी
मैं ये हूँ मैं वो हूँ कहकर
अंत में इज्जत अपनी वारी

अपनी खुबी को गिनाकर,
होते गर्वित अभिमानी
थोड़े गुण और उपलब्धियों से
मानते स्वयं को सर्वज्ञानी.

मैं मैं मैं मैं कहकर वो,
जब समझते स्वयं को सर्वोच्च

तब उनका यही घमंड बनाता,
उन्हें धूल से भी तुच्छ

मंजिल पाकर कभी भी,
न करना तुम घमंड.
नहीं तो बन जाएगा,
महल भी खंडहर

गर्वित होता है समुद्र जब,
सारा जहां मुझमें सकता है डूब.
तब तोड़ने उसका घमंड,
तैरने लगी तेल की एक बूंद

जब तुम जीत जाओगे हर चीज़,
करलोगे सपना साकार
जीता हुआ भी हार जाओगे,
इसलिए न करना अहंकार.

घमंड कभी किसी को,
नहीं दिखाता रास्ता ऊँचा
अंत में तो होता ही है,
घमंडी का सिर नीचा.

*****

पिता जिनके पास है उसकी बुलंद तकदीर खास है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

पिता ज़मीर पिता जागीर है
पिता ईश्वर अल्लाह का ही एक रूप है.
पिता जिनके पास है उसकी
बुलंद तकदीर खास है.

पिता परिवार की अग्रणी आस है,
जिंदगी में पिता का ओहदा खास है.
परिवार का खास प्यारा बॉस है,
पिता एक उम्मीद एक आस है।

पिता जिम्मेदारियों की गाड़ी से
लदा हुआ खास सारथी है,
नींद लगे तो पेट पर सुलाने वाला
हमदर्द साया और बिछौना है.

पिता हमारे सपनों को पूरा
करने वाली हमारी प्यारी जान है,
जग में कहने को एक बात है
माता-पिता बच्चों की पहचान है.

जो पिता का अपमान करते हैं,
वह जीव घोर अन्यायी और पापी है.
कंस दैत्य और रावण की कॉपी है,
परंतु धन्य पिता उनके लबों पर हमेशा माफ़ी है.

*****

मेरे पापा

रचनाकार- MDK नाचीज़ बीकानेरी

बड़े लाड-प्यार से मुझको पाला,
मेरे अच्छे पापा, मेरे प्यारे पापा.

छोटा था पर मैं नटखट भी तो था,
ऊँगली पकड़ आपने चलना सिखाया पापा.

स्कुल-अस्पताल-मेले तक भी आप,
कन्धों पर अपने बिठा के ले जाते पापा.

पढ़ा-लिखा कर मुझे इन्सान बनाया,
पेट काट अपने मुहँ का निवाला दिया पापा.

मुझे पैरों पर खड़ा होने लायक बनाया,
नहीं कोई चाह रखी कभी भी आपने पापा.

मेरा घर-परिवार सब कुछ आपने बसाया,
आपके आशीर्वाद से ही सब कुछ हूँ मैं पापा.

मैं कितना बदनसीब हूँ इस जहाँ में पापा,
तीन दशकों से आप का साथ नहीं है पापा.

बरसों बीत जाने के बाद भी आप,
मेरे घर पर साये की तरह रहते हो पापा.

नाचीज़ के सुख - दुःख में वक़्त - बेवक़्त,
रहबर बन कर मुझे राह दिखाते हो पापा.

*****

अधूरी कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिये दी थी–

लंगड़ा कुत्ता

एक व्यक्ति ने एक शक्तिशाली और वफादार कुत्ता पाल रखा था. वह अपने मालिक के घर की सावधानीपूर्वक रखवाली करता था. उसका मालिक उससे बहुत प्यार करता था और उसकी अच्छी तरह से देखभाल करता था.

एक दिन कुत्ता दुर्घटनाग्रस्त हो गया. दुर्भाग्यवश दुर्घटना में उसका पीछे का एक पैर बुरी तरह घायल हो गया. उसका घाव ठीक नहीं हुआ. अब बेचारा कुत्ता एक पैर से लंगड़ा कर चलता.

उसका मालिक भी अब उससे प्यार नहीं करता था, क्योंकि उसे लगता था कि एक लंगड़ा कुत्ता कभी भी अच्छा चौकीदार नहीं हो सकता. एक दिन...

इस कहानी को पूरी कर हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई उन्हें हम प्रदर्शित कर रहे हैं.

अनन्या तंबोली, जांजगीर द्वारा पूरी की गई कहानी

जब कुत्ता घायल हो गया उसका एक पैर कट गया तो उसका मालिक उसे प्यार करना बंद कर दिया.उसे लगता था कि लंगड़ा कुत्ता कभी भी अच्छा चौकीदार नहीं हो सकता. लेकिन एक दिन वह व्यक्ति अपने ऑफिस के काम से बाहर गया था तभी अचानक कुछ चोर उनके घर में चोरी के इरादे से घुसने लगे जब वे अंदर घुसे तो घर पर वह लंगड़ा कुत्ता सो रहा था उसने चोरों की आवाज सुनी चोर घर के सारे गहने,पैसे चुराकर भागने वाले ही थे कि कुत्ते ने उन्हें देख लिया और भौंकने लगा कुत्ते को देखकर चोर डर के मारे गहने लेकर भागने लगे कुत्ता भी उसके पीछे पीछे भागा.उसने अपने पैर की चोट की कोई चिंता नहीं की और तेज दौड़ कर चोरों को पकड़ने की कोशिश करते रहा. जब चोर तक कुत्ता पहुंच गया तो चोर गहने और पैसों का थैला छोड़कर अपनी जान बचाकर वहां से भाग निकले.कुत्ता गहनों और पैसों का बैग लेकर घर आ गया तभी घर का मालिक ऑफिस से आया उसने सारा सामान बिखरा हुआ देखा और बैग में पैसे,जेवर उस कुत्ते के पास में रखा हुआ था.उसे अपने आप में बहुत शर्मिंदगी हुई उसने अपने कुत्ते को प्यार से सहलाया और कहा मुझे माफ कर दो मैंने तुम्हें गलत समझा कि तुम्हारा पैर घायल हो गया है तो तुम सही तरह से काम नहीं कर पाओगे लेकिन तुमने तो आज मेरा घर लूटने से बचा लिया अब वह अपने कुत्ते को बहुत प्यार से रखता एवं उसकी देखभाल करता था दोनों में फिर से अच्छी दोस्ती हो गई थी.हमें किसी पर मुसीबत आ जाने पर उसे अकेले नहीं छोड़ना चाहिए मुसीबत के समय उनकी सहायता करनी चाहिए.

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा पूरी की गई कहानी

एक दिन उस मालिक के लड़का ने लंगड़ाते हुए कुत्ते को देखकर उसके पास गया.उन्होंने मन ही मन सोचने लगा-बेचारे कुत्ता लंगड़ा-लंगड़ा कर चल रहा है.इसे चलने में बहुत तकलीफ होता होगा.पापा इसका देखभाल भी नहीं कर रहे हैं. मैं इसका देखभाल करूँगा.यह सोचकर वह उस कुत्ते को घर ले आया.वह लड़का उसके घाव में मलहम पट्टी कर,उसे खाने के लिए भोजन दिया.उसके प्यार को देखकर कुत्ता उस बालक के पीछे-पीछे चलने लगा. दोनों में एक दूसरे के प्रति प्रेम बढ़ गया और दोनों खुशी से खेलने लगा.

एक दिन मालिक अपने लड़के और कुत्ते को खेलते हुए देखकर क्रोधित हो गए और वह अपने लड़के से कहा-इस कुत्ते से दूर ही रहा करो.इसे मैं अपने घर में रखने नहीं दूँगा.पापा की बातों को सुनकर बच्चा दु:खी हो गया और वह उस दिन शाम को भोजन नहीं

किया.तभी उसकी माँ ने अपने बच्चे के पास जाकर भोजन करने को मनाया. लड़के ने कुत्ते को रखने के लिए शर्त रखा.उसकी माँ मान गई.बच्चा खुशी-खुशी से भोजन किया और कुत्ते को भी खिलाया.

एक दिन मालिक का काम अधिक होने के कारण वह थक गया था.भोजन कर सभी जल्दी सो गये. कुत्ता भी बाहर में बैठे-बैठे सो गया.आधी रात को कुछ घसीटने का आवाज सुनाई दिया. कुत्ता देखा की,कोई बाहरी व्यक्ति भारी चीज को घसीटते ले जा रहा है.उसने जोर-जोर से भौंकना चालू किए.मालिक,कुत्ते को नींद खराब कर दिए.यह सोचकर चिल्लाते हुए उठा तो देखा कि उसके तिजौरी (बड़ा आलमारी) बाहर रखा हुआ है.जिसमें बहुत से रुपए,पैसे एवं सोने चांदी का जेवरात है.मालिक को समझने में देर नहीं लगी की चोर,चोरी करने आया था.ये कुत्ते की वजह से चोरी होने को बच गया.तब उस मालिक को एहसास हुआ कि लंगड़ा कुत्ते भी एक अच्छे चौकीदार हो सकते हैं.मालिक अपने किए पर शर्मिंदा हुआ.वह कुत्ता से पुनः प्यार करने लगा और अपने बच्चे को धन्यवाद दिया.जिसकी वजह से चोरी होते होते बच गया.

बच्चों इस कहानी से हमने समझा कि कुत्ता,लंगड़ा अर्थात असहाय होते हुए भी मालिक के घर में बहुत बड़े चोरी होने से बचा लिया.उसी प्रकार कोई भी व्यक्ति घर में बुजुर्ग या असहाय हो तो उसे सम्मान देते हुए प्रेम पूर्वक रखना चाहिए.

अगले अंक के लिए अधूरी कहानी

सच्ची जीत

एक गांव में एक किसान रहता था.

उसका नाम था शेरसिंह.

शेरसिंह शेर-जैसा भयंकर और अभिमानी था. वह थोड़ी सी बात पर बिगड़कर लड़ाई कर लेता था.

गांव के लोगों से सीधे मुंह बात नहीं करता था.

न तो किसी के घर जाता और न रास्ते में मिलने पर किसी को प्रणाम करता था.

गांव के किसान भी उसे अहंकारी समझकर उससे नहीं बोलते थे.

उसी गांव में एक दयाराम नाम का किसान आकर बस गया.

वह बहुत सीधा और भला आदमी था.

सबसे नम्रता से बोलता था, सबकी कुछ-न-कुछ सहायता किया करता था.

सभी किसान उसका आदर करते थे.

और अपने कामों में उससे सलाह लिया करते थे.

गांव के किसानों ने दयाराम से कहा -" भाई ! दयाराम तुम कभी शेरसिंह के घर मत जाना उससे दूर ही रहना.

वह बहुत झगड़ालू है."

दयाराम ने हंसकर कहा – " शेरसिंह ने मुझसे झगड़ा किया तो मैं उसे मार ही डालूंगा."

दूसरे किसान भी हंस पड़े.

वे जानते थे कि दयाराम बहुत दयालु.

है वह किसी को मारना तो दूर किसी को गाली तक नहीं दे सकता.

लेकिन यह बात किसी ने शेरसिंह से कह दी.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

इसके आगे क्या हुआ होगा? इस कहानी को पूरा कीजिए और इस माह की पंद्रह तारीख तक हमें kilolmagazine@gmail.com पर भेज दीजिए.

चुनी गई कहानी हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

मैं भी पढ़ना चाहता हूं

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

जंगल में पक्षियों का एक बड़ा स्कूल था जिसमें मोर और हंस सभी पक्षियों को पढ़ाते थे.

स्कूल में तोता मैना गौरैया बगुला बुलबुल कबूतर नीलकंठ तीतर कठफोड़वा शुतुरमुर्ग और कोयल पढ़ते थे.

सभी पक्षी रोज सुबह दस बजे स्कूल आते और और शाम चार बजे घर जाते दोपहर में सभी को एक घंटे खेलने की छुट्टी मिलती थी.

सभी पक्षी अपने टीचर मोर और हंस का बहुत सम्मान करते थे और उनका कहा मानते थे. सब मिल जुल कर पढ़ाई करते थे.

एक दिन एक कौवा स्कूल में आया और मोर से बोला सर मैं भी आप के स्कूल में पढ़ना चाहता हूँ आप मेरा नाम भी लिख लीजिए.

कौवे की बात सुनकर मोर बोला आज तक हमारे स्कूल में कोई कौवा पढ़ने नहीं आया.

तुम्हें रोज समय पर स्कूल आना होगा और जो भी पढाया जाएगा वह याद करना होगा.

मोर सर की बात की बात सुनकर कौवा बोला सर मैं स्कूल के सभी नियमों का पालन करूँगा. कभी शिकायत का मौका नहीं दूँगा. "

यह सुनकर मोर ने कौवे का नाम लिख लिया. अगले दिन से रोज कौवा अपना बस्ता लेकर स्कूल आने लगा.

कौवा बहुत होशियार था. मोर और हंस जो भी सवाल कौवे से पूछते उसका जवाब कौवा तुरंत देता था.

कौवा स्कूल का होमवर्क भी रोज पूरा कर के लाता था.

कौवा कुछ ही महीनों में पढ़ने लिखने में सभी पक्षियों से आगे निकल गया.

एक दिन मोर ने कहा कल मौखिक परीक्षा होगी और जो सारे सही जवाब देगा उसे पुरस्कार दिया जाएगा.

अगले दिन सारे पक्षी परीक्षा की तैयारी कर के आए

सबसे पहले मोर ने कबूतर से पूछा: जंगल का राजा किसे कहते हैं.

कबूतर जवाब न दे सका!

फिर मोर ने यही सवाल सभी पक्षियों से पूछा पूछा मगर किसी ने सही जवाब नहीं दिया.

अन्त में मोर ने कौवे से पूछा अब तुम बताओ जंगल का राजा किसे कहते हैं? "

कौवा खड़ा होकर बोला सर जंगल का राजा शेर को कहते हैं.

सही जवाब सुनकर मोर ने कौवे की तारीफ की और कौवे को पुरस्कार देने की घोषणा कर दी.

पुरस्कार पा कर कौवा खुशी से फूला नहीं समाया और सभी मित्रों ने कौवे को पुरस्कार पाने पर बधाई दी.

*****

धरती वंदना

रचनाकार- संतोष कुमार साहू, कबीरधाम

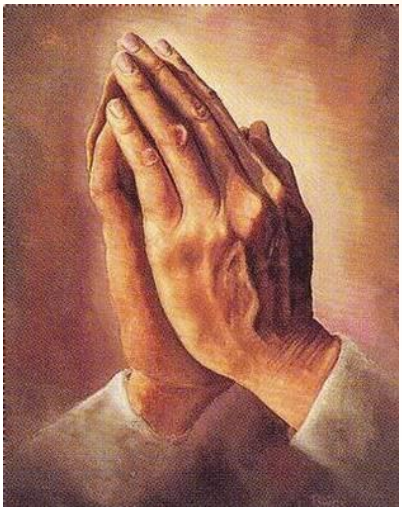

मैं पहली बंदव धरती मईया,
तोर महिमा हावय अपार,
तहि ह सबके पार लगइया,
तोला बंदव मय बारंबार.

जनम मरन के संगवारी ये,
एला सौ-सौ करौ प्रनाम.
एही म सबके गुजर बसर हे,
एही म हे चारो धाम.

कोनो नई बाचिन एखर कर्जा ले,
राजा होय चाहे रानी.
मानुष जनम लेके मरथे,
धरती के हे अमर कहानी.

दुनिया के भार अपन मुडिम बोहे,
जंगल झाड़ी आऊ कारखाना.
नदिया तरिया सागर ह समाय,
एहिम सबके हे ठिकाना.

एखर महिमा ह सबले महान हवे रे,
एमा सबके परान है न.
एमा सबके हमर कलयान हवै न,
आज परगट हे धरती भगवान जैसे न.

*****

प्यारा मोर

रचनाकार- भूपसिंह 'भारती', हरियाणा

चाल चले मस्तानी मोर,
कलगी ताज लगाए मोर.

खूब नाच दिखलाए मोर,
सबके मन को भाये मोर.

गर्दन लम्बी नीली है,
पंख भी रंग-रँगीली है.

पंखों को फैलाये मोर,
रूप देख इतराये मोर.

पैरों को जब देखे मोर,
तब उदास हो जाये मोर.

पीहू-पीहू करके मोर,
मेघों से बतलाये मोर.

सबसे न्यारा पक्षी मोर.
राष्ट्रीय पक्षी प्यारा मोर.

*****

चित्र देख कर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको यह चित्र देख कर कहानी लिखने दी थी–

हमें जो कहानियाँ प्राप्त हुई हम नीचे प्रदर्शित कर रहे हैं

संतोष कुमार कौशिक, मुंगेली द्वारा भेजी गई कहानी

मीना बहुत उदास थी क्योंकि उसके टीचर ने बारिश के बारे में लिखने के लिए गृह कार्य दिया था.उसके उदासीपन को देखकर उसके दादाजी उसके पास आकर कहते हैं- बेटा, स्कूल से आने के बाद हर दिन तुम उछल-कूद करती हो.लेकिन मैं देख रहा हूँ कि आज उछल-कूद करने के बजाय,स्कूल से आते ही बस्ता लेकर बैठी हो. क्या बात है? मुझे बताओ. तब मीना कहती है- दादाजी! आज हमारे टीचर ने गृह कार्य 'बरसात का दिन' के बारे में लिख कर लाने को कहा है. मुझे बरसात के पानी में भींगना, कागज की नाव बनाकर तैराना और उसके डूब जाने पर खुशी का अनुभव करना आदि अच्छा तो लगता है.लेकिन समझ में नहीं आ रहा है कि कहाँ से शुरुआत करूँ और कैसे लिखूँ. तभी दादाजी ने कहा-बेटा,चलो मैं बरसात के बारे में मैं अपना अनुभव बता रहा हूँ. आप उसे

समझकर लिखना. खुश होकर मीना दादा जी के बताए जानकारी को लिखी है. जिसे अगले दिन अपने साथियों के साथ चिंता मुक्त होकर खुशी से स्कूल जाती है और कक्षा में अपने टीचर को दादा जी के बताए हुए लिखी हुई "बरसात का दिन"के बारे में सुनाती है---

बारिश प्रकृति के सबसे खूबसूरत पलों में से एक होता है.जो किसी भी व्यक्ति को हर्षित कर सकता है.सभी उम्र के लोगों द्वारा बारिश के दिनों का आनंद लिया जाता है.बच्चे शायद सबसे ज्यादा उत्साहित होते हैं.बारिश के दिन सुखद मौसम हो जाता हैं और बच्चों के खुशी को बढ़ा देता है. इसके अलावा,यह उन्हें बाहर निकलने और बारिश में खेलने, पोखर में कूदने, कागज की नाव बनाकर पानी में तैराना, कीचड़ में खेलना,पानी में पैर को थप से रखने का आनंद अलग ही होता है.

इसी तरह, छात्रों के लिए, एक बरसात के दिन का मतलब है स्कूल से छुट्टी होना.यह उन्हें अपनी दिनचर्या से छुट्टी देता है क्योंकि स्कूल में छुट्टी घोषित करता है.बारिश के दिन स्कूल जाने और मौसम का आनंद लेने और फिर स्कूल बंद होने का आनंद,एक तरह का हर्ष से परिपूर्ण अनुभव होता है.छात्र अपने पढ़ाई से मुक्त होकर अपना दिन अन्य गतिविधियों जैसे मित्रों के साथ बाहर जाने में बिताते हैं.बच्चों को बरसात में उछल-कूद करते देखकर, बड़ों को अपने पढ़ाई जीवन मैं किए हुए कार्यों को यादकर हर्षित होते हैं.

अगर हम एक आम आदमी के दृष्टिकोण से बारिश के दिनों को देखते हैं,तो यह कैसे हमें गर्मी से राहत दिलाता है.यह हमारे मन को बदलकर खुशी देता है और हमारी सुस्त दिनचर्या में भी जान फूंक देता है.सबसे महत्वपूर्ण बात,हम देखते हैं कि बारिश के दिन किसानों के लिए अत्यधिक महत्व के होते हैं. यह फसलों के उत्पादन के लिए काफी आवश्यक और लाभदायक होते है.यह उन्हें अपनी फसलों को फलने-फूलने के लिए पर्याप्त पानी प्रदान करता है जो अंततः फसल अच्छी कराता है और हम सब के लिए भोजन की पूर्ति करता है.

बारिश के बाद प्रकृति की हर चीज में नई जान होती है.घास जो एक दिन पहले गर्मियों की गर्मी में सूख जाती थी,वह गर्व से सिर उठाती है.कोयल आम के पेड़ से अपने मधुर गीत गाती है.इसके गाने इतने मधुर होते है कि मन को मोह लेते है.पेड़-पौधे बारिश के पानी में नहा लेते हैं.वे बेहद हरे-भरे दिखते हैं.पशु और पक्षी भी बारिश का आनंद लेते

हैं.मेंढक बारिश के बाद बहुत ही खुश होकर शोर करने लगते हैं.टर्र-टर्र की आवाज सब जगह गूंज जाती है.

बारिश के बाद- सड़कों,गलियों और चौराहों पर पानी भर जाता है और कीचड़ छा जाता है. इसका मुख्य कारण अपने घर के नालियों के पास कचरे को फेंकना है और संबंधित व्यक्तियों के द्वारा बरसात के पहले,नाली साफ न करना है.हम सभी व्यक्तियों का कर्तव्य है कि अपने-अपने कार्यों का निर्वहन करें. नहीं तो यही परेशानी का कारण बनता है. लोगों का आवागमन प्रभावित होते हैं. फिर भी कठिनाई झेलकर चौक चौराहे एवं (हटरी) बाजार में बैठने वाले व्यापारी अपने दिनचर्या के कार्यों में लगे रहते हैं.कुछ स्थानों पर भारी बारिश होने पर रेलवे ट्रैक क्षतिग्रस्त हो जाता है.भारी बारिश के तहत कुछ सड़के क्षतिग्रस्त होकर धँस जाती हैं और बड़े-बड़े गड्ढे हो जाते हैं.हम पूरी तरह से भीग जाते हैं.कभी-कभी बीमार भी पड़ जाते हैं.और कुछ त्वचा रोगों के शिकार भी होते हैं.

फिर भी अंत में कहा जा सकता है कि बारिश का सिर्फ एक दिन लोगों के चेहरे पर खुशी की लहर ले आता है.इतना ही नहीं यह प्यासी धरती के संताप को भी कम करता है.हर आयु वर्ग के लोग अपने-अपने कारणों से खुश होते रहते हैं.जहाँ बच्चे बारिश के कारण स्कूल बंद होने के कारण खुश होते हैं, वहीं बड़े मौसम खुशनुमा से खुश होते है और साथ ही बारिश के बहाने कई चटपटे नाश्ते का लुत्फ उठाते हैं.

जिसे सुनकर टीचर एवं बच्चे खुश होकर ताली बजाते हैं कक्षा में सम्मान पाकर मीना खुश हो जाती है.

बच्चों आप लोग भी मीना की तरह गृह कार्य में कठिनाई हो तो अपने दादा जी या घर के अन्य सदस्यों से पूछकर कक्षा में प्रदर्शन करना चाहिए. चुकि बड़े बुजुर्ग लोग खुली पुस्तक के समान होते हैं,जिसका लाभ हम ले सकते हैं.

रामेश्वरी सी.के. जलहरे, बिनौरी द्वारा भेजी गई कहानी

शेरु नाम का कुत्ता एक दिन नदी किनारे घूम रहा था घूमते घूमते नदी के पुल पर गया और नदी में देखने लगा देखते हुए उनको उनकी परछाई पानी मे दिखाई पड़ी कुत्ते को समझ नही आया कि ये उसी की परछाई है जो पानी मे दिखाई दे रही है शेरु अकेले घूमते हुए बहुत ऊब से गया था इसलिए जैसे ही परछाई दिखाई दी तो वह उनसे दोस्ती करने के लिए उनसे बाते करने का प्रयास करने लगा फिर ये जैसे करता था परछाई भी करता

था शेरु को समझ नही आया अब क्या करना है इनको कैसे खुश करना है कैसे दोस्ती करना है इसलिए वह एक दिन उनके लिए खाना लेकर पहुंच गया और खाना देखे के लिए देखने लगा तो वह देखा कि वो भी खाना लेकर खड़ा हुआ है फिर पानी मे एक बच्चा नहाने के लिए छलांग लगाई और परछाई गायब हो गयी फिर शेरु को समझ आया ये तो मैं ही हु और शेरु परेशान होने लगा वह फिर से अकेला हो गया हूं सोचते हुए वही पर बैठ गया.

सीख- किसी को अकेला नही रहना चाहिए. इसीलिए शेरू भी किसी के साथ के लिए परछाई से बाते करता था. हमें भी अकेले नहीं रहना चाहिए वरना हम भी शेरू की तरह परछाई से बात करने के लिए मजबूर हो जायेंगे.

आस्था तंबोली, जांजगीर द्वारा भेजी गई कहानी

नदी के किनारे पर एक गांव बसा है जब अत्यधिक बारिश होती है तो रोड तथा गांव में पानी भर जाता है .कभी-कभी बाढ़ आती है तो नदी के किनारे बसे गांव के अंदर भी नदी का पानी आ जाता है. एक बार बाढ़ आने पर पूरे सड़क में पानी भर गया था सड़क पर आने जाने वालों को काफी परेशानी उठानी पड़ रही थी बारिश में बच्चे मजा कर रहे थे कुछ लोग बारिश से बचने के लिए दुकानों के नीचे खड़े थे तो कुछ लोग रेनकोट और छाता लेकर चल रहे थे बरसात के दिनों में गरमा गरम चाय पकौड़ा खाने का मन करता है वहां भी एक चाय पकौड़ा वाली दुकान है जहां लोग चाय पीते हुए नजर आ रहे थे मुझे यह बारिश में भीगना बहुत पसंद है जब भी तेज बारिश होती है मैं बाहर भीगने का मन करता है लेकिन मेरी मां मुझे भी भीगने नहीं देती. बाढ़ आ जाने से लोगों को काफी नुकसान होता है लोग अपना काम सही ढंग से नहीं कर पाते धन ,जन की हानि होती है बहुत सारे घर टूट जाते हैं नदी के बहाव में बह जाते हैं.

अगले अंक की कहानी हेतु चित्र

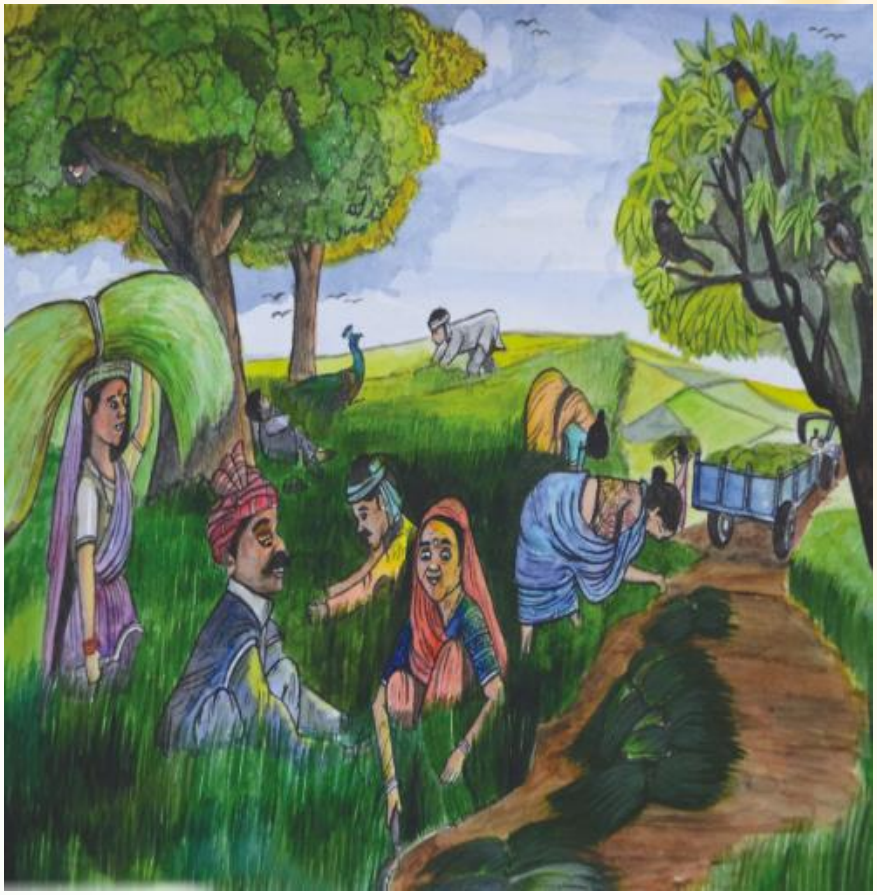

अब आप दिए गये चित्र को देखकर कल्पना कीजिए और कहानी लिख कर हमें यूनिकोड फॉण्ट में टंकित कर ई मेल kilolmagazine@gmail.com पर अगले माह की 15 तारीख तक भेज दें. आपके द्वारा भेजी गयी कहानियों को हम किलोल के अगले अंक में प्रकाशित करेंगे

खुल गया ,स्कूल

रचनाकार- अशोक पटेल"आशु", शिवरीनारायण

खुल गया स्कूल,घंटी बजी टन-टन
करलो तैयारी ड्रेस पहन के बन-ठन.

हाथ जोड़ कर करें राष्ट्र का गुणगान
आओ कर लें संकल्प देश बने महान.

शिक्षक श्यामपट चाक से नाता जोड़ें
इस भाग्य-विधाता से नहीं मुख मोड़ें.

चलो बच्चों हम अपना धर्म निभाएं
खूब पढ़ें और अपना भविष्य बनाएं.

देश के बने हम भावी योग्य नागरिक
हम बने देश सेवक सैनिक साहसिक.

*****

कइसे जग सिरजाये

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

कइसे कइसे करम बनाये, कइसे जग सिरजाये.
भूख मरे जब जीव जनावर, इक दूसर ला खाये.

चिरई चिरगुन जीयत रहिथे, चाँटी ल बीन खाये.
मरे परे रहिथे चिरई हा, चाँटी दावत पाये.

देख बेंदरा ला बघवा हा, दौड़त ओला झपटे.
नील गाय अउ हिरण हाथी, झाड़ी झुँझकुर सपटे.

जीव जनावर मन के ये तो, हावै रचे कहानी.
विपत परे हे देखौ संगी, मनखे के जिनगानी.

अपन आप ला समझे बघवा, देख देख गुर्राये.
दया मया के गोठ बिसरगे, कोन इहाँ समझाये.

जीव जनावर ले जादा तो, बाढ़े मनखे पीरा.
नइ हे कोनो समझदार अउ, नइ हे कोनो हीरा.

संसो के ये बात हरे जी, कोन जनी का हाेही.
सुख से रइही जीव जंतु हर, मुड़ धर मनखे रोही.

*****

बाल पहेलियाँ सब्जियों की

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

1. कहलाता सब्जियों का राजा
बजे वर्षभर मेरा बाजा
खाओ सब्जी, टिक्की-कचालू
गोल हूँ मैं, पहचानो लालू

2. कच्चा हरा हूँ, पका लाल हूँ
विटामिनों से भरा माल हूँ
चटनी और सलाद में खाएँ
सब्जी भी स्वादिष्ट बनाएँ

3. रंग लाल, पीला या काला
विटामिनों का भरा हूँ प्याला
कच्ची खाओ अथवा सलाद
जड़ में ही बसता है स्वाद

4. मुझे मानते सब मामूली
मेरी जड़ ही सब खाते
पत्ते हरे हैं, मैं सफेद हूँ
मुझे सलादों में पाते

5. मुझमें हैं छिलके ही छिलके
तेज गंध आती मुझमें
चाट - पकौड़ी में रहता मैं
हल्की लाल सफेदी मुझमें

6. लंबी एक पिटारी होती
जिसमें हरे, भरे हैं मोती
बना लो चाहे गर्म कचौड़ी
या खाओ स्वादिष्ट पकौड़ी

उत्तर - 1 आलू 2 टमाटर 3 गाजर 4 मूली 5 प्याज 6 मटर

*****

चंद्रशेखर आजाद

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

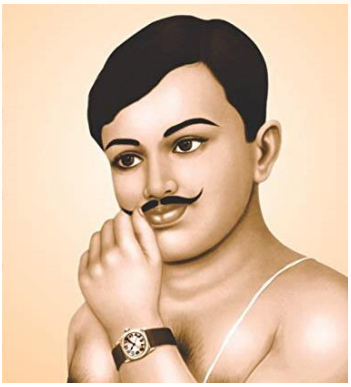

विनत निवेदन करता हूँ मैं,
गाथा गौरव रखता हूँ मैं.
कहता कथ्य क्रांतिकारी की,
मातृभूमि पर बलिहारी की.

आजाद' रहा जो आजीवन,
नाम चंद्रशेखर अनुभावन.
स्वतंत्रता का सजग सिपाही,
देता है इतिहास गवाही.

देशप्रेम रग-रग बहता था,
नहीं प्रेम कविता कहता था.
था अजेय वह सेनानायक,
भारत माँ का श्रेष्ठ सहायक.

जन्म हुआ तेईस जुलाई,
तीन बड़े थे इनके भाई.
पितु श्री सीताराम तिवारी,
जगरानी जी थीं महतारी.

गाँव भावरा जन्म स्थाना,
मध्य प्रांत का सुयश ठिकाना.
आर्थिक हालत इनकी माली,
करे पिताजी वन रखवाली.

भील ग्राम में बीता बचपन,
कठिनाई से तब विद्यार्जन.
लगन लगी आगे बढ़ने की,
काशी में संस्कृत पढ़ने की.

इनकी थी तब चौदह की वय,
पहुँचे मठ में करके निश्चय.
हवा स्वदेशी, बहे बनारस,
अंतर्मन गहराता ढारस.

देखा असहयोग आंदोलन,
शांति नीति करते प्रतिपालन.
गाँधी जी से हुए प्रभावित,
राष्ट्रधर्म मुखिया गौरावित.

प्रिंस ब्रिटेनी भारत आए,
गाँधीजी मतभेद जताए.
बैठ गए धरने पर शेखर,
अंग्रेजों ने देखे तेवर.

बापू कारावास भिजाए,
शेखर पर भी वाद बिठाए.
समय खड़ा इतिहास बनाने,
शेखर क्या है? देश न जाने.

विकट परिस्थिति, तन-मन भोला,
देख कचहरी, एक न डोला.
अडिग रहा, जज ने हड़काया,
आजाद' नाम, यहाँ बताया.

पिता हमारे 'स्वतंत्र' जानें,
है गेह जेलखाना मानें.
न्यायाधीश हुआ अति क्रोधित,
सजा सुनाई, सद संबोधित.

शेखर भारत की जय कहता,
पंद्रह कोड़े हँस कर सहता.
रक्त स्राव से काया रोहित,
नवकिशोर पर जन-जन मोहित.

युवा क्रांतिकारी हर्षाया,
छोड़ अहिंसा, विपल्व गाया.
भगतसिंह, सुखदेव मिलाए,
राजगुरू, बिस्मिल भी आए.

जोड़ संगठन, वित्त जुटाए,
गोपनीयता को अपनाए.
आजादी को रहते फाका,
देशधर्म हित करते डाका.

लगे लूटने धन सरकारी,
थी इनको आजादी प्यारी.
किए कांड़, लूटे काकोरी,
सहम गई तब चमड़ी गोरी.

क्रांतिवीर कुछ पकड़ाए,
उनको फाँसी पर लटकाए.
अंग्रेजों ने करी कड़ाई,
'आजाद' पकड़ने, शपथ उठाई.

शेखर दिखलाता था माया,
पुलिस नहीं छू पाई साया.
अपनी सेना करके स्थापित,
अंग्रेजों को करने निर्वासित.

बलिदान हुए बुजुर्ग 'लाला',
साँडर्स वधन, नेतृत्व सँभाला.
शनैः-शनैः सब साथी छूटे,
संघर्षों में कभी न टूटे.

सत्ताईस फरवरी रक्तिम,
वीर सिपाही का दिन अंतिम.
एक पार्क में ठहरे किंचित,
रहे दासता से वो चिंतित.

मित्रघात डाला अवडेरा,
अंग्रेजों ने आकर घेरा.
चली गोलियाँ उनके ऊपर,
लड़ी लड़ाई शेखर डँटकर.

सिंह पकड़ने शुनि दल आए,
देख पराक्रम वे घबराए.
एक अकेला भारी सौ पर,
अंतर बैठा शेखर का डर.

भारत माँ से माँग विदाई,
गोली निज तन स्वयं चलाई.
वह आजाद रहा आजीवन,
किया समर्पित अपना यौवन.

आओ गाथा इनकी गाएँ,
राष्ट्रभक्ति का कर्ज चुकाएँ.
कर्म आत्म-बलिदानी जानो,
ताव मूँछ देते, पहचानो.

आत्माहुति कर जाने वाले,
पुनर्जन्म ले आने वाले,
अमित अमर कहलाते हैं,
देश-धर्म सिखलाते हैं.

*****

महान वैज्ञानिक एम. जी. के. मेनन

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

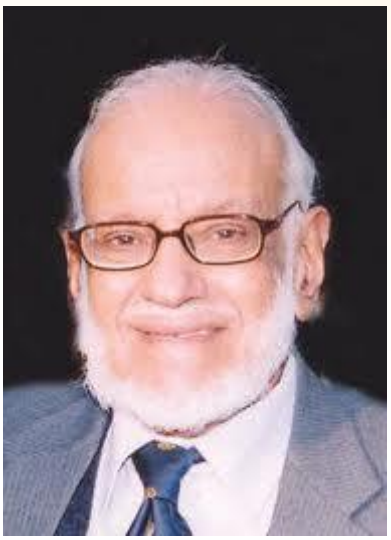

सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रोफेसर एम. जी. के. मेनन (मंबिल्लिकलाथिल गोविंद कुमार मेनन) का जन्म 28 अगस्त, सन 1928 को कर्नाटक के मंगलौर में हुआ था. उनकी शिक्षा देश के भिन्न-भिन्न भागों में हुई. उन्होंने शिक्षा स्नातक 1946 में तथा एम एससी 1949 में जसवंत कॉलेज जोधपुर से पूर्ण किया. सन 1949 में वे शोध करने के लिए इंग्लैंड ब्रिस्टल विश्वविद्यालय गए. उन्होंने वहाँ सी. एफ. पावेल की देख रेख में शिक्षा प्राप्त की. वहाँ उन्होंने 1953 में पी एच डी उपाधि प्राप्त की. उन्होंने कुछ मौलिक कणों का आविष्कार किया. इन कणों में म्यूआन्स मुख्य थे.

एम. जी. के. मेनन की प्रसिद्धि केवल भारत में ही नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व में फैल गई. उन्होंने अपने गुरु पावेल से वैज्ञानिक तरीकों से जनसामान्य की समस्याएँ सुलझाने में लगाने का तरीका सीखा तथा उन तरीकों को अपने देशवासियों के लाभ के लिए प्रयोग किया. उन्होंने डॉ होमी जहाँगीर भाभा से यह सीखा कि प्रथम श्रेणी के अनुसंधानों को भारत जैसे देश में अच्छी योजनाओं के लिए किस प्रकार लगाया जा सकता है. उन्होंने देश की वैज्ञानिक उन्नति में बहुत सहायता की.

उन्होंने ब्रह्मांडीय किरणों के अध्ययन के क्षेत्र में विशेष अन्वेषण तथा प्राथमिक किरणों की उच्च ऊर्जा परस्पर क्रिया के लिए प्रशंसनीय कार्य किया. उन्होंने कण भौतिकी के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय वैज्ञानिक अनुसंधान किए.

सन 1955 में वे वापस भारत लौट आए तथा उन्होंने टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च में नौकरी कर ली. उन्होंने अधिक ऊँचाई पर कास्मिक किरणों का अध्ययन किया एवं कोलार की स्वर्ण खानों के अंदर भी उन्होंने अनुसंधान कार्य किए .

उन्होंने कई पदों पर रहकर महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन किया. कुछ इस प्रकार हैं -

-टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ फंडामेंटल रिसर्च वर्ष (1966 से 1975)
-अध्यक्ष, ऊर्जा के अतिरिक्त स्रोत आयोग
-भारत सरकार के सचिव इलेक्ट्रानिक्स, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, रक्षा अनुसंधान, पर्यावरण (1971से 1982)
-भूतपूर्व अध्यक्ष भारतीय रक्षा अनुसंधान संगठन (1972)
-वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद के महानिदेशक (1978.से1981)
-भारत विज्ञान कांग्रेस संघ के अध्यक्ष (1981 - 1982)
पाटिफिकल एकादमी ऑफ साइंस, रोम के सदस्य - 1981
- प्रधानमंत्री के वैज्ञानिक सलाहकार (1986 से 1989)
-संसद सदस्य राज्य सभा (1990 से 1996)
-उपाध्यक्ष वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद (1989 - 1990)

विज्ञान के क्षेत्र में डॉ मेनन को अभूतपूर्व योगदान के लिए अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किए गए -

पद्मश्री - 1961
पद्मभूषण - 1961
पद्मविभूषण - 1985
भटनागर पुरस्कार - 1960
आर एस सी ए चटर्जी पुरस्कार - 1984
ओमप्रकाश भसीन पुरस्कार - 1985
शिरोमणि पुरस्कार - 1988
मोदी विज्ञान पुरस्कार - 1994
अब्बास सलीम पदक - 1996

रायल सोसाइटी लंदन के फेलो - 1970
द इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिक्स, यू के के मानद फेलो - 1997
थर्ड वर्ल्ड एकेडमी ऑफ साइंस के संस्थापक फेलो

देश में वैज्ञानिक समस्याओं को सुलझाने में डॉ मेनन ने अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य किए. वे देश को विज्ञान के क्षेत्र में में आगे लाने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहे. इस योगदान के लिए देश एवं विदेश के महान वैज्ञानिक के रूप में उनका नाम सदैव आदर के साथ लिया जाएगा. उनका निधन 22 नवंबर, 2016 को नई दिल्ली में हुआ.

*****

चूहा दाँत ले गया

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

रात को माँ के साथ ही बैठी
गौरी खाना खाने.
खाते-खाते विद्यालय की
बातें लगी बताने.

तभी अचानक दाँत टूटकर
उसके मुँह में आया.
हिलता तो था कई दिनों से
गिरा तो सिर चकराया.

झटपट मुँह से कौर निकाला
उसमें दाँत था छोटा.
दाँतों बीच जगह खाली थी
लगा देखकर खोटा.

वह रोई, फिर माँ से बोली
अब आगे क्या होना.
पूछेंगे सब विद्यालय में
मुझे पड़ेगा रोना.

रो मत मेरी प्यारी बिटिया
हँस करके कह देना.
चूहा दाँत ले गया मेरा
नया उसी से लेना.

*****

योग ध्यान का आधार है

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायन

योग ध्यान का आधार है.
योग ,रोगों का उपचार है.
योग तनमन का आहार है.
योग से ही आती निखार है.

योग से आत्म नियंत्रण है.
योग आत्म अनुशासन है.
योग शांति का प्रबंधन है.
योग से आत्म संतुलन है.

योग से रक्त परिसंचरण है.
योग तनमन का संरक्षण है
योग लाती लचीलापन है.
योग पुष्ट करती तनमन है.

योग बढ़ाती बुद्धि ज्ञान है.
योग से ईश्वर का ध्यान है.
योग आत्मिक अनुष्ठान है.
योग बीमारी का निदान है.

*****

कुकुर अउ कउंवा

रचनाकार- श्रीमती नंदिनी राजपूत, कोरबा

एक ठन गांव मा एक कुकुर रहिस जी, वो हर अब्बड सुवारथी, नेरचरहा अउ झगलाडू रहिस. ओ हर जम्मो आदमी घर ले खाय - पीए के चीज ला चुरा लय अउ अक्केला मा जाके खावे. ओ हर अपन जम्मों चीज ला कोखरो में नई बाँटत रहिसे. जानथा लाइका हो काबर,,,काबर की ओ हर अब्बड़ झगलाडू रहिस. अहि खातिर जम्मो जीव- जंतु ओखर से दुरिहा रहे.

एक दिन के बात आय जी कुकुर ला एक ठन मांस के टुकड़ा मिलिस जी, ओला अपन मुंह मा दबाइस अउ गांव से दुरिहा अक्केला जगह तिर दौड़े लगिस. रद्दा मा एक तरिया रहे. कुकुर ह पानी ला देखिस अउ मने मन गुने लागिस कि तरियां के पानी हा अब्बड़ सुथरा हवे,त ऐ हर मीठा घलो होहि.एखरे सेती मांस खाय से पहिली पानी ला पी लव. अहि गुनत - गुनत अपन मुंह मा दबाए मांस के टुकड़ा ला सड़क के किनारे रख दिस अउ तरियां के तिर मा जाके पानी ला पीए लगिस.

तरियां के तिर मा एक ठन रुख रहीस जी, ओ रुख मा एक ठन कउंवा ह बईठे रहिस ओ हर जम्मो चीज ला देखत रहिस. कउंवा हर तो कुकुर ले भी ज्यादा नेरचरहा अउ झगलाडू रहिस जी. ओ हर जईसे ही कुकुर ला तरियां मा पानी पियत देखीस,रुख ले उतर गईस अउ मांस के टुकड़ा ला अपन चोंच मा दबाके उड़ गिस. मुरख कुकुर ह देखत रहिगे ओखर मांस के टुकड़ा घलो छिन गय अउ ओ हर कुछु नई कर सकिस

ऐखरे खातिर कहे गहे हे जी कि कुछु भी चीज ला मिलजुलके खाना चाही. जईसे कुकुर ह दुसर के चीज ल चुराके खात रहिस वईसे ही कउंवा ह ओखर ला चुरा के खा लिस.

*****

अंतरात्मा की आवाज बताती है सही और गलत

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

नैतिक कम्पास एक शब्द है जिसका उपयोग हमारे सही और गलत की आंतरिक भावना का वर्णन करने के लिए किया जाता है जो हमारे कार्यों को निर्देशित करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है. विवेक एक व्यक्ति की आंतरिक नैतिक भावना है जो उसे अपने व्यवहार को विनियमित करने के लिए मार्गदर्शन करती है. अंतरात्मा की आवाज एक आंतरिक आवाज से मेल खाती है जो आपके व्यवहार का न्याय करती है. अंतरात्मा की आवाज कई लोगों के लिए नैतिक निर्णय लेने का स्रोत है.

विवेक को हम में से प्रत्येक के भीतर कुछ के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जो हमें बताता है कि क्या सही है और क्या गलत है. इसलिए, यदि कोई निर्णय लेते समय अपने विवेक का उपयोग करता है तो वह इस बात से निर्देशित होगा कि क्या करना सही है और क्या गलत. पारंपरिक परीक्षण नैतिक निर्णय लेने के तरीकों को लागू करना है जैसे अधिकार सिद्धांत जो हमें दूसरों के अधिकारों का सम्मान करने और उनके प्रति अपने दायित्वों को पूरा करने के लिए बाध्य करता है. एक अन्य दृष्टिकोण है हितधारकों पर कार्रवाई के वैकल्पिक पाठ्यक्रमों के संभावित लाभ और नुकसान का मूल्यांकन करना जो हमारे संभावित कार्यों से प्रभावित हो सकते हैं और शुद्ध लाभ को अधिकतम करने वाले को चुनें.

हमारा विवेक हमारा आंतरिक मार्गदर्शक है और यह आपको यह पता लगाने में मदद करता है कि अच्छे चुनाव कैसे करें. जैसे-जैसे हम बड़े होते हैं, हम गलत से सही सीखते हैं. हमारा विवेक वह विचार और भावना है जो हमारे पास है जो हमें बताता है कि कुछ करना या कहना सही है या गलत. इस प्रकार विवेक की आवाज नैतिक निर्णय लेने के लिए एक सतत मार्गदर्शक है. एक व्यक्ति रुककर और मुद्दे के आयामों के बारे में सोच कर खुद को अंतरात्मा की आवाज सुनने के लिए तैयार कर सकता है. एक इंसान हमेशा निर्णय लेने की प्रक्रिया में नैतिक दुविधाओं का सामना करता है. विवेक की आवाज सही निर्णय लेने के लिए मार्गदर्शक के रूप में कार्य करती है जब हमें किसी दिए गए, आमतौर पर अवांछनीय या उलझन में डालने वाली स्थिति में सिद्धांतों के प्रतिस्पर्धी सेटों के बीच चयन करना होता है. उदाहरण: साक्षात्कार के लिए जाते समय दुर्घटना के शिकार व्यक्ति की सहायता करना. एक व्यक्ति की अंतरात्मा की आवाज विभिन्न दृष्टिकोणों से स्थिति का विश्लेषण करने और सही निर्णय लेने में मदद करती है.

विवेक की आवाज बेहतर निर्णय लेने के लिए हितों के टकराव से बचने में मदद करती है. यह व्यक्तिगत लाभ और लोक कल्याण के बीच निर्णय लेने में मदद कर सकता है. विवेक की आवाज नैतिक मूल्यों और सिद्धांतों के आलोक में व्यावहारिक निर्णय लेने की हमारी क्षमता है. अंतरात्मा की आवाज एक व्यक्ति के सही और गलत के साथ-साथ उसके कार्यों की चेतना का नैतिक दिक्सूचक है. 'आंत महसूस करना' और 'अपराधबोध' जैसी अभिव्यक्तियाँ अक्सर विवेक के साथ संयोजन में उपयोग की जाती हैं. अंतरात्मा की आवाज अलग-अलग परिस्थितियों में अलग-अलग सिद्धांतों और अलग-अलग व्यवहारों का सुझाव दे सकती है. लेकिन यह एक पल के लिए व्यक्ति को सार्वभौमिक मूल्यों के आधार पर गलत नहीं करने में मदद करता है.

विशुद्ध रूप से स्वार्थ से कार्य करना, सर्वोत्तम रूप से, हमें मूल स्थिति के समानांतर रखता है और यदि हमारे कार्य दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं तो हम अपनी दिशा को दक्षिण की ओर मोड़ सकते हैं. सत्यनिष्ठा का जीवन जीकर हम उस दिशा में जाने से बचते हैं. हमें यह समझने और सराहना करने की भी आवश्यकता है कि हमें कार्य करने से पहले दूसरों की आवश्यकताओं पर विचार क्यों करना चाहिए. हम केवल गोल्डन रूल पर वापस जा सकते हैं: दूसरों के साथ वैसा ही व्यवहार करें जैसा आप चाहते हैं कि वे आपके साथ व्यवहार करें. हममें से कोई भी, संभवतः, अनादर नहीं चाहता है इसलिए हमें दूसरों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करना चाहिए.

अंतरात्मा स्वभाव से सत्य का प्रतिनिधित्व करती है और इसलिए अपने आप में सही दिशा दर्शाती है. अंतरात्मा असल में हमारी स्वभाविक और स्वस्थ स्थिति में होती है, लेकिन हमारे मन के विभिन्न विचार, भावनाएं, और इंद्रियों के प्रभाव के कारण हम अक्सर उसे अनदेखा करते हैं. जब हम अपने मन को शांत करते हैं और संज्ञान बढ़ाते हैं, तब हम अंतरात्मा से जुड़ने लगते हैं और उसकी आवाज सुन पाते हैं. इसलिए, अंतरात्मा की आवाज कभी गलत दिशा नहीं दिखाती है. यह हमेशा हमें सही दिशा में ले जाने की कोशिश करती है और हमारी उन्नति और सुख-शांति के लिए हमें निरंतर प्रेरित करती है. हालांकि, हमारे मन के अधीन होकर हम अपनी अंतरात्मा की आवाज को नहीं सुन पाते हैं और उससे अलग हो जाते हैं.

*****

प्रकृति में संरक्षण का नियम अपनाएंगे

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

मां गंगा को शुद्ध करने अनेक मिशन चलाएंगे
इन मिशनों को प्रेरणा दायक बनाएंगे
प्रकृति में संरक्षण का नियम अपनाएंगे
युवा शक्ति को इस शुभ काम में लगाएंगे

गंगा उत्सव मनाने को अब
राष्ट्रव्यापी नदी उत्सव बनाएंगे
मां गंगे की पीड़ा की वास्तविक कहानी
जन-जन तक हम पहुंच जाएंगे

नदी उत्सव सम्मान की परंपरा को
पुनर्जीवित करने का बीज बोएगा
देश का हर नागरिक सचेत होकर
दूषित जल की पीड़ा सुलझाएगा

गंगा की पीड़ा को हम सब तब समझ पाएंगे
जब कचरे का ढेर नदियों में पड़ा पाएंगे
नदियों को स्वस्थ रखने जनता जनजागृति लाएंगे
प्रेरणा के लिए हर साल गंगा उत्सव मनाएंगे

*****

नियमित योग करेंगे हम

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

योग का संकल्प करेंगे हम,
तन मन को स्वस्थ रखेंगे हम,
ईश वंदना करेंगे सुबह -सुबह,
मन में नयी उर्जा भरेंगे हम.

नियमित योग करेंगे हम,
नित्य प्राणायाम करेंगे हम,
ध्यान से होगा नव विकास,
मन में नयी चेतना भरेंगे हम.

आलस का त्याग करेंगे हम,
मन में उल्लास भरेंगे हम,
जगायेंगे दिव्य चेतना शक्ति,
अब सदा निरोगी रहेंगे हम.

*****

आओ कुछ नया जाने

रचनाकार- डॉ० कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, उत्तरप्रदेश

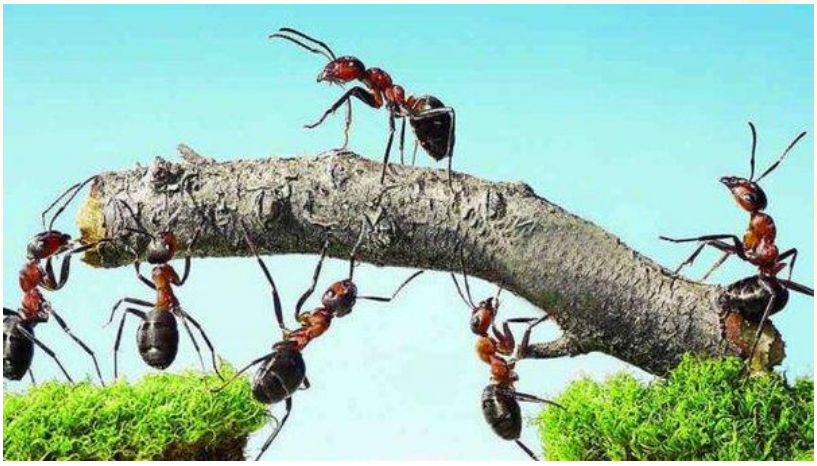

चींटियाँ और मधुमक्खियाँ मिल-जुलकर कार्य करतीं हैं. सभी के कार्य बँटे हुए होते हैं. अंडे देना, साफ सफाई करना भोजन एकत्रित करना आदि कार्यों का विभाजन होता है.

अंडे देने का कार्य रानी मधुमक्खी का है. मोम पैदा करना,साफ सफाई करना, रस एकत्रित करना,छत्ता बनाना,फूलों की खोज करना,भोजन एकत्रित करना और रस से शहद बनाने आदि का कार्य श्रमिक मधुमक्खियों द्वारा किया जाता है. केवल मादा मधुमक्खी ही डंक मारती है.

चींटियों का संसार भी अलग है. कहा जाता है कि चींटी की प्रजाति संसार की सबसे छोटी प्रजाति है. अंडे देने का कार्य रानी चींटी करती है जबकि बिल का ध्यान रखना,साफ सफाई करना सिपाही चीटियों का कार्य होता है. चींटियों का रंग अधिकांशतः लाल,भूरा,काला होता है.चीटियों के रहने के स्थान को कॉलोनी कहते है.मरने के बाद चीटियों के शरीर से ओलिक एसिड निकलने से अन्य चीटियों को यह जानकारी हो जाती है कि यह चींटी मर चुकी है और वे उसे छोड़कर आगे बढ़ जाती हैं.

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर

1. 'न' ही उसकी शुरुआत है,
'न' ही उसका अंत.
फिर भी उससे देखा जाता है,
पर उसका तो 'न'ही है अंत?

2. सबको तु कष्ट पहुँचाता,
कैसा है तु' यार'?
ऐसा कौन सा 'यार' है,
जो कष्ट पहुँचाता हर बार?

3. समय है मेरी मुट्ठी में,
मेरे पास है दो हाथ.
सब कुछ लिखा मेरी हथेली में,
वक्त चले मेरे साथ ?

4. मुझमे ही हर दिन है,
मुझमे ही हर वार.
मुझमें ही हर महीना है,
मुझमें पुरा साल?

5. लिखते तो सब मुझसे ही,
पर मैं पेंसिल नहीं.
मैं जो एक बार लिखता हूँ
वो फिर मिट सकता नहीं?

6. बच्चे कंधे में टांगकर,
जाया करते स्कूल है.
भारी किताबें मुझमें रखते,
तेरह - चौदह कुल है.

उत्तर:- 1. नयन, 2. हथियार, 3. घड़ी, 4. पंचाग (कैलेंडर), 5. पेन, 6. बस्ता (बैग)

*****

आलस्य

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर

आलस कभी भी न आए किसी के काम,
काम करने से हमें रोके और आलसी बना दे नाम.
आलस जैसी चीजों से हमेशा रहना दूर,
नहीं तो वो कर देगा तुम्हें काम न करने को मजबूर.

इसके झाँसे में आओगे तो रहोगे सपनों से दूर,
आलसी बनकर क्रूर बनोगे, करोगे सपनों को चूर.
काम को अगर कल पर टालोगे तो वो कभी न होंगे पूरे,
क्योंकि वो कल कभी न आएगा और वो रह जाएंगे अधूरे.

काम को तुम तुरंत करो और रहो स्फूर्तिवान,
बनो तुम कर्मनिष्ठ तभी तो दुनिया करेगी सम्मान.
काम करोगे तो सुखी रहोगे और नाम कमाओगे,
आराम करोगे,सोते रहोगे तो सोते ही रह जाओगे.

आलसी बनोगे तो तुम्हें दुनिया कोसेगी, ठुकराएगी,
मेहनती बनकर काम करोगे तो वो तुम्हारे ही गुण गाएगी.
अच्छे कर्म करने को आज से हो जाओ तत्पर,
तभी तो न होना पड़ेगा तुम्हें कल पर निर्भर.

*****

हमारे प्रेरणा स्रोत: स्वामी आत्मानंद

बच्चों क्या आप जानते हैं छत्तीसगढ़ की स्कूल शिक्षा पर आधारित योजना जो स्वामी आत्मानंद के नाम पर शुरू की गई है, वह कौन है.

आइए पढ़ते है छत्तीसगढ़ में जन्मे उस तपस्वी महापुरुष के बारे में जिन्होंने पारिवारिक जीवन को छोड़कर रामकृष्ण मिशन चुना और कैसे एक छोटा बच्चा तुलेंद्र बड़े होकर स्वामी बन गया.

तुलेन्द्र का जन्म रायपुर में हुआ,परंतु जब वह 4 साल के थे तभी उनके पिता जी जोकि शिक्षक थे उनका चयन वर्धा में उच्च प्रशिक्षण के लिए हो गया. तब वह अपने पिताजी के साथ वर्धा चले गए. उनके पिताजी वर्धा में रहते ही सेवाग्राम आश्रम में महात्मा गांधीजी के संपर्क में आए.तुलेंद्र बचपन से ही प्रतिभा संपन्न थे वह आश्रम में मधुर स्वर में भजन गाते तो सभी का मन मोह लेते. धीरे-धीरे तुलेंद्र गांधी जी के बेहद करीब आ गए.बड़े होकर यही तुलेंद्र गांधी जी के साथ कई स्वतंत्रता आंदोलनों में भाग लिए.

कुछ साल बाद वह अपने पिताजी के साथ रायपुर वापस आ गए तथा आगे की शिक्षा यही रायपुर से ग्रहण की.तुलेंद्र ने रायपुर के सेंट पॉल स्कूल से हाई स्कूल की परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया और उच्च शिक्षा के लिए नागपुर की साइंस कॉलेज में प्रवेश लिया.हॉस्टल में रहने की जगह नहीं मिली तो वे रामकृष्ण परमहंस आश्रम में रहने लगे और वही अपनी पढ़ाई पूरी की.आश्रम में रहते हुए वह स्वामी जी के विचारों से बहुत प्रभावित हुए और उन्होंने वर्ष 1957 में रामकृष्ण मिशन के स्वामी शंकर आनंद से ब्रह्मचर्य की दीक्षा ले ली.दीक्षा लेने के बाद उन्होंने अपना पूरा जीवन दीन दुखियों की सेवा में बिता दिया. उन्होंने आदिवासियों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाने के लिए अबूझमाड़ में प्रकल्प की स्थापना की. नारायणपुर में वनवासियों की दशा सुधारने के

लिए एक शिक्षा केंद्र की स्थापना की.1974 में छत्तीसगढ़ में जब अकाल की स्थिति आई तब स्वामी ने आश्रम के लिए एकत्रित राशि को अकाल पीढ़ितो की मदद के लिए दे दिया.उन्होंने रायपुर में स्वामी विवेकानंद संस्था का गठन किया जहां बालिकाओं एवं महिलाओं को मुफ्त मे शिक्षा दी जाती थी. अबूझमाड़ सेवा प्रकल्प के काम से जब वह 27 अगस्त 1974 को भोपाल से रायपुर लौट रहे थे.तभी सड़क हादसे में उनकी मौत हो गई. स्वामी विवेकानंद जी की जीवन शैली में सहजता संयम एवं सब के प्रति आदर व प्रेम भाव स्वाभाविक तौर पर मौजूद था. स्वामी विवेकानंद जी के आदर्श उनके द्वारा किए गए कार्य सेवा पूर्ण कार्य हम सभी के लिए प्रेरणादाई हैं. इसलिए वह आज हमारे प्रेरणा स्रोत हैं.

उनकी विरासत को सम्मान देने के लिए राज्य में स्वामी आत्मानंद इंग्लिश मीडियम स्कूल की शुरुआत की गई है. जिसमें गरीब और दूरस्थ क्षेत्रों के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ आगे बढ़ने के सभी अवसर उपलब्ध हो रहे हैं.

*****

संवाद

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

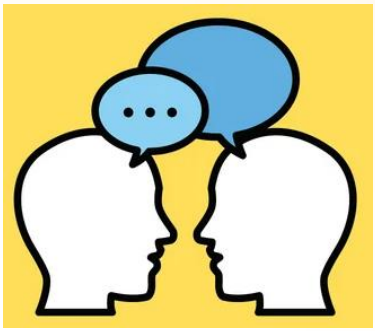

संवाद हर समस्या का उपचार है
विश्वास रखो मिलेगा फ़ल
देर सही दुरुस्त होगा
आज़ नहीं तो कल

संवाद से ही निकलेगा
समस्याओं का हल
धैर्य विनम्रता गमकसर
बनाएंगे संवाद को सफ़ल

निर्बाध होकर सबसे पहले
करनी होगी पहल
चार कदम पीछे होकर
छोड़नी होगी जिद की नक्कल

पुलिस अदालत में बचेगा समय
परेशानियां होगी सरल
राष्ट्र सेवा भी हो जाएगी
जीवन होगा सफ़ल

*****

पढ़-लिख नाँव कमाहूँ

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित' भाटापारा

नवा मोर बर लेदे बस्ता, महूँ पढ़े ला जाहूँ,
नाँव लिखा दे मोरो दाई, पढ़-लिख नाँव कमाहूँ.

नवा-नवा संगी के संगत, रोज स्कूल मा मिलही.
नवा-नवा पा ज्ञान-खजाना, मन मोरो बड़ खिलही.
चेत लगा के पढ़हूँ-लिखहूँ, अव्वल सबले आहूँ.
नाँव लिखा दे मोरो दाई, पढ़-लिख नाँव कमाहूँ.

कविता, गीत, कहानी सुग्घर, धीर धरे सब पढ़हूँ.
गुरुजी के मैं मान सिखोना, आगू-आगू बढ़हूँ.
संग कलम, कापी के मैं तो, सगरो समय बिताहूँ.
नाँव लिखा दे मोरो दाई, पढ़लिख नाँव कमाहूँ.

खेल-खेल मा पढ़ना-लिखना, विधि इहाँ नवाचारी.
भेदभाव बिन शिक्षा-दीक्षा, एक स्कूल हे सरकारी.
घर के तीरतार पा येला , भाग अपन सहराहूँ.
नाँव लिखा दे मोरो दाई, पढ़-लिख नाँव कमाहूँ.

*****

दाखिला लें सरकारी

रचनाकार- कन्हैया साहू "अमित", भाटापारा

चलो चलें हम स्कूल, आज अब से सरकारी.
अपने घर के पास, करें शाला से यारी.
दौड़भाग क्यों दूर, पसीना व्यर्थ बहाना.
सबके रहो समीप, वहीं पर नाम लिखाना.

नया-नया परिवार, नई खुशियों का मेला.
हमजोली का साथ, लगे हैं रेलम-पेला.
कापी, पेन, किताब, पहाड़ा रख लो बस्ता.
भाँति-भाँति के लोग, लगे शाला गुलदस्ता.

टन-टन घंटी बोल, कान में मधुर सुनाती.
बजते दस जब नित्य, सभी को स्कूल बुलाती.
ईश विनय करजोड़, प्रार्थना मन से गाते.
साफ-सफाई, योग, स्वच्छ तन, स्वस्थ बनाते.

सरस्वती का धाम, बड़ा पावन विद्यालय.
पढ़ना लिखना पाठ, सीख का उत्तम आलय.
खेलकूद सब साथ, मेहनत तप अनुशासन.
नैतिक सद्व्यवहार, सभ्यता संग उपासन.

भ्रम झूठ से दूर, प्रमाणित होती शिक्षा.
साझा सेवाभाव, समर्पित होती कक्षा.
प्रीत भरे प्रतिपाल, दीप सम जलते शिक्षक.
शिक्षा सह संस्कार, सहज बनते संरक्षक.

विनय, विमल व्यवहार, स्कूल सबका सरकारी.
भेदभाव का भाग, गुणा गुण शिष्टाचारी.
हृदय बालपन जोड़, कहाँ ऋण फिर गुणवत्ता.
देश, राज्य, समुदाय, सदा सहयोगी सत्ता.

हाथ धुलाई लाभ, रगड़ धोना सिखलाते.
मीनू के अनुसार, गर्म भोजन सब खाते.
दो जोड़ी गणवेश, किताबें मिलती पूरी.
सबको शिक्षादान, पढ़ाई जीवन धूरी.

छात्रवृत्ति प्रतिवर्ग, पढ़े होकर उत्साही.
मुफ्त सायकल प्राप्त, सुलभ सब आवाजाही.
शिक्षक सभी सुयोग्य, बेहतर पाठ पढ़ाते.
उच्च प्रशिक्षण प्राप्त, देशहित भाग्य बनाते.

शौचालय उपयोग, पृथक सब बाला, बालक.
विविध कला पर जोर, देख खुश होते पालक.
भाँति भाँति के खेल, मान सबका सदा बढ़ाते.
नवाचार, व्यवहार, यहाँ संगणक पढ़ाते.

फिर क्यों इतना सोच, दाखिला लें सरकारी.
नहीं यहाँ पर शुल्क, प्रथम यह जनहितकारी.
साधन सुविधा सर्व, सदागम सत समझातें.
नैतिकता भरपूर, शिष्य को योग्य बनातें.

छोड़ निजी का मोह, स्कूल सरकारी आओ.
निज भाषा में ज्ञान, सहज ही पढ़कर पाओ.
शिक्षक सक्षम सिद्ध, 'अमित' होते उपकारी.
शंशय सारे त्याग, दाखिला लें सरकारी.

*****

छत्तीसगढ़ी जनऊला

रचनाकार- कन्हैया साहू "अमित", भाटापारा

1. दू आखर के हावय नाम, हरदम रहिथे सरद जुकाम.
काजग हावय मोर रुमाल, काम मोर हे गजब कमाल.

2. रोवाना हे एखर काम, लाली बाई हावय नाम.
हरियर पहिरे लुगरा लाम, दू पइसा हे एखर दाम.

3. हरियर हँव, पाना झन जान, करँव नकल, झन बंदर मान.
मिरचा खाथँव मैं हा पोठ, तपत कुरू के करथँव गोठ.

4. हरियर पींयर हवै मकान, रहँय इहाँ करिया इंसान.
रहै रंधनीघर मा धाक, फागुन मा ये जाथे पाक.

5. पाँव नहीं पर जाथे पार, खलबल-खलबल बड़ रफ्तार.
भागय सरपट पानी चीर, बिन पतवार हाल गंभीर.

6. आगू-पाछू डोलय मोर, करय कभू नइ काँही शोर.
अँधियारी मा कहाँ लुकाय, देख अँजोरी तुरते आय.

7. सबके घर रहिथँव बिन खाय, कोन्हों नइ पानी पीयाय.
करँय भरोसा सब संसार, महीं हरँव घर के रखवार.

8. कुकरा नो हे, मुँड मा मौर, जंगल झाड़ी एखर ठौर.
नाचय बरखा बादर देख, सतरंगी हे, नाँव सरेख.

9. करिया हे पर नो हे काग, लंबा हे पर नो हे नाग.
अँइठन हे पर नो हे डोर, झटपट संगी करलव शोर.

10. खाथे येहा गोली गोल, डरथे जम्मों सुनके बोल.
दबथे घोड़ा भागय सोज, ठाठ हाथ मा, गोली खोज.

1-पेन, 2-मिरचा, 3-मिट्ठू, 4-सरसों, 5-डोंगा, 6-अपन छँइहाँ, 7-तारा (ताला), 8-मँजूर, 9-बेनी (चोटी,) 10-बंदूक

*****

बादर तहूँ नहाये कर

रचनाकार- कन्हैया साहू "अमित", भाटापारा

भर-भर पानी लाथस बादर,
जग ला तैं नहवाथस बादर.

कुआँ-बावली, तरिया, नदियाँ,
भरथस चारों कोती पनियाँ.

फुतका, माटी निक धोवाथे,
सुघराई सबके बढ़ जाथे.

कल्लुठुवा कस तैं किंजरथच,
झरर-झरर तैं झरफर झरथच.

चुकचुक ले दिख, ममहाये कर,
बादर तैं कभू नहाये कर.

*****

बारिश आई

रचनाकार- रत्ना श्रीवास्तव, गाजियाबाद

मम्मी जी,देखो बारिश आई,
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई.
करने दो मां आज मनमानी,
विनती करूँ,गुहार लगाई,
बारिश आई,बारिश आई,
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई.
नहीं होगा सर्दी-बुखार
इस सावन में बस एकबार,
पड़ने दो बूँदों की बौछार,
फिर कोई जिद न करने की,कसम खाई,
बारिश आई,बारिश आई,
मम्मी जी,देखो बारिश आई.
सुनकर बच्चे की मनुहार,
दिल मम्मी का पिघला यार,
हँसकर बोली-"जा तू जी ले,
बूँदों से कुछ गुफ्तगू कर ले,
मैं तेरा बचपना लौटाई"
बारिश आई,बारिश आई,

रिमझिम-रिमझिम बारिश आई.
बच्चे का मन खिल गया ऐसे,
सावन में फूल खिला हो जैसे,
ज्यों-ज्यों तन भीगा बारिश में,
अंर्तमन में हरियाली छाई,
बारिश आई,बारिश आई,
रिमझिम-रिमझिम बारिश आई.

*****

शिक्षा क्षेत्र में भारत को विश्वगुरु बनाना है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को शिक्षकों प्रशासकों
ने गंभीरता से अमल में लाना है
शिक्षा क्षेत्र में भारत को
विश्वगुरु बनाना है

भारतीय युवाओं में प्रतिभा की कोई कमी नहीं
बस गंभीरता से उसे पहचानना है
शिक्षण को स्वांदात्मक बहुआयामी
आनंदमयी अनुभव बनाना है

छात्रों में मूल्यों को विकसित करने शिक्षकों
की महत्वपूर्ण भूमिका रेखांकित करनाहै छात्रों के
आचरण को सुधारने विपरीत परिस्थितियों
का सामना करने आत्मविश्वास जगाना है

भारत को मजबूत स्थिर शांतिपूर्ण देश
के रूप में विकसित करना है
शिक्षा क्षेत्र में भारत को
विश्वगुरु बनाना है

*****

इतनी गर्मी का कारण

रचनाकार- युक्ति साहू, कक्षा 8 वी, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम विद्यालय, तारबाहर, बिलासपुर

क्यों हो रही है इतनी गर्मी,
क्या होगी इसकी वजह?
पेड़-पौधे सूखने लगे,
धरती तपती हर जगह.

पक्षी प्यासे मर जाते,
जीव तिलमिलाते ताप से.
सूरज लगता अग्नि जैसा,
ये सब हुआ हमारे पाप से.

38 डीग्री का तापमान,
42 डीग्री जैसा लगता है.
बल्कि 48-50 में इंसान का ,
जीना मुश्किल हो जाता है.

45 डीग्री में बेहोशी महसूस होता है,
ब्लड प्रेशर कम होने लगती है.
मांसपेशी काम नहीं करेगी,
मनुष्य की जान भी जा सकती है.

वो दिन भी अब दूर नहीं,
जब ये नौबत आ जाएगी.
पृथ्वी ऐसी तपेगी जब,
भयंकर गर्मी आएगी.

पेड़ लगाओ, पानी बचाओ,
कह-कहकर सब थक गए.
पर्यावरण खराब कर दिया,
पेड़ों को काटते गए.

नए नए कारखाने बनाए,
वायु प्रदूषित हो गया.
वायुमंडल जो हमें बचाता,
उसे प्रदूषित हमने कर दिया.

यही तो है कारण - हमारी गलती,हमारा स्वार्थ!

*****

मोबाइल ने चोर पकड़ा

रचनाकार- बद्री प्रसाद वर्मा अनजान, गोरखपुर

मम्मी मम्मी जल्दी करो वाटरपार्क जाने में देर हो रही है.

ठहरो यीशु, तुम तो हर काम में जल्दबाजी करते हो, तैयार तो होने दो. कह कर मम्मी तैयारी में जुट गई.

आज बहुत दिनों बाद यीशु, ओम, वैष्णवी और रुद्राक्ष वाटरपार्क जा रहे थे. सभी बहुत खुश थे.

मम्मी तैयार हो कर आईं. सभी झटपट ई रिक्शा में बैठ कर मम्मी के साथ वाटरपार्क की ओर चल दिए.

वाटरपार्क पहुँचकर मम्मी ने टिकट खरीदा. फिर सब अन्दर पहुँच गए. मम्मी बोलीं देखो तुम सब ज्यादा उछल कूद मत करना समझे. सम्भल कर नहाना.

सभी भाई बहन वाटरपार्क में नहाने, झूला झूलने और झरने के नीचे बैठ कर नहाने का बारी बारी से आनंद ले रहे थे.

तभी मम्मी ने पूछा मेरा मोबाइल कहाँ गया? अभी यहीं रखा था.

तभी वाटरपार्क के एक कर्मचारी ने पास आ कर पूछा "आप का मोबाइल किस कम्पनी का था?"

एप्पल आईफोन था. मेरा ध्यान बच्चों की ओर था तभी एक लड़का मेरे पास आकर कहने लगा ऑण्टी मुझे प्यास लगी है क्या पानी मिल सकता है? "

" मैंने मोबाइल यहीं रख कर उस बच्चे को बैग से पानी निकाल कर दिया. जब लड़का पानी पी कर चला गया तब मैंने अपना मोबाइल ढूँढ़ा तो देखा कि मेरा मोबाइल वहाँ था ही नहीं. तभी एक औरत वहाँ आई और कहने लगी बहन जी आप का मोबाइल तो वह लड़का ले गया है जिसे आप ने पानी की बोतल दी थी. उसका वीडियो मेरे मोबाइल में है देख लीजिए. वीडियो देख कर यीशु की मम्मी बोली हाँ यही लड़का मेरे पास पानी मांगने आया था. उस लड़के की तलाश शुरु हो गई. वह लड़का एक रेस्टोरेंट के पास खड़ा मिल गया. वाटरपार्क के कर्मचारी ने तुरंत उसे पकड़ लिया. बोला तुमने इन बहनजी का मोबाइल चुराया है उसे वापस कर दो वरना पुलिस बुला कर जेल भिजवा दूँगा. "

वह लड़का डर कर बोला पुलिस मत बुलाइए मैं अभी मोबाइल ला कर देता हूँ. इतना कह कर वह लड़का अपने रद्दी बटोरने वाले थैले से मोबाइल निकाल कर देते हुए बोला मुझसे गलती हो गई अब ऐसी गलती कभी नहीं करुँगा मुझे माफ कर दीजिए.

अपना मोबाइल पा कर यीशु की मम्मी को जान में जान आई. उन्होंने उस महिला को धन्यवाद दिया जिसने लड़के की मोबाइल चुराते हुए वीडियो बनाई थी.

*****

अब स्कूल जाना हैं

रचनाकार- शरद कुमार दुबे

चलो हो जाओ तैयार, अब स्कूल जाना है.
बहुत किये मौज मस्ती, अब तो पढ़ने जाना है.
गर्मी छुट्टी की छुट्टी अब बीती, किये इसमें हमने बहुत मौज मस्ती.
स्कूल जाना है बच्चों, रख लो साथ में दापती, बत्ती.

मामा के घर बुआ के घर से आये हम.
चलो अब करो तैयारी, स्कूल जाय हम.
अब दिन आये पढ़ने का, पढ़ लिख के आगे बढ़ने का.
जीवन में कुछ करने का, माँ-बाप का नाम रोशन करने का.

चलो अब करो तैयारी, आगे कदम बढ़ाना है.
हो जाओ तैयार अब स्कूल जाना है.

*****

दृढ़ता और संतोष, खुशियों के स्त्रोत

रचनाकार- डॉo सत्यवान सौरभ, हरियाणा

दृढ़ता आत्मा की दृढ़ता है, विशेषकर कठिनाई में. यह सदाचार की खोज में निरंतरता प्रदान करती है. दृढ़ता स्वतंत्र रूप से कर्तव्य की पुकार से परे जाने, बलिदान देने, अपने विश्वासों पर कार्य करने की इच्छा है. दृढ़ता में हमारी व्यक्तिगत कमजोरियों का सामना करने का साहस और बुराई के प्रति आकर्षण शामिल है. "मनुष्य का अंतिम माप यह नहीं है कि वह आराम और सुविधा के क्षणों में कहाँ खड़ा है, बल्कि यह है कि वह चुनौतियों और विवाद के समय कहाँ खड़ा है. उपरोक्त उद्धरण दर्शाता है कि धैर्य अन्य गुणों का रक्षक है. व्यक्ति को जीवन में आने वाली अनेक कठिन परिस्थितियों और चुनौतियों का सामना करने के लिए साहसी होना चाहिए. उदाहरण के लिए, जब गांधीजी को 1930 में अपने नमक सत्याग्रह को रोकने के लिए मजबूर किया जा रहा था, तो उन्होंने जिस चीज़ में विश्वास किया था उसे छोड़ने के बजाय गिरफ्तारी का सामना करने का साहस किया.

हमारे जीवन में कई ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न होती हैं जिनमें सही काम करना कठिन हो जाता है, भले ही हम जानते हों कि यह क्या है. इसके अनेक कारण हो सकते हैं कि जो हम सर्वोत्तम जानते हैं उसके अनुसार कार्य करना है. मजबूत बने रहने के लिए, जो अच्छा है उसे करने के लिए, हमें तीसरे प्रमुख गुण की आवश्यकता है, जिसे वैकल्पिक रूप से धैर्य, साहस या बहादुरी के रूप में जाना जाता है. यही वह सद्गुण है जिसके द्वारा हम कठिनाई के बीच भी सही काम करते हैं. जब अपने सद्गुणों को कायम रखना सबसे कठिन होता है, तो यह धैर्य ही है जो इसका समर्थन करेगा. उदाहरण के लिए, जैसा कि कौटिल्य ने भ्रष्टाचार के सन्दर्भ में कहा था, जब जीभ पर शहद हो तो उसका स्वाद न

लेना कठिन होता है. इसे उस सैनिक के गुण के रूप में देखा गया, जो अधिक भलाई के लिए अपना जीवन अर्पित करने के लिए दृढ़ था. अब, हममें से जो लोग सात्विक जीवन जीने के लिए संघर्ष करते हैं, वे मानते हैं कि हम भी सैनिक हैं, कि हम भी युद्ध में लगे हुए हैं, हालाँकि यह लड़ाई भौतिक नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक है.

मनुष्य के रूप में हम उस पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो हमारे पास नहीं है, और जो हमारे पास है उसे नज़रअंदाज़ करते हैं या यहाँ तक कि अनदेखा भी करते हैं. आज बहुत से लोग सोचते हैं कि जीवन एक दौड़ है जहाँ आपको हर चीज़ में सर्वश्रेष्ठ होना चाहिए. हम शायद एक शानदार कार, एक बड़ा घर, बेहतर कमाई वाली नौकरी, या अधिक पैसा चाहते हैं. जैसे ही हम एक चीज़ हासिल कर लेते हैं, अगली चीज़ की दौड़ शुरू हो जाती है. बहुत से व्यक्ति अपने द्वारा प्राप्त की गई हर उपलब्धि के लिए आभारी होने के लिए एक मिनट का भी समय नहीं निकालते हैं. वे जो दूरी तय कर चुके हैं, उस पर पीछे मुड़कर देखने के बजाय, जो दूरी बची है उसे तय करने के लिए खुद को आगे बढ़ाते हैं. और कुछ मामलों में, यह तब होता है जब महत्वाकांक्षा लालच बन जाती है. महत्वाकांक्षा और लालच के बीच अक्सर एक महीन रेखा होती है. लोग सोच सकते हैं कि जब उन्होंने अपनी सपनों की जीवनशैली के लिए आवश्यक सभी चीजें हासिल कर ली हैं, तो वे जो कुछ भी उनके पास है उससे संतुष्ट होंगे - लेकिन ऐसा शायद ही कभी होता है. अपनी सूची से सभी उपलब्धियों पर निशान लगाने के बाद भी आप सहज महसूस नहीं करते हैं. यह बेचैनी महसूस हो सकती है कि अभी भी कुछ कमी है. वह गायब तत्व है कृतज्ञता और संतुष्टि.

संतोष, मन की शांति और सकारात्मकता लाता है जो विकास और आत्म-सुधार को सुविधाजनक बना सकता है. इसका मतलब यह नहीं है कि किसी के सपने और आकांक्षाएं नहीं हो सकतीं. कोई वर्तमान को स्वीकार कर सकता है और फिर भी बेहतर भविष्य की कामना कर सकता है. संतोष का अर्थ केवल वर्तमान के साथ शांति से रहना है, न कि आत्मसंतुष्ट होना. जब कोई कृतज्ञ होता है, तभी वह जीवन में अधिक प्रचुरता प्रकट करने में सक्षम होता है. यह उन सभी अच्छी चीजों को देखने के लिए दिमाग को खोलता है जो पहले से ही उसके पास हैं. कभी-कभी हम चीज़ों को हल्के में ले लेते हैं और उनके लिए तथा उन सभी चीज़ों के लिए आभारी होना भूल जाते हैं जो उन्हें हमारे जीवन में लाने के लिए आवश्यक थीं. हम अक्सर देखते हैं कि क्या कमी है या हमने अभी तक क्या हासिल नहीं किया है. इससे हममें कड़वाहट ही आएगी.

संतोष का मतलब है कि हमारे पास जो है, हम कौन हैं और कहां हैं, उसमें खुश रहना. यह वर्तमान की वास्तविकता का सम्मान करना है. यह इस बात की सराहना करना है कि हमारे पास क्या है और हम जीवन में कहाँ हैं. संतोष का अर्थ इच्छा का अभाव नहीं है; इसका सीधा सा मतलब है कि हम वर्तमान से संतुष्ट हैं, और हमें भरोसा है कि जीवन में जो मोड़ आएगा वह सर्वोत्तम होगा. सभी गुण संतुलन के रूप में मौजूद हैं, और इसलिए उन्हें उन विभिन्न अतिरेकों से सावधानीपूर्वक अलग किया जाना चाहिए जो सद्गुण का विकल्प बनने की धमकी देते हैं. यह दृढ़ता के मामले में विशेष रूप से सच है, जो आसानी से क्रूरता या कायरता की चरम सीमा तक पहुँच सकता है.

*****

स्वच्छता गीत

रचनाकार- कन्हैया साहू "अमित", भाटापारा

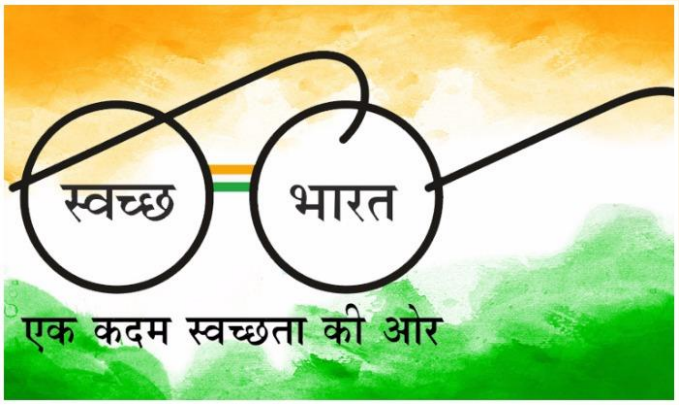

साफ सफाई राखव रे भाई,
येमा सबके हे गजब भलाई.

साफ रखव पीये के पानी,
बच जाही जम्मों जिनगानी.
साफ सफाई सत सुखदानी,
झन करहू गा आनाकानी.
जिनगी खातिर करलव चतुराई,
साफ सफाई राखव रे भाई,
येमा सबके हे गजब भलाई.

गली खोर ले कचरा टारव,
घर अँगना ला रोजे झारव.
रउँदन-गउँदन घुरुवा डारव,
कचरा काड़ी सकला बारव.
भीतर बाहिर राहव सुघराई,
साफ सफाई राखव रे भाई,
येमा सबके हे गजब भलाई.

पेड़ लगावव भाँठा-परिया,
फुरहुर हावा, लगै लहरिया.
छँटही धुँगिया करिया-करिया,
धरती सुग्घर जाही हरिया.
झन काटव कभू'अमित' रुखराई.
साफ सफाई राखव रे भाई,
येमा सबके हे गजब भलाई.

*****

भारत में उत्पादित चीजें अपनाना है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

स्टार्टअप इनोवेशन को आगे बढ़ाना है
हमें शक्तिशाली राष्ट्रीय अभियान चलाना है
इसी अस्त्र से विश्व राजा का ताज़ पहना है
भारत में उत्पादित चीजें अपनाना है.

प्राचीन संस्कृति का युवाओं में प्रसार करना है
प्राकृतिक संसाधनों को बचाना है
विश्व में भारत को नंबर वन बनाना है
आत्मनिर्भर भारत करने हर उपचार अपनाना है.

सर्वशक्तिमान मनीषियों को चेताना है
हमें अपनी नदियों तालाबों को तात्कालिक
जीवनदायिनी भावना से बचाना है
चिर परिचित भारतीय संस्कृति को अपनाना है.

नदियों तालाबों को सदैव ही उनकी
जीवनदायिनी शक्ति के लिए सम्मानित किया है
उस सम्मान को हम मनुष्यों ने जी तोड़ कोशिश कर बचाना है.

शहरीकरण और औद्योगीकरण है कारण
इसका आधुनिकीकरण और लालच ने सब गंवाया है
इकोसिस्टम को नष्ट करके
मानवीय सुखचैन सब गंवाया है.

*****

पढ़ई-लिखई सबके अधिकार

रचनाकार- कन्हैया साहू "अमित", भाटापारा

शिक्षा बिन जिनगी अँधियार,
पढ़ई-लिखई सबके अधिकार.

पढ़े-लिखे ले बढ़थे ज्ञान,
धन-दोगानी, मिलथे मान.
चाहे ताला लगय हजार,
शिक्षा चाबी सिरतों सार.
शिक्षा ले हे जिनगी उजियार,
पढ़ई-लिखई सबके अधिकार.

अनपढ़ ला दँय सबो पछेल,
सबो जघो मा होवय फेल.
शिक्षा ले हे खुशी अपार,
सुख सुविधा के नित बढ़वार.
शिक्षा बिन जिनगी अँधियार,
पढ़ई-लिखई सबके अधिकार.

झन कहाव तुम अँगठा छाप,
पढ़व-लिखव अउ खाववं खाप.

शिक्षा जिनगी के पतवार,
अपन हाथ ले भाग सँवार.
शिक्षा बिन जिनगी अँधियार,
पढ़ई-लिखई सबके अधिकार.

*****

युवा भारत बनाम नशे की लत

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मादक पदार्थों के सेवन और नशीली दवाओं के दुरुपयोग तथा उसकी अवैध तस्करी के मामलों से करीब-करीब हर देश पीड़ित है और यह समस्या दिनोंदिन बढ़ती ही जा रही है. खासकर युवा पीढ़ी जिन्हें भविष्य की बागडोर संभालनी है, यानी हमारी अगली पीढ़ी बनने वाले युवा और बच्चों की रुचि मादक पदार्थों में बढ़ती ही जा रही है हम अपने आसपास भी देखते हैं कि बच्चे भी सिगरेट, बीड़ी, बीयर की ओर आगे बढ़ते दिखाई दे रहे हैं जो वैश्विक समस्या बनती जा रही है. इसलिए प्रतिवर्ष आम जनता में नशे के खिलाफ जन जागृति उत्पन्न करने के लिए नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ़ अंतर्राष्ट्रीय दिवस 26 जून को मनाया जाता है. चूँकि भारत में भी यह दिवस गृह मंत्रालय स्तर पर बड़े कार्यक्रम करके मनाया गया.

ड्रग्स एंड क्राइम पर संयुक्त राष्ट्र कार्यालय (यूएनओडीसी) ने उल्लेख किया है कि एक साथ, हम नशीली दवाओं की समस्या से निपट सकते हैं. दृढ़ संकल्प और नशीली दवाओं से संबंधित ज्ञान साझा करके, हम सभी नशीली दवाओं के दुरुपयोग से मुक्त एक अन्तर्राष्ट्रीय समाज के लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं. जब ड्रग्स का दुरुपयोग व्यापक रूप से समाज के अमीर और गरीब वर्ग के बीच फैल जाता है तो उस समय अनिवार्य है नशीले पदार्थों के दुरुपयोग को रोकने के लिए सामुदायिक सहायता की. नशीली दवाओं के दुरुपयोग के खिलाफ़ युद्ध में प्रसिद्ध कहावत रोकथाम इलाज से बेहतर है काफी प्रासंगिक है. ड्रग्स के दुरुपयोग और इससे जुड़ी अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस के दिन जनजागृति बढ़ाना जरूरी है.

नशीली दवाओं के दुरुपयोग व अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस पर माननीय केंद्रीय गृहमंत्री ने अपने संदेश में कहा कि आज 26 जून 2023 को नशीली दवाओं के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय दिवस के अवसर पर मैं ड्रग्स के विरुद्ध लड़ाई लड़ रही सभी संस्थाओं और लोगों को दिल से बधाई देता हूँ. यह अत्यंत हर्ष की बात है कि नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो ने इस बार भी अखिल भारतीय स्तर पर नशा मुक्त पखवाड़ा का आयोजन किया है. उन्होंने कहा कि हमारा संकल्प है कि हम भारत में नारकोटिक्स का व्यापार नहीं होने देंगे और न ही भारत के माध्यम से ड्रग्स को विश्व में कहीं बाहर जाने देंगे. ड्रग्स के खिलाफ़ इस मुहिम में देश की सभी प्रमुख एजेंसियाँ, विशेषकर नार्कोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो निरंतर अपनी जंग जारी रखे हुए है. इस अभियान को सशक्त करने के लिए गृह मंत्रालय ने 2019 में एनकॉर्ड की स्थापना की एवं हर राज्य के पुलिस विभाग में एंटी नार्कोटिक्स टास्क फोर्स का गठन किया गया, जिसका पहला राष्ट्रीय सम्मेलन अप्रैल 2023 में दिल्ली में हुआ. उन्होंने कहा कि चाहे ड्रग्स की खेती को नष्ट करना हो या जनजागरण हो गृह मंत्रालय सभी संस्थाओं और प्रदेशों के समन्वय से ड्रग्स मुक्त भारत के लिए हर सम्भव प्रयास कर रहा लेकिन इस लड़ाई को बिना जनभागीदारी के नहीं जीता जा सकता. आज इस अवसर पर मैं सभी देशवासियों से यह अपील करता हूँ कि अपने आप को और अपने परिवार को ड्रग्स से दूर रखें. ड्रग्स न केवल युवा पीढ़ी और समाज को खोखला बनाता है, बल्कि इसकी तस्करी से अर्जित धन देश की सुरक्षा के खिलाफ प्रयोग में लाया जाता है. इसके दुरुपयोग के विरुद्ध इस युद्ध में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लें. अपने आस-पास हो रहे ड्रग्स के व्यापार की जानकारी सुरक्षा एजेंसियों को दें.

गुटखा तंबाकू के उपयोग से होने वाली हानियाँ, मदिरा अफीम, कोकीन, भांग चरस गाँजा हशीश एलएसडी आदि अन्य पदार्थ भी मादक पदार्थों के रूप में प्रचलन में है. युवा इनको प्रयोग विभिन्न कारण से कर बैठते हैं और चंगुल में फँस जाते हैं. इनके प्रयोग से दुष्प्रभाव परिवार से विच्छेदन, अपराध प्रवृत्ति की वृद्धि शारीरिक एवं मानसिक कमजोरी के रूप में सामने आती है. कुछ समय के लिए मस्ती देने वाले नशीले द्रव्यों के निरंतर सेवन से मनुष्य के तन-मन निष्क्रिय और शिथिल हो जाते हैं, दृष्टि कमजोर हो जाती है, पाचनशक्ति मंद पड़ जाती है तथा हृदय और फेफड़ों पर बुरा असर पड़ता है. इससे स्वास्थ्य चौपट हो जाता है और मनुष्य असमय ही मृत्यु का द्वार खटखटाने लगता है. नशीली दवाओं की लत एक कट्टर दानव है जो हमारे समाज के विकास पर रोक लगा सकती है.

हम मादक पदार्थों के सेवन से कैंसर सहित अनेक गंभीर बीमारियों के होने को देखें तो धूम्रपान का असर हमारे फेफड़ों पर अधिक पड़ता है. धूम्रपान के चलते हम फेफड़ों के कैंसर का शिकार हो सकते हैं. आंकड़ें बताते हैं कि 80 प्रतिशत धूम्रपान या फिर तंबाकू का सेवन करने वाले लोगों की मौत फेफड़ों के कैंसर के कारण होती है. युवावस्था में धूम्रपान करने वालों में फेफड़ों का कैंसर अधिकतर देखने को मिलता है. ऐसे में ये हमारे लिए परेशानी खड़ कर सकता है.

माननीय पूर्व उपराष्ट्रपति द्वारा एक कार्यक्रम में संबोधन को देखें तो पीआईबी के अनुसार अपने संबोधन में उपराष्ट्रपति ने कहा कि मादक पदार्थों का सेवन एक वैश्विक चुनौती है. यहाँ तक कि विकसित देश भी इसके खिलाफ लड़ाई में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं. मादक पदार्थ किसी भी आयु वर्ग के व्यक्ति को अपनी गिरफ्त में ले सकता है. विशेषकर युवा, किशोर और कम उम्र के युवाओं में मादक पदार्थ तस्करों की गिरफ्त में आने की संभावना अधिक रहती है. संभावित पीड़ितों को मादक पदार्थों के सेवन से होने वाली बर्बादी के बारे में सचेत किया जाना चाहिए, ताकि वे अपने को इस जाल से सुरक्षित रख सकें. यह चुनौती इतनी बड़ी है कि सरकारी एजेंसियों द्वारा किये जाने वाले प्रयास इस खतरे को समाप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है. राज्य सरकार, गैर-सरकारी संगठन और समर्पित व्यक्तियों पर इस खतरे को समाप्त करने की बड़ी जिम्मेदारी है.

हम इस दिवस के इतिहास को देखें तो, 7 दिसंबर 1987 को संयुक्त राष्ट्र की 93वीं पूर्ण बैठक के बाद , 13 दिसंबर 1985 के संकल्प 40/122 को याद करते हुए हर साल 26 जून को नशीले पदार्थों के दुरुपयोग और अवैध तस्करी के खिलाफ अंतर्राष्ट्रीय दिवस के रूप में मनाया जाता है.

*****

शाला प्रवेश दिवस

रचनाकार- श्रीमती लक्ष्मी तिवारी, कोरबा

छुट्टियों का दौर हुआ खतम
बुलाती घंटियों का शोर है
मन के मौजी है बड़े
इन पर नही किसी का जोर है

मन के सच्चे है बड़े
मां भारती के लाल हैं
नन्हे नन्हे कदम बढाते चले स्कूल की ओर है.

न कल की फिक्र है इन्हें
न आज की परवाह है.
मुट्ठियो में है कैद तारे,
आसमां को छूने की चाह है.

जिद है सूरज सा चमकना,
और आसमान पर है दमकना.
मन है निर्मल चंदा सा
उजियारा चहुंओर है.

नन्हे नन्हे कदम इनके बढ़ चले स्कूल की ओर है.

आंखों में सपना नया,
मन में अटल विश्वास है.
सदवाणी को प्रखर करने हेतु
ज्ञान की अजब प्यास है.

नन्हे नन्हे कदम इनके बढ़ चले स्कूल की ओर है.

भविष्य को है गढ़ना,
लक्ष्य की ओर है बढ़ना.
सफलता का है मूल मंत्र,
पढ़ना और बस है पढ़ना.

विद्यालय देवालय है इनका,
शिक्षक देव समान है.
जात पात से परे रह कर,
पाते स्नेह और ज्ञान है..
मुक्त गगन में उड़ने को
पर खोले तैयार है.
नन्हे नन्हे कदम इनके बढ़ चले स्कूल की ओर है.

*****

घर में बड़े बुजुर्गों ज़रूरी है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

घर में बड़े बुजुर्गों ज़रूरी है
क्योंकि ये भगवान हैं
कुछ बुजुर्गों की
अजीब कहानी है

हमने अपने जीवन में
सुख चैन रूपी बहुत
कुछ कमाया है
क्योंकि हमारे ऊपर
बुजुर्गों का साया है

घर में बुजुर्गों जरूरी है
क्योंकि ये भगवान हैं
कुछ बुजुर्गों की
अजीब कहानी है

ना खाने को रोटी
आंखों में बस पानी है
शरीर के हाथों हारे
यह मन के जवान हैं

हम सब को समस्याओं
से बचाया है
जीवन में पूरा परिवार
सुख चैन पाया है

जीवन में कभी ठोकर
नहीं खाया है
क्योंकि हमारे सिर पर
बुजुर्गों का साया है

समाज में सम्मान दिलाया है
जीने का तरीका सिखाया है
जिम्मेदार नागरिक का पाठ पढ़ाया है
क्योंकि हमारे ऊपर बुजुर्गों का साया है

*****

पिज्जा

रचनाकार- वीरेंद्र बहादुर सिंह, नोएडा

पिज्जा डिलिवरी ब्वाय की नौकरी करने वाले रघु को उसके अगल-बगल की झुग्गियों में रहने वाले बच्चों ने घेर कर पूछा, "सुना है, यह पिज्जा बहुत अच्छा होता है. तू वहां नौकरी करता है, तुझे तो भरपेट खाने को मिलता होगा न?"

झूठमूठ की हंसी हंसते हुए रघु ने कहा, "मैं तो रोजाना जितना मन होता है, उतना पिज्जा खाता हूं."

जबकि सच तो यह था कि वह तीन महीने से नौकरी कर रहा था, पर पिज्जा खाने की कौन कहे, उसने चखा तक नहीं था.

मैंने सुना है कि पिज्जा शहद जैसा होता है... क्या यह सच है? जय ने पूछा.

नहीं रे... वैसा नहीं होता. एक बार एक लड़की का पूरा डिब्बा गिर गया था. उसमें से एक टुकड़ा मुझे भी मिल गया था. मीठा नहीं, तीखा-तीखा था, पर था बहुत जोरदार... शेरा ने कहा.

जिस दिन से रघु ने पिज्जा डिलीवरी की यह नौकरी की थी, उसी दिन से उसकी इच्छा थी कि एक दिन उसे भरपेट पिज्जा खाना है. आखिर इसमें ऐसा क्या है, जो लोग इसे खाने के लिए पागल हुए रहते हैं. इसका

मतलब यह कोई जोरदार चीज है

पिज्जा खाने कद लिए ओवरटाइम के अलावा मैनेजर से विनती कर के रात को वह रेस्टोरेंट का कूड़ा उठाने और झाड़ू-पोछा करने लगा. इस तरह लगभग दो महीने की सख्त मेहनत कर के उसने करीब डेढ़ हजार रुपए बचा लिए. अब वह पेट भर पिज्जा खा सकेगा, यह सोच कर उसे उस रात नींद नहीं आई. अगले दिन वह पिज्जा खाएगा, यह सोच कर उस दिन उसने खाना भी नहीं खाया.

उस दिना बिना यूनीफॉर्म के हो वह रेस्टोरेंट में दाखिल हुआ. वहां से उसने देखा कि उसके पड़ोस वाले बच्चे भीख मांग रहे हैं. छोटे जय को एक लड़की ने मुंह बना कर बिस्कुट का आधा पैकेट दिया. बिस्कुट खुद अकेले खाने के बजाय जय ने अपने अन्य तीन साथियों को बुलाया.

बस, रघु के तरस रहे मन को तमाचा लगा. पल भर का विलंब किए बगैर उसने सीटी मार कर उन लोगों को बुलाया. रघु को देख कर वे सभी उसकी ओर भागे. जय ने हाथ में लिया आधा पैकेट बिस्कुट उसके सामने रख दिया.

यह देख कर भीग चुकी आंख का कोर पोछते हुए रघु ने उन सब से पूछा, "मैं कह रहा हूं कि पिज्जा खाओगे क्या?"

*****

सौर मंडल

रचनाकार- उदय करन राजपूत, जालौन

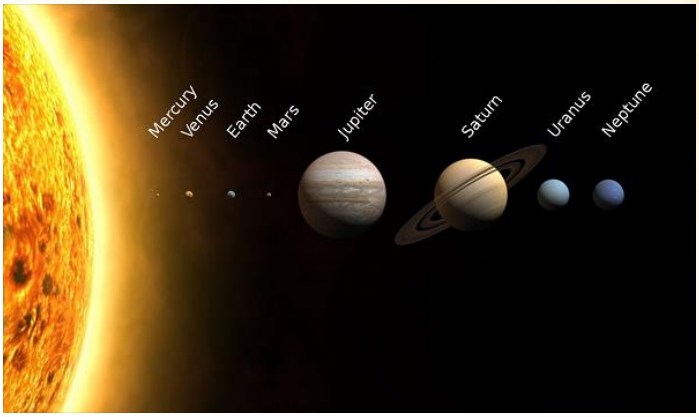

ध्यान लगाकर सुन लो बात
सौरमंडल में ग्रह हैँ आठ.
तुमको रखना है ये सुध,
सबसे छोटा ग्रह है बुध.
दूजा ग्रह है शुक्र हमारा,
कहते उसको भोर का तारा.
जिस ग्रह में हम हैँ रहते,
सब उसको पृथ्वी कहते.
फिर मंगल का नंबर आये,
लाल ग्रह वो ही कहलाये.
सौर मंडल का ग्रह वो प्यारा,
सबसे बड़ा बृहस्पति हमारा.
बात सुनो शनि को जानो,
सूर्य से छठवां ग्रह मानो.
ग्रह सातवां अरुण है प्यारे,
क्या तुम समझे राज दुलारे.
ग्रह आठवां वरुण को समझो,
याद करो यह अब मत उलझो.

*****

आओ चलें उन राहों पर

रचनाकार- राकेश शर्मा “निशीथ”, उत्तरप्रदेश

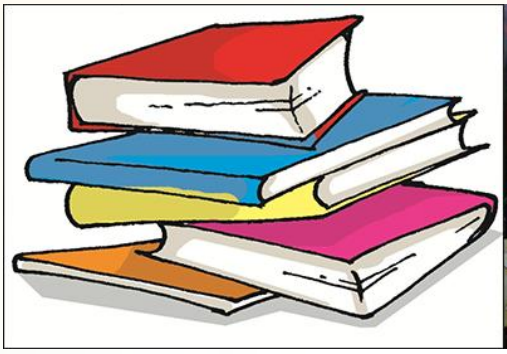

युवा लेखक विकास बिश्नोई का बाल कहानी संग्रह "आओ चलें उन राहों पर" बच्चों और युवाओं को ऐसी राह पर चलने के लिए आह्वान करता है, जो उन्हें देश का एक आदर्श नागरिक बनने की प्रेरणा देता है. इस पुस्तक की कहानियों को पढ़ने से हमें ऐसा आभास होता हैं कि यह सब कुछ हमारी, हमारे परिवार, आस-पड़ोस के जीवन की वास्तविक घटनाएं हैं, जिनका हमें अक्सर कभी ना कभी सामना करना पड़ता है.

नानी से बचत की सीख' कहानी के माध्यम से बच्चों में बचपन से ही पैसों की बचत की भावना पैदा हो सकती है, को बखूबी दर्शाया गया है. इस प्रकार की भावनाएं आगे चलकर जीवन और परिवार को सुनियोजित रूप से चलाने के लिए लाभकारी सिद्ध होती है.

वहीं दूसरी ओर वर्तमान में अनेक इलेक्ट्रॉनिक गेजेट्स ने व्यक्ति, परिवार औऱ समुदाय को अपनी गिरफ्त में ले लिया है. इसको समझते हुए प्रस्तुत कहानी संग्रह की "मोबाइल है ना" कहानी में जब सचिन अपनी माताजी को मोबाईल की असीमित विशेषता बताने से नहीं अघाता, वह कहता है कि मां, आजकल सब ऑनलाइन मोबाइल से हो जाता है, कहीं आने-जाने की जरूरत नहीं होती. तब उसकी मां मोबाईल से दुनियादारी, संस्कार, मित्रता वगैरह सबको निभा सकने का सवाल करती है. तब सचिन के पास उसका कोई जवाब नहीं होता और वह अपने बच्चों के भविष्य की चिंता करने लगता है.

रक्तदान न केवल दान का एक रूप है, बल्कि अनेक जिंदगियों को बचाने में भी सहायक होता है. "रक्तदान का महत्व" कहानी में बच्चों को सहजता से रक्तदान के महत्व के बारे में जानकारी उपलब्ध करवाई गई है. पुस्तक में आगे बढ़ते हैं तो समाज की एक आम

समस्या "लड़का और लड़की में फर्क" और माता पिता का जीवन में अमूल्य स्थान को अलग अलग कहानियों में दर्शाया गया है. जहाँ "बेटियां" कहानी में बेटी को बेटे के समान दर्जा दिया गया है, वहीं जब रमेश अपनी पत्नी के कहने पर मां-बाप को घर से बाहर निकाल देता हैं, तब उनका बेटा किस प्रकार से अपने मां-बाप की आंखें खोल अपने दादा-दादी को पुन: अपने परिवार में वापस लाने में सफल होता है, इसे "जड़" कहानी में बहुत ही सुन्दर रूप में बताया गया है.

इसी तरह प्रस्तुत कहानी संग्रह में तीन दर्जन कहानियां हैं. प्रत्येक कहानी किसी न किसी रूप में देशभक्ति, सामाजिक, पारिवारिक व पर्यावरणीय सीख प्रदान करती हैं. मेरा मानना है कि कहानी संग्रह को पढ़कर पाठकों को ऐसा कहीं भी नहीं लगेगा कि उन्हें जबरदस्ती से सीख दी जा रही है, बल्कि वे सहजता से इसे ग्रहण करेंगे. विशेष बात यह है कि कहानियों को आकर्षित बनाने हेतु सुंदर रेखाचित्रों का सार्थक सहारा लिया गया है, जो पुस्तक में चार चाँद लगाने का कार्य करता है. इसमें कोई संदेह नहीं कि इस बाल कहानी संग्रह से बच्चों को सही राह पर चलने की प्रेरणा अवश्य मिलेगी. मेरा विश्वास है कि बाल वर्ग में ज्ञान एवं जागरूकता बढ़ाने के लिए यह कहानी संग्रह एक महत्वपूर्ण कड़ी साबित होगी, जिसके लिए लेखक बधाई के पात्र हैं.

*****

मुस्कान में पराए भी अपने होते हैं

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

मुस्कान में पराए भी अपने होते हैं
अटके काम पल भर में पूरे होते हैं
सुखी काया की नींव होते हैं
मानवता का प्रतीक होते हैं.

मुस्कान में हम सुखी ज़िन्दगी जीते हैं
प्रेम रस बहुयात में पीते हैं
दिलों में प्रेम भाव वात्सल्य सीते हैं
मानव से मानव की प्रेम कड़ी जोड़ते हैं.

स्वभाव की यह सच्ची कमाई है
इस कला में अंधकारों में भी
भरपूर खुशहाली छाई है
मुस्कान में मिठास की परछाई है.

मीठी जुबान का ऐसा कमाल है
कड़वा बोलने वाले का शहद भी नहीं बिकता
मीठा बोलने वाले की
मिर्ची भी बिक जाती है.

*****

अधूरा कर्त्तव्य

रचनाकार- संगीता पाठक, धमतरी

आज रूपल की शादी है. पूरा घर दुल्हन की तरह सज सँवर कर मुस्कुरा रहा है.शहनाइयाँ बज रही हैं.

रूपल की सहेलियाँ उसे तैयार कर रही हैं. गौरवर्णी रूपल आज स्वर्ग से उतरी अप्सरा के समान सुंदर लग रही है.सहेलियों के हँसी के फव्वारे भी चल रहे हैं.

रूपल शांता की इकलौती बेटी है. रूपल के पिता आर्मी में थे. दो वर्ष पहले बार्डर पर चीनी सैनिकों से मुकाबला करते समय वीर गति को प्राप्त हो गये.आज शांता नौकर चाकरो को आदेशित करती हुई इधर-उधर दौड़ भाग कर रही हैं.बारात आने की सूचना मिलते ही वह बिटिया के कक्ष की ओर भागी.रूपल को देखते ही उसकी आँखें भर आयीं.मन में सोचने लगी आज मेरी बच्ची परायी हो जायेगी.काश आज तेरे पापा होते . . . .

रूपल -"मम्मी,आप अभी तक तैयार नहीं हुई हो.बारात आने वाली है."

शांता-"मुझे तैयार होने का समय ही नहीं मिला बेटा. मैं ये गुलाबी लहँगा पहन लेती हूँ.

शांता भी अप्रतिम सौंदर्य की धनी है.गुलाबी लहँगा उनके सौन्दर्य में चार चाँद लगाने लगा.

रूपल -"मम्मी,आप बहुत ही प्यारी लग रही हो. बस ये गुलाबी लिपिस्टिक लगा लीजिये." रूपल चहक कर बोली

शांता-"नहीं बेटा ,मैं लिपिस्टिक नहीं लगाऊँगी."

रूपल "-मम्मी ये मोती की माला का सेट पहनो और ये गुलाबी लिपिस्टिक लगाओ. प्लीज मम्मी ,लगा लीजिये न."

शांता गुलाबी लिपिस्टिक लगाने के बाद बहुत ही सुंदर लग रही थीं.

शांता अपने पतिदेव की तस्वीर को निहारने लगीं. मेजर विक्रम सिंह आखिरी बार लद्दाख से यही गुलाबी लहँगा और गुलाबी लिपिस्टिक लेकर आये थे.

शांता की आँखों से आँसुओं की धार बहने लगी.मन ही मन वे बोलीं देखिये ,आपकी बेटी आज कितनी सुंदर लग रही है.आपका अधूरा कर्त्तव्य आज मुझे पूरा करना है. रूपल को हमेशा सौभाग्यवती रहने का आशीर्वाद दे दीजिये.

रूपल मम्मी को भावुक होते देख कर उनके आँसुओं को पोंछने लगी.शांता ने अपनी बेटी को आलिंगन में भर लिया.

*****

भारतीय संस्कार

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

भारतीय संस्कार
हमारे अनमोल मोती है
प्रतितिदिन मातापिता के पावन
चरणस्पर्श से शुरुआत होती है

सबको प्यार का मीठा प्यारा माता पिता
राष्ट्र की सेवा का पाठ पढ़ाते हैं
हम अपनी भारतीय संस्कृति से
प्राणों से अधिक प्यार करते हैं

बुजुर्गों को नमन करते हैं
बड़ों की सेवा में हम भारतीय
हमेशा स्वतः संज्ञान सेआगे रहते हैं

श्रावण कुमार गुरु गोविंद सिंह
महाराणा प्रताप वीर शिवाजी
अनेकों योद्धाओं बलवीरों
महावीरों की मां भारती है

हम भारतवासी संयुक्त परिवार की
प्रथा श्रद्धा से कायम रखे हैं
अतिथियों को देव तुल्य मानकर
भरपूर भाव से सेवा करते हैं

*****

स्कूल खुल गे

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

गरमी के महिना, तंय बने सब घर के पहुना.
कापी पुस्तक ल छोड़ के, मजा करे दू महिना.
हिन्दी अंग्रेजी पढ़ई लिखई, तंय सब ल भुल गे.
पढ़े ल जा भईया, अब तो स्कूल खुल गे.

गुरुजी जोहत हे, मोर लईका कब आही.
खेलकूद पढ़ई लिखई, अऊ बने-बने गियान पाही.
नवा-नवा कापी पुस्तक, पुराना झोला ल सील ले.
पढ़े ल जा भईया, अब तो स्कूल खुल गे.

नि:शुल्क पाठ्यपुस्तक, नि:शुल्क गणवेश.
गरम हे मध्याह्न भोजन, खा ले भरके पेट.
सुघ्घर मजा के गीत कहानी, गुरुजी मेर सुन ले.
पढ़े ल जा भईया, अब तो स्कूल खुल गे.

सुरुज दिखथे फुटबॉल बरोबर, नानकून दिखथे चन्दैनी प्यारा.
दिन रात कईसे होथे, काबर होथे नमक हर खारा.
बिज्ञान के चमत्कार ल तंय, स्कूल जाके सीख ले.
पढ़े ल जा भईया, अब तो स्कूल खुल गे.

*****

भारतीय नारी सब पर भारी

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

पुरुषों से कम नहीं है आज की भारतीय नारी
व्यवसाय हो या कंपनी इन्होंने ही बाज़ी मारी
साहस ज़ज्बे का शौर्य है भारतीय नारी
भारतीय नारी सब पर भारी

गृहणी के साथ-साथ अनेक जिम्मेदारी है धारी
किसी भी विपत्ति में कभी हिम्मत नहीं हारी
मां बेटी बहन पत्नी की निभाई जिम्मेदारी
भारतीय नारी सब पर भारी

संवेदनशीलता सहिष्णुता की मूरत है नारी
धैर्य मेहनती इमानदारी की प्रतीक है नारी
हर रूप में रिश्तो के बंधन को निखारी
भारतीय नारी सब पर भारी

कार्यबल जिम्मेदारी जवाबदेही में प्राथमिकता
धारी सफ़लताओं से हर क्षेत्र में बाज़ी मारी
रिश्ते नाते स्थितियों में खूब समझदारी धारी
भारतीय नारी सब पर भारी

नारी को सशक्त बनाने शासकीय कोशिश जारी
नारी कार्यबल पर अलोकेशन कर दो भारी
नारी शुरू कर दे भविष्य बनाने की तैयारी
भारतीय नारी सब पर भारी

*****

मेहनत का फल

रचनाकार- वेद प्रकाश दिवाकर, सक्ती

दूर पहाड़ी पर एक गांव में हर्षु और बानू नाम के दो पहाड़ी कोरवा किसान रहते थे. दोनों का पहाड़ की तलछट में एक - एक बीघा खेत था. जिसमें वे दोनों धान की फसल लगाते थे.

हर्षु बहुत ही मेहनती व ईमानदार किसान था , जबकि बानू काम - काज के प्रति लापरवाह था. बारिश का मौसम शुरू हो गया और दोनों ने ही अपने - अपने खेतों में धान की बुवाई कर दी.

दिन गुजरते गए और दोनों की खेतों में अच्छी फसल लहलहाने लगे. लेकिन कुछ ही दिनों बाद लगातार बारिश होने के कारण पहाड़ से जल की तेज धाराएं बहने लगी. बारिश रुकने का नाम नहीं ले रहा था.अतः हर्षु ने अपनी फसल को तेज बहाव से बचाने के लिए उस भारी बारिश में भी खेत के पार को दिन- रात मेहनत करके ऊंचा उठा दिया, जिससे उसकी फसल सुरक्षित हो गई.

जबकि बानू अपनी आदत के अनुरूप बारिश से बचने के लिए घर में ही छिपा रहा अतः उसकी सारी फसल पानी के तेज बहाव में बह गया. हर्षु को अपनी मेहनत के अनुरूप काफी ज्यादा उपज मिला, जबकि बानू के लापरवाही के कारण उसका सारा फसल नष्ट हो गया.

संदेश - मेहनत का फल हमेशा मीठा होता है.

*****

सुघ्घर हे घिवरा

रचनाकार- शांति लाल कश्यप, कोरबा

अन्न धन के भंडार जिहां,जुर मिल रथे बहन भाई.
उही गाँव में ममतामयी, हावय जय माँ डोकरी दाई.

घी रहीस गाय के, बरा रहीस पकवान.
जय माँ डोकरी दाई, हमर गाँव के भगवान.

दूर दूर ले मन्नत ले के, आथे सब मनखे मन.
मन्नत पूरा होलिस तिहां, कराये ल पड़थे हवन.

दू ठन वार सुघ्घर हे, मंगलवार अउ शनिवार.
हवन पूरा होये बिना, कोनो नी जाय खेती खार.

अब कहाँ ले मिलहि हिरवा, कहाँ ले मिलहि तिवरा.
घी अउ बरा सेती भईया, नाव पडीस सुघ्घर घिवरा.

सबो आथे जुर मिल, करथे जेन मेर मस्ती.
पेंड़ तो नई हे भईया, तभो ले नाव हे गस्ती.

काम करौ अइसे, नाव रहे जिन्दा.
डोकरा बबा के नाव ले पड़ीस, हमर गली गोवन्दा.

करमचारी नेता सियान के, लगे रहे जेन मेर मेला.
अपना पान भंडार रहीस, सुघ्घर पान के ठेला.

हलो हलो कहिस चोंगा, कहूँ हल्ला झन करिहा.
मनखे सिरा जाथे तभे कहिथे, गस्ती करा छेना ले चलिहा.

ये भूईयाँ के का बखान करौं, हावय ननकी नवा तरिया.
तुमन खुदे देख लव, हमर गाँव सुघ्घर हे घिवरा.

*****

साहित्य राष्ट्र की महानता

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

साहित्य राष्ट्र की महानता
और वैभव का दर्पण होता है
साहित्य को आकार देने में संस्कृति
और परंपराओं का महत्वपूर्ण रोल होता है

साहित्य का ख़जाना भारत में अनमोल है
साहित्य को जीवंतमय बनाने में
प्रिंट इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का महत्वपूर्ण रोल है
कायम रखने में हमारे पूर्वजों का विशेष रोल है

सच्चाई को लेखनी से सलाम करते हैं
उनकी लेखनी अस्त्र महत्वपूर्ण कलम है
बुराई का धागा तीव्र कलम अस्त्र से काटते हैं
लेखक कवि बुद्धिजीवी पत्रकार को सलाम है

जो साहित्य और कविताएं सामाजिक कल्याण
पर केंद्रित है वह कालजई होती है
यही कारण है रामायण और महाभारत
जैसे महाकाव्य आज भी हमें प्रेरणा देते हैं

हमारे भारत के ज्ञान भण्डार में इतनी जबरदस्त
एवं चमत्कारिक बातें छिपी हुई हैं,
हम यह सोचने पर विवश हो जाते हैं कि
विराट ज्ञान हमारे पास कहां से सवालिया निशान है

आयाजब उस प्राचीनकाल में यह जबरदस्त
ज्ञानभंडार हमारे पास था, तो अब क्यों नहीं है
यह ज्ञान कहां चला गया
सबसे बड़ा सवालिया निशान है

*****

जरूरी है

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा गब्दीवाला, बालोद

पच्चीस रुपए प्रति किलो के हिसाब से हफ्ता भर के लिए ही चावल ले आना. घर में एक दाना नहीं है. ये एक सौ पचहत्तर रुपए हैं. पैसा नहीं है जी. इतना ही है. अपनी पत्नी केकती से पैसे लेकर गोकुल प्रभात प्रोविजन स्टोर्स गया.

गोकुल चावल तौलवा रहा था. तभी उसे एक आवाज सुनाई दी. पीछे मुड़कर देखा. उसका बेटा मनीष था. वह कक्षा छठवी का छात्र था. बोला- "पापा ! मेरे लिए तीन कापी ले दो ना पच्चीस-तीस रुपए वाली. बहुत जरुरी है. सर लिवा ही लेना बोले हैं."

कुछ देर तक गोकुल चुप रहा. पिता-पुत्र के बीच कुछ कानाफूसी हुई. फिर गोकुल दुकानदार से बोला- "सेठजी ! पच्चीस रुपए वाली तीन कापी दे दो. सौ रुपए का ही चावल दे दो सेठजी." तभी मनीष बोला-"सप्ताह भर के लिए चावल भी जरूरी है पापा."

"चलाएँगे बेटा जैसे भी." मनीष अपने पापा गोकुल से लिपट गया.

*****

बिजली खंभा

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

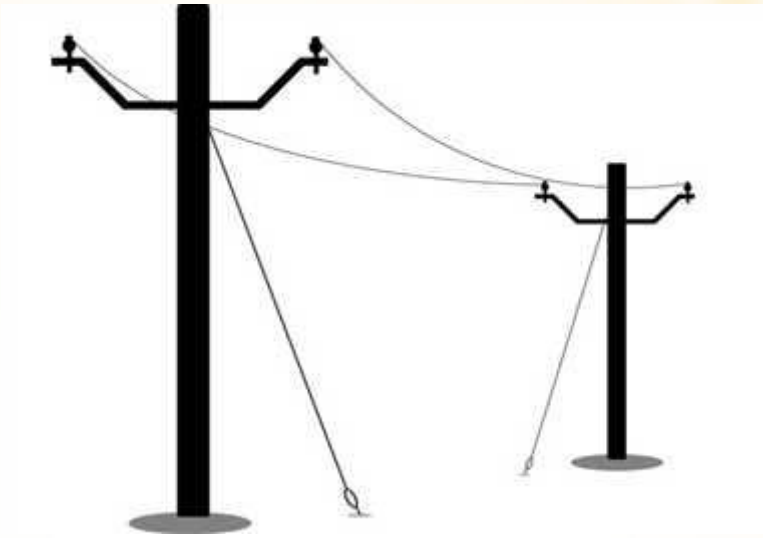

सड़क किनारे बिजली खंभे, पड़ते बच्चे लगे अचम्भे.
शहर शहर अरु गाँव गाँव में,खड़े रहे ये एक पाँव में.

वायर रहता लम्बा काला,लगता जैसे मकड़ी जाला.
घर दफ्तर बिजली पहुँचाता,काम सभी लोगों के आता.

धूप छाँव अरु गिरता पानी,देख इन्हें होती हैरानी.
पावर रखता इतना भारी,कभी न छूते नर अरु नारी.

मानव इससे नाता जोड़े,इनका पीछा कभी न छोड़े.
जीवन भर ये सेवा करते,जन जन में खुशियाँ ये भरते.

खड़े रहे ये बिना सहारे,सदा मौन गम्भीर बिचारे.
जोड़ रखे परिवार हमेशा,हमें नेक मिलता संदेशा.

*****

नशा नाश की जड़

रचनाकार- सोनल सिंह "सोनू", दुर्ग

नशा नाश की जड़ है,
नशा व्याधियों का गढ़ है.
डूबकर फिर उबर न पाये,
नशा वो दलदल है.

सिगरेट बीड़ी या शराब,
कर देती जीवन खराब.
लीवर किडनी डैमेज हो जाते,
पराश्रित बनकर ही रह जाते.

तम्बाकू को अपनाना,जैसे
मौत को गले लगाना.
कैंसर जैसा रोग है देती,
सुख चैन सब हर लेती.

कभी शौक तो कभी संगत में,
नशे को अपनाते हो .
लत लग जाती है फिर ऐसी,
चाह छोड़ नहीं पाते हो.

इससे ऐसा क्या मिलता है,
जीवन दाव लगाते हो.
अपने संग परिवार को,
गर्त में क्यों गिराते हो?

मानव तन मिला है खास,
धन का मत तुम करो नाश.
नशे से तुम दूर रहो,
जीवन से भरपूर रहो.

तन रहे स्वस्थ तुम रहो मस्त,
जीवन जियो जबरदस्त.

*****

मैं उड़ती नील गगन में

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला", बालोद

काश मेरे भी पर होते,
मैं उड़ती नील गगन में.
जी लेती सारी खुशियाँ,
दबी हुई जो अन्तर्मन में.

अठखेलियाँ सूरज दादा संग,
चँदा मामा संग हँसी-ठिठोली.
सैर सपाटे करती दिनभर,
मैं इठलाती नंदन वन में.

डाली-डाली इतराती,मँडराती
सुवासित फूलों की बगियन में.
नित तितली बन उड़ती रहती,
बगिया गूंजे भँवरों के गुंजन में.

झर-झर झरनों के संग-संग,
गुंजित होता नवगीत मन में.
सुरभित फूलों की बगिया हो,
हर्षित मन हो जन-जन में.

*****

मंजिल मिल ही जाएगी

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला", बालोद

हममें गर जज़्बा हो,
बाँछे खिल ही जाएगी.
कर गुजरने का हो जुनून,
मंजिल मिल ही जाएगी.

अरे राह में तो शूल भी
चुभेंगे कोमल पैरों में.
पर डगमग ना हो पाँव तेरे,
मुकाम मिल ही जाएगा.

डगर होगी पथरीली,कंकरीली,
न थक,न रुक,न झुक.
बढ़ाते चल कदम,
आशियाने मिल ही जाएँगे.

तूझे उड़ना है ऊँचे आसमाँ
तक,नापना है गगन.
हिम्मत जुटा,कर हौसला बुलंद,
ठिकाने मिल ही जाएँगे.

तुझे नापना है धरा,
रसातल की तह तक.
इरादें कर मजबूत लक्ष्य पर,
लक्ष्य अवश्य भेदे जाएँगे.

*****

नशा है देशप्रेम का

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला", बालोद

नशा है मुझमें देशप्रेम का
नशा है मुझमें मेरे कौम का.
नशा है मुझमें भारतीय एकता का
भारत की सौहाद्रता और अखंडता का.

नशा है मुझमें आपसी भाईचारे का
उमंग है दुश्मनों को मार गिराने का.
उन्माद है गद्दारों को देश से भगाने का
नशा है देश ख़ातिर कुछ कर दिखाने का.

नशा है मुझमें सरहद की रखवाली का
नशा है मुझमें माँ भारती के चरण धूलि का.
नशा है आततायियों को धूल चटाने का
नशा है मुझमें हाँथ से हाँथ बंटाने का.

नशा है मुझमें देश के लिए मर मिट जाने का
नशा है मुझमें शूरवीरों की गौरवगाथा गाने का.
नशा है मुझमें अमर शहीदों के समर्पण भाव का
नशा है मुझमें माँ भारती से निःस्वार्थ लगाव का.

*****

हे नौजवानों उठो,जागो

रचनाकार- महेन्द्र साहू "खलारीवाला", बालोद

हे नौजवानों उठो,जागो
अपने शौर्य को जानो तुम.
तुम ही देश के हो कर्णधार
अपनी प्रतिभा पहचानो तुम.

तुमसे ही देश समृद्ध,गुलज़ार
है तुमसे ही देश का बेड़ापार.
तुम ही देश की ताकत हो
हो तुम ही देश का आधार.

कश्मीर से कन्याकुमारी तक
हो तुम ही देश के पहरेदार.
कच्छ से कामरूप तक
हो तुम ही देश के चौकीदार.

तेरे हिम्मत से दुनिया टिकी है
हो तुम ही देश के असल कर्मवीर.
तुमसे ही देश की नींव सुदृढ़ है,
निचोड़ सकते हो पत्थर से नीर.

तुम ही कृषक उत्साही हो
तुम ही देश के सिपाही हो.
हो तुम ही देश के पालनहार
हो भाग्यविधाता,तारणहार.

*****

आजादी

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर, दुर्ग

आजादी के परब आज हे, राष्ट्रगान सब गाबो जी.
हमर तिरंगा झंडा धरके, गली गली मा जाबो जी.

भेदभाव ला छोड़ लगाबो, जय भारत के नारा जी.
लोहा के ये तन मा बहथे, देशभक्ति के धारा जी.

माटी हावय चंदन जइसे, माथा तिलक लगाबो जी.
आजादी के परब आज हे, राष्ट्रगान सब गाबो जी.

*****

यादें स्कूल की

रचनाकार- सोमेश देवांगन, कबीरधाम

ब्लैक बोर्ड चाक छोटे तकिये सा डस्टर
छात्र जीवन होता और जीवन से बेहतर
मास्टर का डंडा व मेडम जी का स्केल
स्कूल लगने से पहले और बाद का खेल
खेल खेल में लड़कियों से वो नोक झोंक
उनके खेल में करते दोस्त हम रोक टोक
टोका टोकी करने में आगे रहता मनोज
अब याद आते है वो स्कूल की बाते रोज

सुबह सवेरे ठंडी का व्यायाम प्राणायाम
प्राथना सभा का सावधान और विश्राम
सावधान विश्राम कानों में गूंजा करते है
कराग्रे वसते लक्ष्मी जुबा पे ही तो रहते है
मन हों शान्त शांतिपाठ ॐ का उच्चारण
प्रणाम करते शीश जुका ये था आचरण
आचरण विचरण कर करता नयी खोज
अब याद आते है वो स्कूल की बाते रोज

वो सायकल का कल फिर नही आना
बेग पीछे दबा गिरते स्कूल का जाना
पानी तेज गिरना मस्ती का धीरे पैडल
भीग घर लौटना और कहना जाना कल
गृहकार्य का कार्य स्कूल में ही निपटाना
कुछ सवालों घेरे में सब से उलझ जाना
हम पतले ऊपर बस्ते का वो भारी बोझ
अब याद आ ते है वो स्कूल की बाते रोज

*****

खामियाँ नहीं, खुबियाँ ढूंढो

रचनाकार- युक्ति साहू, आठवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबहार बिलासपुर

जब हम किसी पर,
एक ऊँगली उठाते है.
तो ये बाकी के तीन,
हमारी ओर जाते हैं.

अगर उसमें एक अवगुण है,
तो मुझमें है तीन.
बुराईयाँ किसी की क्यो निकालना?
मत निकालो कमी.

खामियाँ नहीं, खुबियाँ ढूंढो,
जिससे भी तुम मिलो कभी.
कमियाँ तो तुम खुद में ढूंढो,
क्या रह गई है मुझमें कमी.

दूसरों से सीखो उनकी अच्छी आदतें,

ग्रहण करो उनके गुणों को.
जितना भी सिख सको सीखो,
कमियों पर ध्यान न दो.

गुण तुम दुसरो में ढूंढो,
खुद की निकलो कमी.
कमी के गढ्ढे भरो गुणों से,
तभी तो एक दिन बनोगे गुणी.

*****

आदर्श शिक्षक

रचनाकार- गरिमा बरेठ, आठवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबहार बिलासपुर

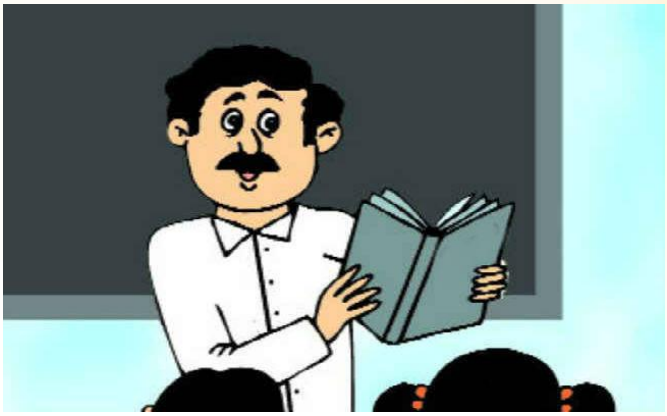

एक आदर्श शिक्षक वह होता है जिसे छात्र कभी नहीं भूलते बल्कि प्रसन्नता से याद करते हैं. एक अच्छा शिक्षक उच्च मानवीय मूल्यों वाला व्यक्ति होता है, जो शिक्षा का अच्छा ज्ञाता है और जो हमेशा सभी का भला चाहता है. एक आदर्श शिक्षक का मुख्य कार्य पढ़ाई करवाना ही होता है. छात्रों की कठिनाइयों को दूर करना एक शिक्षक के लिए सबसे महत्वपूर्ण कार्य है. एक अच्छे शिक्षक में कई गुण होते हैं जैसे - सहयोग, धैर्य, सुनना ,समझना , बोलना , बतलाना, आदि.

*****

शिक्षा

रचनाकार- गरिमा बरेठ, आठवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबहार बिलासपुर

जीवन का आधार है शिक्षा,
खुशहाली का भंडार है शिक्षा.
बहुत जरूरी होती है शिक्षा,
सारे अवगुण होती है शिक्षा.

शिक्षा जरूरी है संस्कारों की,
सभी के आदर के लिए.
चाहे जितना पढ़ लें हम,
कभी ना पूरी होती है शिक्षा.

शिक्षा से ही मिल सकता है,
सभी तरह का सम्मान.
कभी मन की पीड़ा हर ले,
कभी विश्वास मन में भर दे.

हमें तर्क- वितर्क सिखाती है शिक्षा,
हमें ईश्वर से भेट कराती है शिक्षा.
हमें सही गलत सिखाती है शिक्षा,
हमें मानवता की राह दिखाती है शिक्षा.

जीवन में नई ज्योति जगाती है शिक्षा,
सपने सारे पूरे कर दिखाती है शिक्षा.
शिक्षा से ही बन सकता है,
हमारा भारत देश महान.

*****

मेरे प्यारे पापा

रचनाकार- गरिमा बरेठ, आठवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबहार बिलासपुर

हर घर - घर में होते हैं,
जिन्हें हम पापा कहते हैं.
हमारी छोटी सी खुशी के लिए,
कुछ भी कर लेते हैं पापा.

सभी की खुशियों की,
पूरी तरह से ख्याल रखते हैं पापा.
बिना पापा के उंगलियों की,
कहां हम कुछ कर सकते हैं.

खुद तो गरीब होते हैं,
पर बच्चों को पढ़ा कर अमीर बना देते हैं.
बिखरे कभी सपने अगर,
तो एक पापा ही बिछोना है.

साथ ना हो अगर पापा का,
तो जिंदगी में सिर्फ रोना है.
मम्मी जब भी डांटे,
हमेशा पापा ही प्यार करते.

लूट जाए जिंदगी में सब कुछ,
पर पापा को नहीं खोना है.
पापा भी है हमारे,
दूसरे नंबर के गुरु.

पापा ही तो है हमारी जीवन,
पापा ही तो है हमारी शक्ति.
पापा ही तो है एक परिवार की हिम्मत,
पापा ही तो है एक उम्मीद.

पापा होते हैं बाहर से कठोर,
पर अंदर से होते हैं बिल्कुल नरम.
पापा जी तो हमारी शान है,
पापा ही तो हमारी जान है

*****

मेरा प्यारा देश

रचनाकार- गरिमा बरेठ, आठवीं, स्वामी आत्मानंद शेख गफ्फार अंग्रेजी माध्यम शाला तारबहार बिलासपुर

मेरा देश सबसे प्यारा देश,
सारे जगो से है न्यारा देश.
मेरे देश पर सारे जग को गर्व हो,
ऐसा चांद सा मेरा देश हो.

मेरे देश के ध्वज में तीन रंग तो है,
पर उनके रंग के नाम है- केसरिया,सफेद और हरा.

केसरिया रंग है देता संदेश
शक्ति और साहस का,
सफेद रंग है देता संदेश
शांति और सच्चाई का,
और हरा रंग है देता संदेश
धरती की उर्वरता, वृद्धि और शुद्धता का.

मेरा देश बने सारे जग में महान,
ऐसा बनाना है हमें देश को महान.
इस देश की एक हिस्सा में मैं भी हूं,
इसका मुझे बहुत- बहुत अभिमान है.
मानो या ना मानो,
भारत देश हमारी जान है.

*****

बर रुख

रचनाकार- सुनीता लहरे , डौंडी बालोद

बर रुख लगाएं मैं ह.
पानी रोज़ डालें मैं ह.
ओखर संग बढ़े मैं ह.
जय गंगा.

चिरई चुरगुन आके बैठतें.
खाली पेट ल अपन भरथें.
का लइका आऊ का सियान.
हमर गांव के वो हे शान.
जय गंगा.

ओकर छाव म सबों मितान.
गाथे ददरिया फागुन गान.
कुकरा बसे होगे बिहान.
जय गंगा.

बैला गाड़ी गर गर गर.
चलए पुरवइया सर सर सर.
आगे बरतिया रद रद रद.
झूमो नाचो गद गद गद.
जय गंगा.

*****

पानी बरसे

रचनाकार- प्रीतम साहू, धमतरी

धरती माँ की प्यास बुझाने,
सब जीवों में आस जगाने.

तेज हवा का झोंका आया,
संग में अपने बरखा लाया.

बादल गरजे गड़-गड़-गड़,
बिजली चमके कड़-कड़-कड़.

मेंढक करता टर्र-टर्र-टर्र,
पानी बरसे झर-झर-झर.

*****

बरखा रानी

रचनाकार- प्रीतम साहू, धमतरी

रिमझिम,रिमझिम करता आया,
बरखा रानी साथ है आया.

मिट्टी की सौंधी खुशबू से,
घर आंगन महक आया.

गड़,गड़,गड़-गड़ बादल गरजे,
कड-कड़ कड़-कड़ बिजली चमके.

पानी बिन जब धरती तरसे,
घुमड़,घुमड़ तब बादल बरसे.

*****

उमड़-घुमड़ कर बादल आया

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायण

उमड़-घुमड़ कर बादल आया
वर्षा-सुंदरी से है प्रीत लगाया
प्रणय-पिपासा बनके प्रियवर
आलिंगन को है कर फैलाया.

प्रेमातुर यह प्रीत का बाँवरा
गरज-गरज कर प्रीत जाताया
प्रीत की बारिश का अनुनय
बार-बार संदेशा भिजवाया.

वर्षा-सुंदरी मान किये है बैठी
बदरा बार-बार गुहार लगाया
गरज-गरज के मनुहार करते
वर्षा-सुंदरी इसको ठुकराया.

वर्षा कहती, मीठी नाद करो
गर्जना से जीव-जग है थर्राया
मै बरसूंगी झुम कर बरसूंगी
ये प्रीत-परिणय मुझे है भाया.

*****

जीत कर आना है

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

कर्मवीर मेहनत कर, मंजिल तक तुझे जाना है.
इस बार हार को हराकर, जीतकर तुझे आना है.

अभी तो एक बार हारा है, कुछ कमी रही होगी.
टूटा सुनहरा स्वप्न, दोनों आँखों में नमी रही होगी.
जिद्दी बन जा, जंग मैदान को छोड़कर मत भाग.
सफलता प्राप्त करने की, मन में लगी है आग.

नामुमकिन को मुमकिन, तुझे करके दिखाना है.
इस बार हार को हराकर, जीतकर तुझे आना है.

दो नावों में पैर मत रख, जलभंवर में डूब जायेगा.
फिर से तू हारा हुआ एक खिलाड़ी कहलायेगा.
लोगों के नजरों में एक मजाक बन रह जायेगा.
यदि मंजिल में जीत का परचम नहीं लहरायेगा.

कूद दो अथाह समुद्र में, तुझे मोती लेकर आना है.
इस बार हार को हराकर, जीतकर तुझे आना है.

निराश होकर बैठा है बुजदिल, खुद से रूठे हुए.
हार का मना रहा है मातम, जैसे आत्मा लूटे हुए.
उठ! जाग! आँखें खोल, विदुषी पुस्तक बुलाती है.
पढ़ो इसे, ज्ञान को बढ़ाओ, यही विजय दिलाती है.

कुछ भी हो भले, अंतिम अवसर है, लक्ष्य पाना है.
इस बार हार को हराकर, जीतकर तुझे आना है.

*****

चलो स्कूल चलें हम

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

बीत गई गर्मी की छुट्टी, अब स्कूल जाने की बारी है.
हर्षित हो रहे सभी विद्यार्थी, शिक्षा की पूर्व तैयारी है.
सब पढ़ें सब बढ़ें, सर्व शिक्षा अभियान का नारा है.
नन्हें-नन्हें फूल, चलें स्कूल, यह अधिकार हमारा है.

मिलेंगे हम सहपाठियों से, अपना हाल-चाल बतायेंगे.
कैसे बीती ये छुट्टी, ननिहाल का किस्सा हम सुनायेंगे.
शिक्षा का अधिकार के तहत, उम्र आधारित होगी प्रवेश.
निःशुल्क छात्रवृत्ति, पाठ्यपुस्तक, कापी और गणवेश.

बजेगी जब स्कूल की घंटी, दौड़े-दौड़े शिक्षार्थी आयेंगे.
राजगीत, राष्ट्रगीत और राष्ट्रगान हम मिलकर गायेंगे.
प्रार्थना में स्वच्छता की बातें, सवाल सामान्य ज्ञान का.
कालखंड में आयेंगे शिक्षक, मूल्यांकन लेंगे संज्ञान का.

दैनिक जीवन की इबारती, खेलेंगे गणितीय जादुई खेल.
गीत, कविता और कहानी से, हिन्दी और बोली का मेल.
विज्ञान से वैज्ञानिक बनेंगे, सीखेंगे भाषा अंग्रेजी विदेशी.
सामाजिक विज्ञान से अतीत, देववाणी संस्कृत स्वदेशी.

माता अन्नपूर्णा का गीत गाकर, खायेंगे मध्यान्ह भोजन.
खेल-खेल में करके सीखेंगे, प्रयास हमारा रहेगा योजन.
गृहकार्य के लिए प्रश्न लेकर, लौट आयेंगे शाम को घर.
सुबह चलो स्कूल चलें हम, जीवन प्रगति पथ की डगर.

*****

लू एक भीषण गर्मी

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

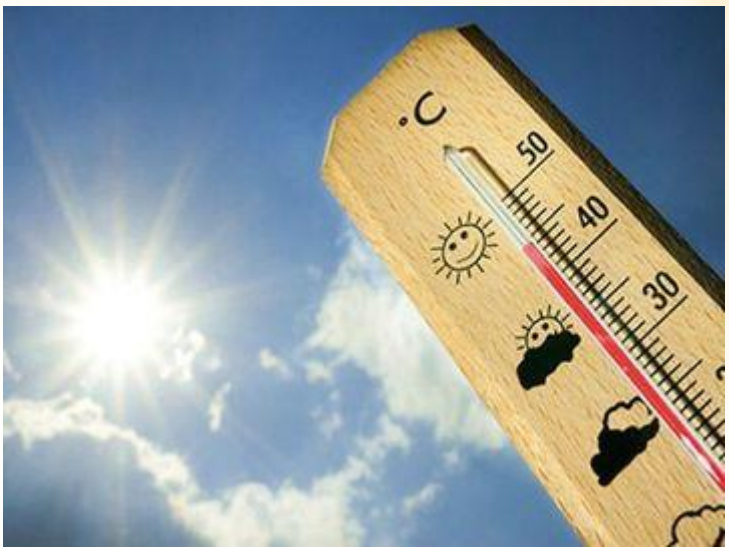

आकाश से आग बरसा रहा है सूरज.
गुस्सा शांत करो,सुन लो मेरी अरज.

झुलस रहे हैं निरीह सभी जीव-जंतु.
राहगीर हुए मूर्छित,तड़प रहे आगन्तु.

तेजपुंज से पीघल रहा है हाड़-मांस.
भूगर्भिक प्राणी की रुक रही है साँस.

सूख चुकी है नदी,चिलचिलाती धूप में.
लू बन कर आया है काल के रूप में.

गर्म हवाएँ पी लेती है बादल का पानी.
जाने कहाँ अदृश्य हो गई बरखा रानी?

प्यारी पक्षियों के घोंसले से धुआँ उड़े.
फूल और पत्तियाँ जली पेड़ों से जुड़े.

दानव बन बैठा है जंगल की दावानल.
निगल रहा जीवधारियों को पल-पल.

पहियों के टायर में विस्फोट हुआ बम.
गगन में उड़े मानव,आवाज आई धम.

जख्मी पड़ा सपाट सड़क दर्द में परेशान.
डामर की चमड़ी अब जा रही शमशान.

धरती माँ आँचल पसार माँग रही वरदान.
हे प्रभु! अब तो पानी बरसा दो भगवान.

*****

समय अमर है

रचनाकार- कु. भावना नवरंग, 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा, मुंगेली

रुको, उस जगह, जहाँ चलना ना पड़े.
रुको मत, उस जगह, जहाँ चलना पड़े.
ये समय कभी भी खत्म नहीं होता है.
वैसे ही जिंदगी कभी खत्म नहीं होती है.
यह समय की अवधारणा है.
कोई आता है, तो कोई जाता है?
समय कभी खत्म नहीं होता है.
ना कोई रोक सकता है.
ना कोई खत्म कर सकता है.
समय अमर है.

*****

सड़क की फिसलन

रचनाकार- कु. भावना नवरंग, 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा, मुंगेली

एक बार की बात है कि, एक गाँव में एक दुर्घटना हुई थी. उस दुर्घटना में एक मोहन नाम का व्यक्ति मर गया था. जिस सड़क में मोहन मरा था, उस सड़क में बहुत दुर्घटनाएँ होने लगी थी. गाँव वाले बार-बार दुर्घटना होने के कारण डर गए थे. सब लोगों के मन में यही बात आ रही थी कि मोहन की आत्मा बार-बार दुर्घटना करा रहा है. उस सड़क में लोग आना-जाना बंद कर दिए थे. कई महीनों के बाद एक इंसान बड़ी दूर से आया. वह इंसान उसी सड़क में चला गया जिस सड़क में दुर्घटना होती है. दुर्भाग्य से उस सड़क में इंसान की मौत नहीं हुई. अगली सुबह गाँव वालों को पता चला तो एक गाँव वाले ने इंसान से कहा- 'रास्ते में तुम्हारे साथ कुछ भी नहीं हुआ था क्या?' इंसान को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था. उस इंसान को सब कुछ बताया गया. इंसान को थोड़ा डर लगा. इंसान ने जाँच-पड़ताल किया तो पता चला कि वह आत्मा नहीं था. बाद में पता चला कि उस सड़क को ऐसा बनाया गया था कि वहाँ पर फिसलन हो गई थी. यह बात गाँव वालों को पता चला तो, एक दूसरे से चर्चा की और एक दूसरे को बताये. लोगों ने फैसला लिया कि उस सड़क को नया बनवाने के बाद ही लोगों के आने-जाने के लिए खोला जाए. गाँव वालों ने उस इंसान को धन्यवाद दिया. अब सभी गाँव वाले खुशी-खुशी रहने लगे.

*****

खान-पान

रचनाकार- अनिता चन्द्राकर, दुर्ग

खान-पान के राखव ध्यान.
गुण-अवगुण जेवन के जान.
कहिथे आयुर्वेद महान.
भाजी सेहत बर वरदान.

घर के सादा जेवन खाव.
तन मन दूनों पोठ बनाव.
दूध दही के कर लव भोग.
दुरिहा रहिथे कतको रोग.

माँस हमर बर हे नुकसान.
बात जरूरी हावय मान.
सबले बढ़िया शाकाहार.
छोड़व संगी माँसाहार.

*****

आगे बरखा रानी

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

करिया करिया बादर लेके,आगे बरखा रानी.
रिम झिम, रिम झिम बरसत हावै, अड़बड़ सुघ्घर पानी.

पुलकत हावै मेघराज हा, ढोलक खूब बजावै.
अगास के छुरछुरी मा,आँखी हा चौंधियावै.

भिन्दोल हा तरिया पार मा, गावत हावै गाना.
झींगुर अउ किरवा मन हा छेड़त हे तराना.

सुर ताल मा गीत सुनावै,अंगना मा खपरा छानी.
करिया-करिया बादर लेके आगे बरखा रानी.

*****

नया भारत

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी, महाराष्ट्र

भारत नवाचारों का उपयोग करके
ऐसी तकनीकी विकसित करता है
जनता के लिए सस्ती सुगम सहजता लाए
ऐसा नवाचार विज्ञान नए भारत में लाता है

उन्नत भारत अभियान में नवाचार भाता है
उन्नत ग्राम उन्नत शहर में विज्ञान लाकर
नमामि गंगे का अभियान चलाना है
नवाचार हरआदमी के जीवन में सहजता लाता है

रचनात्मक नवाचार से जुड़ा विज्ञान
आम आदमीके जीवन में सहजता लाता है
डिजिटल भारत मेक इन इंडिया
जैसी थीम जनहित में लाता है

भारत वैज्ञानिक दृष्टिकोण के फलक को
विकसित करने नए आयाम बनाता है
सतत विकास और नए तकनीकी नवाचारों
के माध्यम के साथ उन्नति दिखाता है

*****

बल तेरे कितने रूप

रचनाकार- शशिबाला श्रीवास्तव, उत्तर प्रदेश

आज अतुल के गांव में गुड़िया का त्यौहार मनाया जाना था. यह त्यौहार सावन के महीने में पंचमी तिथि को जिसे नागपंचमी भी कहते हैं, हर साल मनाया जाता है.

अतुल के गांव में इस दिन आम या नीम के बड़े पेड़ की मोटी शाखा पर झूला डाला जाता है. अतुल के बाबा झूला डाल रहे थे. अतुल के बाबा और चाचा ने एक बड़े से पटरे को रस्से से खींच -खींच कर कसकर बांधा. अतुल भी उनकी मदद करने लगा,तब चाचा ने कहा' अतुल थोड़ा और बल लगाओ.' अतुल को याद आया कि कल उसके मास्टर जी ने विज्ञान में बल वाला पाठ पढ़ाया था . अतुल ने पूछा चाचा बल कैसे लगाया जाता है,तो चाचा ने कहा 'अरे पगले ! जो हम लोग मोटी रस्सी खींच रहे थे यह बल ही तो लगा रहे थे.'बल वह धक्का या खिंचाव है जो एक व्यक्ति या वस्तु द्वारा दूसरे व्यक्ति या वस्तु पर लगाया जाता है. बल कम या ज्यादा भी होता है. यह मात्रा पर निर्भर करता है,जैसे पहले जब तुम खाली बाल्टी लाए थे,तो तुम्हें हल्की लगी थी लेकिन जब पानी भरकर ले गए तो वही बाल्टी भारी लगने लगी. यही नहीं बल में मात्रा के साथ-साथ दिशा भी होती है .जिस दिशा में हम बल लगाते हैं उसी दिशा में बल लगता है जैसे अभी तुमने इस पटरे को खिसका कर पूरब दिशा में रखा. तुम चाहो तो इसे उत्तर या दक्षिण किसी भी दिशा में खिसका कर रख सकते हो. अतुल को चाचा द्वारा दी गई जानकारी बहुत अच्छी लग रही थी .उसने चाचा से पूछा चाचा क्या बल हमेशा एक जैसा लगता है ?तो चाचा ने कहा कि यदि एक जैसा बल हो तो भी यदि संपर्क तल का क्षेत्रफल कम होता है तो बल का

प्रभाव बढ़ जाता है, आओ मैं तुम्हें इस तरह से समझाता हूं. यह जो बालू पड़ी है इस बालू के ऊपर एक पड़ी ईट रखो, फिर उसी को खड़ी रखो. अतुल ने दोनों तरह से रखा तो उसने देखा कि पड़ी ईंट इतनी ज्यादा नहीं धंसी जितनी ज्यादा खड़ी बालू में धंसी थी. चाचा ने कहा अब तो तुम्हें समझ में आ ही गया होगा कि पहले जब तुमने ईंट रखी थी तब उसका संपर्क तल का क्षेत्रफल ज्यादा था फिर खड़ी वाली स्थिति में उसके संपर्क का क्षेत्रफल कम हो गया. जब संपर्क तल का क्षेत्रफल कम होता है तो बल ज्यादा लगता है.क्या तुम जानते हो बल कितने प्रकार का होता है? अतुल के ना कहने पर चाचा ने कहा हम लोगों ने मिलकर रस्सा हाथों से खींच खींच कर बांधा था. हमारे हाथ में मांस पेशियां होती हैं . इन्हीं मांसपेशियों के द्वारा बल लगाया जाता है इसलिए इस बल को हम पेशीय बल कहते हैं. चाचा उसको बता ही रहे थे अचानक आम के पेड़ से एक आम नीचे गिर पड़ा तो चाचा ने कहा देखो यह भी एक प्रकार का बल है पेड़ से आम नीचे ही गिरा वास्तव में हमारी पृथ्वी भी एक प्रकार का बल लगाती है जिसे गुरुत्व बल कहते हैं .इसी बल के कारण कोई भी चीज नीचे गिर जाती है . इसी तरह जब तुम गेंद ऊपर फेंकते हो तो वह नीचे ही आती है ऊपर नहीं जाती. थोड़ी देर में मम्मी के बुलाने पर अतुल और उसके चाचा घर के अंदर आ गए घर में अतुल ने मम्मी का कंघा लिया और उससे बाल ठीक करने लगा तब चाचा ने कहा था आओ मैं तुम्हें एक खेल दिखाता हूं उन्होंने कंघे को अपने सिर से रगड़ा और छोटी-छोटी भूसी के के पास ले गए तो कुछ तिनके कंघे में चिपक गए, उनको दिखाते हुए चाचा जी ने कहा देखो अतुल यहां भी एक प्रकार का बल काम कर रहा है जिसे विद्युत बल कहते हैं. जब हम कंघे को अपने बालों में रगड़ते हैं तो एक प्रकार का आवेश उत्पन्न हो जाता है. यह तिनकों को अपनी तरफ खींच लेता है. फिर वह चुंबक ले आए.उन्होंने चुंबक दिखाते हुए कहा यह देखो यह चुंबक है यह लोहे की कीलों को अपनी ओर खींच लेता है. चुंबक के द्वारा लगने वाले इस बल को चुंबकीय बल कहते हैं.

अतुल की दादी पूजा करने बैठी अगरबत्ती जलाने के लिए उन्होंने माचिस की तीली को खींचा वह जल उठी . अतुल माचिस उठा लाया और तीली जलाने लगा. यह देखकर चाचा ने कहा यहां भी एक प्रकार का बल काम करता है जिसे हम घर्षण बल कहते हैं तुमने देखा होगा कि जब तुम तीली को माचिस से घिसते हो तब यह जलने लगती है. घर्षण बल एक दूसरे पर सरकती हुई चीजों की गति का विरोध करता है. जब हम चिकनी फर्श पर चलते हैं तो हम गिर पड़ते हैं,क्योंकि उस समय हमारे पैरों और जमीन के बीच

का घर्षण बल कम हो जाता है. चाचा ने अपनी मोटरसाइकिल दिखाते हुए कहा इस मोटरसाइकिल के पहिए को गौर से देखो इसमें बने खांचे जमीन और पहिए के बीच लगने वाले घर्षण बल को बढ़ा देते हैं जिसकी वजह से पहिया फिसलता नहीं है. अतुल ने कहा चाचा यह बल तो बहुत काम की चीज है .बल के द्वारा हम किसी सामान को एक जगह से दूसरी जगह रख सकते हैं. चाचा ने कहा हां बल के द्वारा हम किसी वस्तु के आकार को भी बदल सकते हैं. बल के द्वारा किसी वस्तु की चाल को भी कम या ज्यादा किया जा सकता है,या किसी दिशा में मोड़ा जा सकता है. जब तुम क्रिकेट खेलते हो तो बैट के द्वारा गेंद पर बल लगाकर उसे किसी भी दिशा में भेज सकते हो.

अतुल ने कहा चाचा जी क्या किसी चीज पर एक से ज्यादा भी बल काम करते हैं तो चाचा ने कहा हम लोग जब साइकिल चलाते हैं तो हमारे सामने आने वाली हवा हमें पीछे धकेलती हैऔर हम पैडिल के द्वारा बल लगाकर साइकिल को आगे बढ़ाते हैं . एक उड़ते हुए हवाई जहाज को दिखाते हुए चाचा ने कहा देखो इस हवाई जहाज पर एक साथ कई बल काम कर रहे हैं इसका इंजन पंखों को ऊपर उठाने का काम करता है और आगे बढ़ाने का काम करता है . हवा इसको पीछे धकेलने का काम करती है और हमारी पृथ्वी अपने गुरुत्व बल के द्वारा इसे नीचे खींचने का प्रयास करती है.

अतुल जो कि बहुत ध्यान से चाचा की बातों को सुन रहा था उसने कहा आज मुझे पता चला बल के कितने रूप हैं. अब यह जानकारी में अपने दोस्तों को भी बताऊंगा. बहुत अच्छे ! यह कहकर चाचा हंसने लगे.

*****

तीर्थयात्रा

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

धार्मिक तीर्थ स्थल भी लोगों के लिए प्रेरणा और प्रेरणा का स्रोत हो सकते हैं, जो इन अनुभवों से दूर आकर आध्यात्मिक संतुष्टि और दूसरों के साथ संतुष्टि की भावना महसूस कर सकते हैं. इससे विभिन्न संस्कृतियों और पृष्ठभूमि के लोगों के बीच एकता और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है, जो एक समान विश्वास या मूल्यों का समूह साझा कर सकते हैं. कुल मिलाकर, धार्मिक तीर्थ स्थल पर्यटन को बढ़ावा देने, अंतर-सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने और आध्यात्मिक विकास और समुदाय-निर्माण के अवसर पैदा करके क्षेत्रीय और सांस्कृतिक संबंधों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं. भारत बड़ी संख्या में धार्मिक तीर्थ स्थलों का घर है, जहां हर साल लाखों लोग आते हैं.

तीर्थयात्रा एक समग्र अनुभव है जो भगवान से भी उतना ही जुड़ा है जितना पर्यावरण से. पर्यावरण का व्यक्त रूप पेड़-पौधे, सुरम्य उपत्यकाएँ और गगनचुम्बी पर्वत मालाएँ, उद्दाम वेग से बहती नदियाँ और निर्झर, वनों में क्रीड़ा करते जीवजन्तु, पशु-पक्षी, उन्मुक्त आकाश, तन-मन को सहलाती शीतल वायु, सभी तो उस परम शक्ति की महिमा को प्रकट करते हैं! क्या हम भगवान के निवास की कल्पना किसी ऐसी जगह कर सकते हैं जहाँ की भूमि प्राकृतिक शोभा से हीन हो, जहाँ कोई नदी या निर्झर न बहता हो, जहाँ कोई वृक्ष-लताएं और फूल न हों और सुबह-सुबह चहकते पक्षियों की आवाज कानों में न पड़े?

धार्मिक तीर्थ स्थलों में क्षेत्रीय और सांस्कृतिक संबंध बनाने की क्षमता होती है. ऐसा इसलिए है क्योंकि ये स्थल अक्सर दुनिया के विभिन्न हिस्सों से बड़ी संख्या में लोगों को आकर्षित करते हैं, जो धार्मिक प्रथाओं और अनुष्ठानों में शामिल होने के लिए एक साथ आते हैं. इससे विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को एक-दूसरे के साथ बातचीत करने और एक-दूसरे की परंपराओं, विश्वासों और जीवन के तरीकों के बारे में जानने का अवसर मिलता है. धार्मिक तीर्थ स्थल भी क्षेत्रीय पर्यटन को बढ़ावा देने में मदद कर सकते हैं, क्योंकि दुनिया के विभिन्न हिस्सों से लोग इन स्थलों को देखने और आसपास के क्षेत्रों का पता लगाने के लिए आते हैं. इससे स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और विशेषकर आतिथ्य और पर्यटन क्षेत्रों में नौकरियां पैदा करने में मदद मिल सकती है.

इसके अलावा, धार्मिक तीर्थ स्थल भी लोगों के लिए प्रेरणा और प्रेरणा का स्रोत हो सकते हैं, जो इन अनुभवों से दूर आकर आध्यात्मिक संतुष्टि और दूसरों के साथ संतुष्टि की भावना महसूस कर सकते हैं. इससे विभिन्न संस्कृतियों और पृष्ठभूमि के लोगों के बीच एकता और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है, जो एक समान विश्वास या मूल्यों का समूह साझा कर सकते हैं. कुल मिलाकर, धार्मिक तीर्थ स्थल पर्यटन को बढ़ावा देने, अंतर-सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देने और आध्यात्मिक विकास और समुदाय-निर्माण के अवसर पैदा करके क्षेत्रीय और सांस्कृतिक संबंधों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं. भारत बड़ी संख्या में धार्मिक तीर्थ स्थलों का घर है, जहां हर साल लाखों लोग आते हैं. वाराणसी, जिसे काशी के नाम से भी जाना जाता है, दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक है और इसे हिंदू धर्म में एक पवित्र शहर माना जाता है. यह गंगा नदी के तट पर स्थित है और हर साल लाखों लोग यहां आते हैं.

हरिद्वार भारत का एक और पवित्र शहर है, जो उत्तरी राज्य उत्तराखंड में स्थित है. यह हिंदू धर्म के सात सबसे पवित्र स्थानों में से एक है और अपने मंदिरों और घाटों (नदी तक जाने वाली सीढ़ियाँ) के लिए जाना जाता है. अमृतसर पंजाब के उत्तरी राज्य में एक शहर है और यह स्वर्ण मंदिर का स्थान है, जो दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित सिख मंदिरों में से एक है. तिरूपति दक्षिणी राज्य आंध्र प्रदेश में एक शहर है और यहां श्री वेंकटेश्वर मंदिर है, जो भारत में सबसे अधिक देखे जाने वाले तीर्थ स्थलों में से एक है. बोधगया बिहार के पूर्वी राज्य में एक छोटा सा शहर है और कहा जाता है कि यहीं पर गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ था. ऋषिकेश उत्तरी राज्य उत्तराखंड में एक शहर है और यह अपने मंदिरों और

आश्रमों के साथ-साथ योग और ध्यान से जुड़े होने के लिए भी जाना जाता है. शिरडी महाराष्ट्र के पश्चिमी राज्य में एक शहर है और यह शिरडी साईं बाबा मंदिर का घर है, जो साईं बाबा के भक्तों के लिए एक प्रमुख तीर्थ स्थल है. ये भारत के कई तीर्थ स्थलों के कुछ उदाहरण हैं, जो दुनिया भर से उन लोगों को आकर्षित करते हैं जो आध्यात्मिक सांत्वना और सांस्कृतिक विसर्जन चाहते हैं.

तीर्थ स्थलों को अक्सर बड़ी संख्या में आकर्षित होने वाले आगंतुकों का समर्थन करने के लिए व्यापक बुनियादी ढांचे की आवश्यकता होती है. सरकारें और निजी निवेशक आसपास के क्षेत्रों में बुनियादी ढांचे के विकास, जैसे परिवहन, आतिथ्य और मनोरंजन सुविधाओं में निवेश करने के लिए इस मांग का लाभ उठा सकते हैं. तीर्थ स्थलों को पर्यटन स्थलों के रूप में प्रचारित किया जा सकता है, जो न केवल धार्मिक उद्देश्यों के लिए बल्कि अवकाश और मनोरंजन के लिए भी आगंतुकों को आकर्षित कर सकते हैं. इससे रोजगार के अवसर पैदा हो सकते हैं और स्थानीय अर्थव्यवस्था के लिए राजस्व उत्पन्न हो सकता है. तीर्थ स्थल विभिन्न क्षेत्रों और संस्कृतियों के लोगों को आकर्षित करते हैं, जिससे सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सहयोग का अवसर मिलता है. इससे सांस्कृतिक पर्यटन का विकास और क्षेत्रीय विविधता और सहयोग को बढ़ावा मिल सकता है.

तीर्थ स्थल अक्सर सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व से जुड़े होते हैं, जिसका लाभ विरासत के संरक्षण को बढ़ावा देने और इतिहास और संस्कृति में रुचि रखने वाले आगंतुकों को आकर्षित करने के लिए उठाया जा सकता है. तीर्थ स्थलों का उपयोग शैक्षिक और अनुसंधान उद्देश्यों के लिए भी किया जा सकता है, जिससे विद्वानों और शोधकर्ताओं को स्थलों से जुड़े इतिहास, संस्कृति और धर्म का अध्ययन करने का अवसर मिलता है. धार्मिक पर्यटन में सांस्कृतिक संबंधों और क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा देने की काफी संभावनाएं हैं. इसका लाभ उठाने से आर्थिक विकास, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और क्षेत्रीय सहयोग, स्थायी पर्यटन को बढ़ावा देने और विरासत को संरक्षित करने के अवसर पैदा हो सकते हैं.

एक बात जो सबसे अधिक खटकती है कि तीर्थ यात्रा या पर्यटन पर्यावरण पर निर्भर करता है उसके लिए यह आवश्यक है कि प्राकृतिक मूल्यों का संरक्षण किया जाय और तीर्थ का पूरा स्वरूप प्राकृतिक विशेषताओं और परम्पराओं से मेल खाए. किन्तु आज

विकास के नाम पर दुकानों, होटलों और नए तरह के निर्माणों की चल पड़ी है. पहले धर्मशालाओं या पांथशालाओं का रिवाज था. अब पांच सितारा होटलों की सुविधाएं मुहय्या की जाने लगी हैं जहाँ भोग-विलास और सुख-सुविधा के सारे सामान मिलते है. स्थानीय पंडे-पुजारियों, व्यवसायियों यहाँ तक कि साधु-संन्यासियों की धन लिप्सा के कारण तीर्थों का स्वरूप बदल रहा है. व्यवसायी अवैध निर्माण कर कंक्रीट का जंगल उगाने में व्यस्त रहते हैं. पंडे-पुजारी और साधु-सन्यासी धर्म और आश्रमों के नाम पर पैर पसारते जाते हैं. वे धर्म और व्यवसाय एक साथ चलाने पर उतारू हैं. फलतः आश्रम फैलते जा रहे हैं और अवैध कब्जे हो रहे हैं.

*****

सावन सुन्दरी

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

सतरंगी रंग म नहाके निकले,
अपसरा के आँखी चमके मोती.
दौना पान जईसे ममहावय देंह,
चंदा के अंजोर बगरे सबो कोती.

हरियर-हरियर लुगरा पहिने,
झूलना, झूलत हें फूलवारी.
अंग म सोलह सिंगार करके,
नाचत आवत हें सावन सुन्दरी.

कोनों गावैं मया-पिरीत के गीत,
कोनों करैं खूब हँसी-ठिठोली.
मन सुआ होगे बईहा रे संगी,
सुनके ऊँखर मैना कस बोली.

माई लोगिन के सुघरई ल देख,
मूर्छा हो जाथे करिया बादर.
पहिन-ओढ़ के आवैंय जम्मों,
छत्तीसगढ़ माता के रूप ल धर.

बिधुन होके खेलथें कई खेल,
कई हारथें, कई अऊवल आथें.
सुन्दरी, पाथे सम्मान अऊ ईनाम,
मुकूट पहिनके, रानी बन जाथें.

*****

डिजिटल इंडिया का इंटरनेट उत्सव

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर जिस तेजीके साथ इंटरनेट कनेक्टिविटी से डिजिटलाइजेशन बढ़ रहा है और अविश्वसनीय उपलब्धियां प्राप्त हो रही है वह हैरतअंगेज है. हमारी पिछली पीढ़ियों, बुरे बुजुर्गों ने सोचा भी नहीं होगा कि कभी इंटरनेट सुविधा ज्ञान को साझा करने का एकअनिवार्य उपकरण के रूप में इस हद तक उभरेगा. आज इंटरनेट से केवल घर ही नहीं सात समंदर पार अपने परिवारों दोस्तों रिश्तेदारों व्यवसायियों से फेस टू फेस घंटों बात कर सकते हैं. अनेकों पक्ष मिलकर एक साथ वार्तालाप कर सकते हैं यह तो केवल अपने आम नागरिकों की बात हुई परंतु आज के युग में हर व्यक्ति के जीवन की जीवनशैली मानों वर्चुअल इंटरनेट कनेक्टिविटी के साथ जुड़ गई है. आज हम हजारों मील दूर पर भी वर्चुअल उपस्थित होकर अपनी उपस्थिति दर्ज करा सकते हैं, जिसका सबसे बड़ा उदाहरण आज वैश्विक मंचों का वर्चुअल आयोजन होना है, जिसमें हमारे पीएम से लेकर अमेरिकन राष्ट्रपति, एशिया और यूरोपीयन स्टेट्स से लेकर नाटो तक वर्चुअल सभाएं होती है. चूंकि शुक्रवार दिनांक 7 जुलाई 2023 को भारत में इंटरनेट की शक्ति का जश्न मनाने के लिए भारत इंटरनेट उत्सव लांच किया गया है,इसलिए आज हम मीडिया और पीआईबी में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल के माध्यम से चर्चा करेंगे, इंटरनेट कनेक्टिविटी ज्ञान को साझा करने के एक अनिवार्य उपकरण के रूप में उभरा है, नागरिकों के लिए किफायती और उच्च गुणवत्ता वाला इंटरनेट सुनिश्चित करने को रेखांकित करना ज़रूरी है.

हम इंटरनेट की शक्ति का जश्न मनानेडिजिटल भारत का इंटरनेट उत्सव मनाने को देखें तोइंटरनेट की परिवर्तनकारी भूमिका को अपनाने के लिए डीओटी मायगोव के सहयोग

से भारत इंटरनेट उत्सव मना रहें है, जिसमें नागरिक किसी भी सोशल मीडिया हैंडल पर 2 मिनट तक अपने वीडियो साझा कर सकते हैं कि इंटरनेट ने लोगों के जीवन को कैसे बदल दिया है.भारत इंटरनेट उत्सव या ड्राइव लिंक में अपलोड करें, और उसी लिंक को मायगोव पर सबमिट किया जा सकता है. सर्वश्रेष्ठ कहानियों को 15,000 रुपये तक के पुरस्कार दिए जाएंगे.प्रतियोगिता मायगोव पर 07.07.2023 से 21.08.2023 तक आयोजित की जाएगी. डीओटी त्वरित समावेशी सामाजिक आर्थिक विकास के लिए कभी भी,कहीं भी सुरक्षित, विश्वसनीय, सस्ती और उच्च गुणवत्ता वाली एकीकृत दूरसंचार सेवाएं सुनिश्चित करने के लिए लगातार काम कर रहा है. इंटरनेट कनेक्टिविटी, ज्ञान को साझा करने और सामाजिक आर्थिक विकास के लिए एक अनिवार्य उपकरण के रूप में उभरा है. दूरसंचार विभाग (डीओटी) नेयूनिवर्सल सर्विस ऑब्लिगेशन फंड (यूएसओएफ) के माध्यम से देश के विभिन्न हिस्सों विशेषकर दूरदराज और व्यावसायिक रूप से अव्यावहारिक क्षेत्रों मेंनागरिकों के लिए किफायती और उच्च गुणवत्ता वाला इंटरनेट सुनिश्चित करने के लिए कई कदम उठाए हैं.विभिन्न प्रकार के प्रक्रियात्मक, संरचनात्मक और कानूनी सुधार किए गए, जिससे तेजी से रोल आउट हुआ. परिणामस्वरूप नौ महीनों में लगभग एक साइट प्रति मिनट की दर से 2.7 लाख से अधिक 5जी साइटें स्थापित हुई, जिससे भारत दुनिया के शीर्ष तीन 5जी पारिस्थितिकी तंत्रों में से एक बन गया. इंटरनेट की किफायती पहुंच को सक्षम करने के लिए डेटा की लागत लगभग 10 रुपये/जीबी तक कम कर दी गई है.मानवीय कहानियों में दूसरों को प्रेरित करने और सशक्त बनाने की शक्ति है जिससे लोग डिजिटल तकनीक को अपनाने और अपने जीवन में इसी तरह के बदलाव लाने में सक्षम हो सकें. ऐसी कहानियाँ हमें दिखाती हैं कि इंटरनेट ने कैसे अविश्वसनीय तरीके से हमारे देश के विभिन्न हिस्सों में रहने वाले लोगों के जीवन को बेहतर बनाया है.

हम दुनियां में तेजी से बढ़ते इंटरनेट के प्रयोग से डिजिटल सेक्टर में एक नईक्रांति को देखें तोइसका प्रभाव व्यापार तथा उसके मार्केटिंग के तरीके पर भी पड़ा है. दरअसल आज कंपनियां मार्केटिंग के पुराने तरीकों के बजाए डिजिटल मार्केटिंग में ज्यादा पैसे इन्वेस्ट कर रही हैं. डिजिटल मार्केटिंग में इस वक्त लगातार ग्रोथ हो रही है और आने वाले समय में इसका बाजार 25 से 30 फीसदी की दर से ग्रोथ कर सकता है. विभिन्न रिपोर्ट्स के मुताबिक वर्तमान समय में डिजिटल मार्केटिंग का बाजार तकरीबन 430 बिलियन डॉलर का है और 2027 तक यह 700 बिलियन डॉलर तक पहुंच सकता है.

डिजिटल मार्केटिंग के बढ़ते ट्रेंड के साथ अब कंपनियां भी अपने उत्पादों के प्रचार के लिए बड़ी संख्या में डिजिटल मार्केटिंग एक्सपर्ट्स को हायर कर रही हैं. हम इंटरनेट की सहायता से डिजिटल मार्केटिंग को देखें तो, मार्केटिंग के पारंपरिक तरीकों की तुलना में डिजिटल मार्केटिंग ना सिर्फ सस्ता है, बल्कि यह उनसे ज्यादा कारगर भी है. दरअसल इसके जरिए हमअपने टारगेट कस्टमर्स तक विज्ञापनों को पहुंचा सकते हैं, जब कि ट्रेडिशनल मार्केटिंग में ऐसा बेहद मुश्किल है. साथ ही इसमें हम जरूरत के मुताबिक आसानी से अपने कैंपेन में बदलाव भी कर सकते हैं. डिजिटल मार्केटिंग में कन्वर्शन रेट अच्छा होता है. इसके अलावा यह कम समय में एक ही वस्तु के कई प्रकार दिखा सकता है और उपभोक्ता को जो पसंद है, वे तुरंत उसे ले सकते हैं.

हम इंटरनेट की तुलना दूसरे देशों और स्पीड टेस्ट ग्लोबल इंडेक्स 2023 को देखें तो हमें काफी मेहनत करने की जरूरत है क्योंकि, कंटेंट डिलीवरी नेटवर्क सर्विसप्रोवाइडर अकामाई की स्टेट ऑफ़ द इंटरनेट - कनेक्टिविटी' रिपोर्ट ने भारत की इंटरनेट की स्पीड को बहुत कम आंका है. रिपोर्ट के मुताबिक़, एशिया-प्रशांत क्षेत्र में भारत और फिलिपींस ऐसे देश हैं जो 4 एमबीपीएस के बेसिक स्टैंडर्ड तक नहीं पहुँच पाए हैं. ये दोनों देश 3.5 एमबीपीएस ब्रॉडबैंड की औसत स्पीड के साथ फ़ेहरिस्त में सबसे नीचे 114 वें पायदान पर हैं. इस रिपोर्ट के मुताबिक दुनियां में सबसे बेहतरीन इंटरनेट वाला देश दक्षिण कोरिया है, जहां औसत स्पीड 29 एमबीपीएस है.इंटरनेट की पीक स्पीड की बात करें तो बाज़ी मारी है सिंगापुर ने, जहां हमको किसी ख़ास समय में इंटरनेट 146.9 एमबीपीएसकी रफ़्तार से भागता मिल सकता है. दक्षिण कोरिया पीक स्पीड के मामले में चौथे नंबर पर है,जहां ये स्पीड 103.6एमबीपीएस है.इंटरनेट की पीक स्पीड की बात करें, तो भारत 25.5 एमबीपीएस के साथ एक बार फिर सूची में बिल्कुल नीचे नज़र आता है. इस फ़ेहरिस्त में वो 104 वें पायदान पर है, जबकि फिलिपींस 29.9 एमबीपीएसके साथ उससे कहीं ऊपर 88 वें स्थान पर है.दुनियां में सबसे तेज़ औसत मोबाइल कनेक्शन स्पीड हमको ब्रिटेन में मिलेगी जो 27 एमबीपीएस है. जबकि भारत में में औसत मोबाइल कनेक्शन स्पीड 3.2 एमबीपीएस है.ऐसेमें जबतक इंटरनेट की पहुंच और रफ़्तार बढ़ाने से जुड़ा इंफ़्रास्ट्रक्चर मज़बूत नहीं बनाया जाता, कैशलेस या लेस कैश दूर की कौड़ी लगती है. और फिर बुज़ुर्ग, विकलांग और शिक्षितअर्धशिक्षित जनता को मोबाइल टेक्नॉलॉजी का इस्तेमाल करने लायक बनाना मामूली चुनौती नहीं है. ऊकला की एक रिपोर्ट के अनुसार, भारत स्पीडटेस्ट ग्लोबल इंडेक्स पर मार्च में 64वें स्थान पर था,

लेकिन अब अप्रैल में 60वें स्थान पर पहुंच गया है. रिपोर्ट के अनुसार, अप्रैल, 2023 में भारत की मोबाइल डेटा स्पीड में 115 प्रतिशत की वृद्धि हुई. ऊकला ने अप्रैल में 36.35 एमबीपीएस की औसत मोबाइल डाउनलोड स्पीड के साथ प्रोग्रेस दर्ज की है. इसकी तुलना अगर मार्च से की जाए तो मार्च में औसत मोबाइल डाउनलोड स्पीड 33.30 एमबीपीएसथी. ऊकला का स्पीडटेस्ट ग्लोबल इंडेक्स मासिक के आधार पर दुनियां भर में मोबाइल और फिक्स्ड ब्रॉडबैंड स्पीड को रैंक करता है. इसका पता हर महीने स्पीडटेस्ट का इस्तेमाल करके वास्तविक लोगों पर की गई टेस्टिंग से चलता है. सबसे तेज़ औसत मोबाइल इंटरनेट स्पीड वाले देश 2023. अप्रैल 2023 तक, कतर के पास दुनियां भर में सबसे तेज़ औसत मोबाइल इंटरनेट कनेक्शन था, लगभग 190 एमबीपीएस. संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) और मकाऊ इसके बाद आए, इनमें से प्रत्येक देश में औसत औसत गति 170एमबीपीएस से ऊपर दर्ज की गई.

*****

पहली बारिश

रचनाकार- मानशी निषाद, 8वी

आसमान में बादल घिर आई है.
पहली बारिश ने मिट्टी महकाई है.

रिमझिम बूंदों की फुहार से.
अकुलाए मन अब बहार हुई.
कुंभलाए फूलों ने हंसकर,
बरखा से मन - आभार हुई.

चाहत के बीज अंकुरित हों आई है.
पहली बारिश ने मिट्टी महकाई है.

घोर ग्रीष्म से जग को छुड़ाने
मेघ मलंग उड़ आया है .
शीतल हवाओं संग बादल
आसमान मे फिर छाया है.

नाद करत गरज दामिनी आई है.
पहली बारिश ने मिट्टी महकाई है.

*****

रक्षाबंधन

रचनाकार- जानवी कश्यप, आठवीं ,स्वामी आत्मानंद तरबाहर बिलासपुर

सावन के महीने में राखी का त्यौहार आता है, ढेर के साथ खुशियां भी बांध लाता है, आखिर में यह भाई बहनों का रिश्ता कितना अनमोल होता है, तोड़े से भी ना टूटे यह भाई बहनों का बंधन. एक यही तो है भाई बहनों का त्यौहार. चाहे जितना भी लड़े पर यह त्यौहार सभी को मिला ही देता है. पूरे साल बहनों को इंतजार रहता है इस त्यौहार का.

आप सभी को रक्षाबंधन की बधाई.

*****

पानी का मूल्य और मानव को समझना है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

पानी बचाने की ज़वाबदेही निभाना है.
पानी का मूल्य हर मानव को समझाना है.
पानी को अहम दुर्लभ मानकर
अपव्यय करने से बचाना है.

पानी के स्त्रोतों की सुरक्षा स्वच्छता अपनाने के लिए,
जी जान से ध्यान लगाना है.
पानी बचाओ जीवन बचाओ
यह फॉर्मूला मूल मंत्र के रूप में अपनाना है.

पानी बचाने की ज़वाबदेही निभाना है.
हर मानव को ज़ल संरक्षण संचयन अपनाकर,
पानी बचाकर जनजागृति लाना है.
अगली पीढ़ियों के प्रति ज़वाबदारी निभाना है.

बिना पानी ज़िन्दगी का दर्द क्या होता है ?
पानी अपव्यय वालों तक पहुंचाना है.
पानी का उपयोग अब हमें
प्रसाद की तरह करना है.

*****

ओमी को मिला सबक

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

कोंगनी नाला के तट पर एक बहुत बड़ा बरगद का पेड़ था. पेड़ पर बंदरों का एक दल रहता था. एक अधेड़ बंदर दल का मुखिया था. अपने सब साथियों का वह बड़ा ध्यान रखता था. बंदर साथी भी उनका बड़ा आदर करते थे. कोई भी उनसे सलाह-मशविरा किये बगैर काम नहीं करते थे. पौ फटते ही सभी एक साथ भोजन की तलाश में निकल जाते थे. दिन भर सभी एक-दूसरे का बहुत ख्याल रखते थे. साँझ होते ही पेड़ पर लौट आते थे. आने वाले दिनों में भोजन की खोज में जाने संदर्भित चर्चा करते थे. इस तरह वानरदल में प्रेम-एकता, भाईचारा व सहयोग का अनूठा संगम देखने को मिलता था.

बंदरों के समूह में एक छोटा सा बंदर था- ओमी. वह बहुत शरारती था. उसके माता-पिता हमेशा परेशान रहते थे. अन्य बंदरों को भी उसकी हरकतें बिल्कुल पसंद नहीं थी. उसे हमेशा डाँट-डपट सुनने को मिलती थी. मुखिया बंदर हमेशा ओमी की शरारत पर उसे समझाता था. मुखिया सदैव अपने साथियों के समक्ष ओमी की तरफदारी करते हुए कहा करते थे कि एक दिन वह अवश्य सुधर जाएगा. मुखिया की प्रेमपूर्ण तरफदारी से ओमी सबसे बच जाता; और जाने-अनजाने में हरकतें करता ही रहता था. कभी-कभार तो ऐसी हरकतें करता था कि उसके मम्मी-पापा का सर शर्म से झुक जाता था.

एक दिन की बात है. सावन का महीना था. आकाश काले-काले बादलों से ढका जा रहा था. बदन कँपकँपाती हवा की आहट आ रही थी. बिजलियाँ भी चमकने लगी थी. जोरदार बारिश की पूरी सम्भावना थी. सभी बंदर पेड़ पर बैठे हुए थे. मुखिया सबको चेता रहा था कि अब कोई कहीं नहीं जाएगा. सभी पत्तियों की झुरमुट से अपनी बचाव की व्यवस्था

कर लें. तभी दल में से एक अनुपस्थित साथी आया. बोला- "मुखिया जी , नाले के दूसरे तट पर जामुन का जो पेड़ है , वहाँ से गुजरते हुए मैं आ रहा था , तभी पेड़ पर बैठे पक्षियों के मुखिया नीलकंठ ने कहा कि आप सब बंदर; चाहे तो बचे पके हुए फलों को अपना भोजन बना सकते हैं; और कहा कि इस बात को अपने मुखिया को बता देना."साथी बंदर ने अपनी बात को विराम दी.

सभी बंदर अपने साथी की बात बड़े ध्यान से सुन रहे थे. सबको अच्छा लग रहा था. चिड़ियों का सुझाव भी पसंद आ रहा था. मुखिया ने सर हिलाते हुए कहा- "ठीक है, अभी तो उस पेड़ के फलों को खाने की बारी उनकी ही है, पर वे जब अपने से कह रहे हैं तो हमें भी कोई ऐतराज नहीं है. क्यों साथियों...? "

"हाँ...हाँ....मुखिया जी...ठीक है ना...."सभी बंदरों ने हामी भरी. जाने के दिन व समय को मुखिया पर छोड़ दिया.

'"तो ऐसा करते हैं.... मौसम को देखते हैं कि कब तक ऐसा ही रहेगा. मौसम खुलेगा फिर चलेंगे. इस समय कोई वहाँ नहीं जाएगा. तेज बारिश हो सकती है. ऐसे में खतरा मोल लेना ठीक नहीं है."

"ठीक है मुखिया जी, आप सही कह रहे हैं."कहते हुए सभी रात्रि विश्राम के लिए अपनी-अपनी जगह पर चले गये. साँझ को रात्रि अपनी आगोश में ले रही थी.

रात हो गयी. सब सो गये. पर एक नन्हा सा बंदर जाग रहा था; और वह था ओमी. सबकी पूरी बातें वह सुन और समझ चुका था. उन सबकी बातों ने ओमी की नींद उड़ा दी. अब ओमी का दिमाग चलने लगा कि क्यों न मैं अभी स्वयं चुपचाप अकेले जाकर पके-मीठे जामुन का मजा उड़ाऊँ. उसका मन गदगद-गदगद हो रहा था कि ये सभी तो घोड़े बेचकर सो रहे हैं. इन्हें तो कुछ पता ही नहीं चलेगा कि मैं जाऊँगा; और स्वादिष्ट फल खाकर इनके जागने से पहले आ भी जाऊँगा.ओमी मन ही मन हवाई पुल बना रहा था. सभी की गहरी नींद का फायदा उठाकर वह मध्यरात्रि को ही नाले की ओर चल पड़ा.

ओमी नाले के किनारे पहुँचा. रात की वजह से बहते पानी का स्तर उसे समझ नहीं आ रहा था. फिर भी छप-छप छलांग लगाते हुए पानी में चलने लगा. उसे बहते पानी का बिलकुल भय नहीं था. उसकी नजरों में सिर्फ पके-मीठे काले-काले जामुन ही दिखाई दे

रहे थे. उसे अपना काम सिद्ध करने की शीघ्रता थी; सो उसने अपनी छलांग की लम्बाई व संख्या बढ़ा दी. अब वह बीच धार में पहुँच गया. ओमी के लिए सब कुछ तो बढ़िया सकारात्मक था, पर एक बात के लिए उसे बहुत अखर रहा था कि नाले के किनारे रहकर भी वह तैरना नहीं सीख पाया. अब तैरने की जरूरत पड़ने लगी. तभी अचानक पानी की धार तेज होने लगी; ओमी तनिक घबराया,फिर भी वह आगे ही बढ़ रहा था. अब धार इतनी तेज हो गयी कि वह बहने लगा. ओमी डर के मारे काँपने लगा. उसे असहाय सा महसूस होने लगा. मुँह में पानी भरने लगा. साँस फुलने लगी. पानी में बार-बार डूबने-निकलने से उसे साँस लेने में दिक्कत होने लगी. बेहोशी छाने लगी थी. तभी अचानक वह एक बहुत बड़े टीले से टकराया. टीले को कसकर पकड़ लिया. धीरे-धीरे करके उस पर चढ़ गया. उसका जी हाय लगा. पानी के तेज बहाव के कारण टीला भी जोर-जोर से हिल रहा था. ठंड से कम; ओमी डर के मारे ज्यादा काँप रहा था. आज उसने मौत को करीब से देखा. जीवन और मृत्यु का अर्थ उसे समझ आ रहा था. वह.बेहद डरा हुआ था. बारिश वाली भीषण काली रात को उसे कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था. टीले को दोनों हाथों से कसकर पकड़ा ओमी सुबह होने का इंतजार करने लगा.

सुबह हुई. पेड़ पर सबने देखा कि ओमी गायब था. घंटे दो घंटे तक कहीं से लौट आने का इंतजार करने लगे. ओमी नहीं आया, तब सबको चिंता होने लगी. फिर मुखिया के कहने पर सभी ओमी की खोज में निकल पड़े. पूरे दल को चार टोलियों में बाँट दिया गया था. घंटे भर बाद ही एक टोली को ओमी दिखाई दिया. मुखिया ने सबको आवाज लगाई. सभी नाले के किनारे पर आए; देखा कि ओमी की दशा बहुत खराब थी. सबको बात समझ आ गई. फिर मुखिया के आदेश मुताबिक बंदरों ने बरगद की लम्बी जड़ों (जटाओं) का जुगाड़ किया. सभी टुकड़ों को जोड़कर एक डोर बनाया. एक बंदर पानी में कुछ दूरी पर जाकर डोर के एक छोर को ओमी को कुछ आवश्यक बातें बताते हुए टीले की ओर फेंका. फिर अपने साथियों के योजनानुसार ओमी ने डोर से अपनी कमर को कसकर बाँधा; और डोर को वह अच्छे से पकड़ा. फिर डोर के दूसरे छोर को बंदरों ने अपनी ओर खींचना शुरू किया. चूँकि पानी का बहुत ज्यादा था; सो बंदरों ने डोर को खींचने में पूरी जोर लगा दी. बड़ी मशक्कत के बाद उन्हें सफलता मिली.

तत्पश्चात ओमी को एक सूखी जगह पर ले जाकर पत्तों पर बिठाया. कुछ बंदर साथी उसके पूरे शरीर को पत्तों से पोछने लगे. ओमी की हालत कुछ ठीक हुई. सबने राहत की साँस ली. चूँकि ओमी से हमेशा सभी बंदर परेशान रहते थे; सो उन्हें आज मौका मिला

था. सब गुस्साए हुए थे. आज सबने ओमी को खूब खरी-खोटी सुनाई. अंत में मुखिया सबको शांत करते हुए कहने लगा- "बेटा ओमी, अब ऐसी गलती कभी मत करना. अपने से बड़ों की बातें सुनना, समझना व मानना सीखो. हमेशा हर काम सोच-समझकर किया करो. कभी भी किसी को बिना बताए कहीं मत जाना. जान जोखिम में डालकर कोई काम मत किया करो. लालच करना बहुत बुरी बात है; इसे गांठ बाँध लो. निज स्वार्थ से कोई काम सिद्ध नहीं होता. एक बात ध्यान से सुनो, प्राकृतिक चीजों- हवा, पानी, आग से जूझने की कोशिश कभी मत करना. प्रकृति के नियमानुसार जीवन जीना सीखो. आज की इस घटना से सबक लो."सभी बंदर मुखिया की बातों को बड़े ध्यान से सुन रहे थे. तभी सबकी नजर ओमी पर गई; देखा कि ओमी क्षमा याचना की मुद्रा में आँखों में आँसू लिये सर झुकाए बैठा था.

*****

अन्नदाता किसान

रचनाकार- अशोक कुमार यादव, मुंगेली

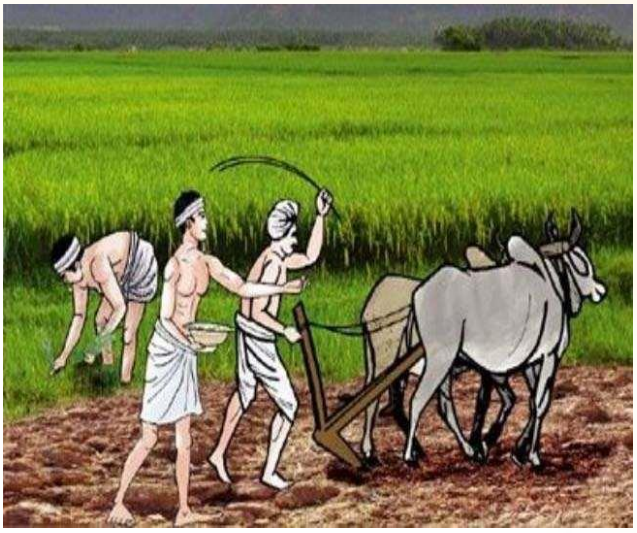

मोर छत्तीसगढ़ के किसान.
तैंय आवच भारत के शान.
एक हाथ म नागर धरे हच,
दूसर हाथ म धरे हच तुतारी.
बईला चलत हे आगु-आगु,
खेत ह आवय तोर महतारी.
सबले हवच अन्नदाता महान.
मोर छत्तीसगढ़ के किसान.
घाम-पियास म बूता करके,
गारके पछिना अन्न उपजाथच.
खूद भूखे पेट लाघन रहिके,
पेट भर जन-जन ल खवाथच.
तोला कहिथें बिसनु भगवान.
मोर छत्तीसगढ़ के किसान.

पीरा म कलहरत आँसू बोहात हे,
कोनों नईये तोर काँटा निकलईया.
अपन-अपन सब रोटी सेंकत हें,
खादी ह सुध नई लेवत हे भईया.
देश के खातिर होगे कुर्बान.
मोर छत्तीसगढ़ के किसान.

*****

विश्व जनसंख्या दिवस में चेतना जागृत करें

रचनाकार- आशोक पटेल "आशु ", शिवरीनारायन

प्रति वर्ष हम जनसंख्या दिवस मनाते हैं.वास्तव में इसका उद्देश्य क्या है इसे हमने गंभीरता से नही लिया. जितनी गंभीरता की आवश्यकता है शायद हमने उतनी गंभीरता नहीं दिखाई. यूनाइटेड नेशंस पॉपुलेशन फंड UNFPA के आँकड़ों के मुताबिक़, दुनिया की कुल आबादी फिलहाल 7 अरब 95 करोड़ 40 लाख है. इसमें 65% आबादी 15 से 64 साल की उम्र के लोगों की है 65 साल से ऊपर के लोगों की 10% और 14 साल से कम उम्र के लोगों की 25% हिस्सेदारी है.

UNFPA के इन आँकड़ों के आधार पर यह भी माना जा रहा है की अगले कुछ महीनों में ही पूरी दुनिया की आबादी ८ अरब पहुँच सकती है.

पूरे विश्व की बढ़ती हुई आबादी को देखकर हमें आज और अभी गंभीर हो जाने की आवश्यकता है. वर्तमान परिदृश्य और भविष्य को देखा जाय तो बहुत ही भयावह है. इस नाते हमें सम्हलने की आवश्यकता है. इस भयावहता को समझते हुए हमें स्वयं और पूरे विश्व को जागृत होने की आवश्यकता है.

विश्व जनसंख्या दिवस प्रतिवर्ष 11 जुलाई को मनाया जाता है. इस दिवस को मनाने का उद्देश्य जनसंख्या की बेतहाशा वृद्धि और इस कारण से उत्पन्न समस्याओं को ध्यान में रखते हुए वैश्विक चेतना जागृत करना है. यह आयोजन 1989 में संयुक्त राष्ट्र विकास गवर्निंग काउंसिल द्वारा स्थापित किया गया था.

विश्व जनसंख्या दिवस मनाये जाने के पीछे कुछ ऐसे उद्देश्य और ज्वलंत मुद्दे हैं जिन पर गौर करना अति आवश्यक है जैसे कि परिवार नियोजन,लिंग समानता,गरीबी,मातृ स्वास्थ्य और मानव अधिकारों का महत्व.

उपरोक्त उद्देश्य और मुद्दों को ध्यान में रखते हुए विश्व जनसंख्या दिवस मनाया जाना चाहिए.

यदि इन मुद्दों को ध्यान में नही रखा गया तो स्थिति की भयावहता से निपट पाना संभव ही नही असंभव होगा. हमें यह समझना होगा की इस भयावहता से गरीबी,भुखमरी,अशिक्षा,संसाधन की कमी अर्थात मूलभूत आवश्यकताओं की कमी,सामाजिक असंतुलन,पर्यावरणीय दुष्प्रभाव आदि हो सकते हैं.इन सब मुद्दों को ध्यान में रखते हुए प्रतिवर्ष जनसंख्या दिवस मनाया जाता है.

इस वर्ष विश्व जनसंख्या दिवस का थीम:

UNFPA की ओर से महिलाओं और बालिकाओं की सेहत की सुरक्षा तय किए जाने और कोविड 19 पर रोक लगाने पर ध्यान केंद्रित करने की बात कही गई है.आइये हम सब मिलकर उपरोक्त थीम और ज्वलंत मुद्दों को ध्यान में रखकर डट कर मुकाबला करें. पूरे विश्व में इनसे उपज रही समस्याओं से अवगत कराएँ और इन समस्याओं से निपटने हेतु जन- जागरुकता फैलाएँ ताकि इससे होने वाले नकारात्मक प्रभावों से निपटा जा सके.

*****

बादल छाया चारों ओर

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर"लाल", दुर्ग

बादल छाया है अति घनघोर,
मेरे गांव के चारों ओर.

बिजली चमके तड़ तड़ तड़,
हवा बह रही सर सर सर,
झर-झर झर-झर बरसे पानी,
पेड़ों को करके झकझोर.

दादुर तान के गाये गीत,
छत से भी गूंजे संगीत,
सारे जलचर बड़े मगन हैं,
कीट पतंगें कर रहे शोर.
बादल छाया चारों ओर.

*****

किताबी शिक्षा बनाम व्यवहारिक शिक्षा

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

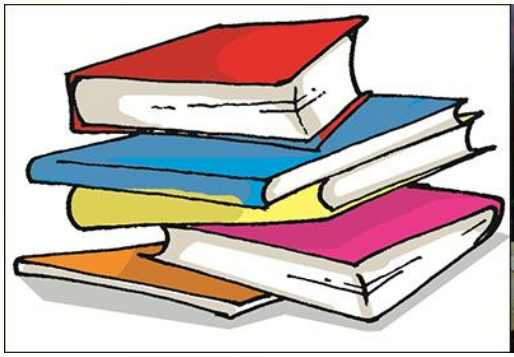

अनमोल बौद्धिक ज्ञान के धनी मानव को जन्म से ही परिवार, समाज, मानवीय संपर्कों से व्यावहारिक शिक्षा और ज्ञान मिलना शुरू हो जाता है. जैसे-जैसे शिशु बाल्य काल से बचपन और फिर युवा होता है, वैसे-वैसे व्यावहारिक ज्ञान के माध्यम से उसकी बौद्धिक परिपक्वता बढ़ती जाती है और फिर स्कूल कॉलेज से किताबी ज्ञान पाकर सोने पर सुहागा की कहावत हम पूरी करते हैं.

इस तरह हम देखते हैं कि, शिक्षा दो तरह की होती है. एक किताबी शिक्षा और दूसरी व्यावहारिक शिक्षा. अगर किताबी शिक्षा के साथ व्यावहारिक शिक्षा नहीं है तो हम शिक्षित होते हुए भी अशिक्षित की श्रेणी में आयेंगे. और अगर हमको शिक्षा के साथ साथ व्यावहारिक ज्ञान भी है तो हम शिक्षित की श्रेणी में आयेंगे.

भारत में कुछ वर्षों से हम देख रहे हैं कि कौशल विकास पर जोरदार तरीके से ध्यान दिया जा रहा है जिसके लिए केंद्र सरकार द्वारा एक अलग से कौशल विकास मंत्रालय का भी गठन किया गया है जो अनेक राज्यों में विभिन्न स्तरों पर कौशल विकास का जन जागरण अभियान चला रहा हैं. इसके लिए हुनर हाट सहित अनेकों कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया जा रहा है. मेरा मानना है कि इन सब का कारण हर नागरिक को नौकरी ढूँढ़ने वाला नहीं बल्कि नौकरी देने वाला बनाना है, जिससे बेरोजगारी की समस्या भी दूर होगी और जो कौशल के रूप में ज्ञान प्राप्त करेंगे, वह उनके व्यक्तित्व में भी झलकेगा. इसके विपरीत हम देखते हैं कि किताबी पढ़ाई वाली डिग्रियाँ जिसे हम पढ़ाई के खर्चे की रसीदें भी कह सकते हैं, प्राप्त करने के बाद भी इंटर्नशिप या प्रैक्टिकल ट्रेनिंग लेना जरूरी होता

है. केवल डिग्री के बल पर हम अपने व्यवसाय में प्रैक्टिस नहीं कर सकते. किसी जॉब में शामिल होने के बाद भी उसकी ट्रेनिंग लेनी होती है और हमारा किरदार उसमें झलकता है कि हम इसके विशेषज्ञ हैं फ़िर भी अक्सर देखा गया है कि बड़ी-बड़ी डिग्रियाँ प्राप्त करने के बाद जब सेवा करने का मौका आता है तो अनेक लोग विदेशों में जाकर सेवाएँ प्रदान करते हैं और वहीं बस जाते हैं.

जिसने किताबी ज्ञान अर्जित किया हो और स्कूल कॉलेज की परीक्षाओं को पास कर डिग्री हासिल की हो वो शिक्षित है, और जिसे अक्षर ज्ञान न हो, वो किताबी अनपढ़. पर क्या शिक्षा का अर्थ केवल किताबी ज्ञान अर्जित करना ही है? एक शिक्षित इंसान के द्वारा फेंका हुआ कचरा, अगर सुबह एक किताबी अशिक्षित सफाई कर्मचारी उठाता है. ऐसे में किसे शिक्षित कहना चाहिए सफाई कर्मचारी को या कचरा फेंकने वाले को? आजकल की शिक्षा ऐसे ही रटने मात्र की शिक्षा होती जा रही है. जहाँ मतलब समझ आए या न आए, बस रट्टा मारो और पास हो जाओ.

शायद इसीलिये किताबी पढ़े-लिखे अनपढ़ों की संख्या बढ़ती जा रही है. पिछले कुछ दशकों में शिक्षा का स्तर काफी बढ़ा है पर शिक्षा की वैल्यू कम होती जा रही है. ध्यान दें तो याद आता है जहाँ कुछ साल पहले ग्रेजुएशन ही पर्याप्त था, आज पोस्ट ग्रेजुएशन,क्या पीएचडी की भी कोई विशेष वैल्यू नहीं है. तकनीकी शिक्षा पर जोर है. तकनीकी शिक्षा गलत नहीं है पर सिर्फ तकनीकी शिक्षा से काम नहीं चलेगा.

हम किताबी शिक्षित और किताबी अनपढ़ व्यक्तियों को देखें तो, बहुत अंतर है. किताबी अनपढ़ आदमी केलकुलेटर चलाना नहीं जानता पर सारा हिसाब किताब उंगलियों से कर लेता है. पढ़ा-लिखा आदमी बिना केलकुलेटर के चार में से दो घटाने के लिए भी अपनी उँगली नहीं घिसता. किताबी अनपढ़ व्यक्ति के पास अपने अनुभव के अतिरिक्त कुछ नहीं होता जबकि पढ़ा-लिखा व्यक्ति औरों के अनुभव भी उपयोग में ले आता है. किताबी अनपढ़ व्यक्ति अधिक प्रैक्टिकल होता है शिक्षित व्यक्ति इतना नहीं होता. कहीं बाहर जाने पर पढ़ा-लिखा व्यक्ति आसानी से पता ढूँढ़ लेता है जबकि किताबी अनपढ को परेशानी होती है. एक युग था जब समाज में किताबी अनपढ बहुत थे तो उनका कामकाज भी उसी तरह चलता था .आज किताबी अनपढ़ व्यक्ति को हर तरह की परेशानी उठानी पड़ती है. उसे पढ़े-लिखे लोगों पर आश्रित रहना पड़ता है.

व्यवहारिक शिक्षा और ज्ञान से परिपक्व व्यक्ति अपने कुल और माता पिता की विचारधारा पर चलकर संस्कारों का परिचय देते हैं. वहीं किताबी ज्ञान डिग्री लेने वाले कुछ अपवादों को छोड़कर संस्कारों और विचारधारा में साफ फर्क दिखाने लगते हैं अपने कुल और माता पिता की विचारधारा पुरानी और ढकोसली लगने लगती है रिश्ते नातों में कमजोरी को बल मिलता है और विवाहित होने पर सिर्फ अपने परिवार की जवाबदारी तक सीमित हो जाते हैं जबकि व्यवहारिक ज्ञान के धनी व्यक्तियों में ऐसा नहीं है.

परंतु यह हम जरूर कहेंगे के किताबी ज्ञान वालों से अधिक ज्ञान समझ रखने वाले व्यवहारिक ज्ञान के धनी व्यक्तियों के दोनों हाथों में मलाई होती है जिसे वे स्थिति अनुसार प्रयोग करते हैं. स्थिति बिगड़ी तो तुम तो पढ़े लिखे हो हम ठहरे अनपढ़, हमको क्या समझता है और परिस्थिति का हमारे तरफ झुकाव रहा तो, देखो तुम तो पढ़े लिखे हो तुम्हारी पढ़ाई लिखाई किस काम की? हम तो अनपढ़ ही अच्छे है.

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर उसका विश्लेषण करें तो हम पाएँगे कि, शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो हमारे मानवीय गुणों को भी विकसित करें. हमें संवेदनशील, सहनशील और व्यावहारिक के साथ-साथ देश और समाज के प्रति जागरूक भी बनाए. जैसे प्राचीन काल में गुरुकुल में होती थी. जहाँ न सिर्फ पुस्तक ज्ञान सिखाते थे बल्कि आध्यात्मिक, सामाजिक, व्यावहारिक और शस्त्र ज्ञान भी शिक्षा के साथ-साथ ही सिखाया जाता था. अगर अच्छी किताबी शिक्षा या व्यावहारिक शिक्षा होने के बावजूद भी हम दकियानूसी सोच रखते हैं. अपने घर को साफ रखते हैं,पर सड़क पर कचरा करते हैं. दूसरो की पर्सनल लाईफ़ पर कमेंट करते हैं तो हमारे शिक्षित होने का क्या अर्थ है?इसलिए व्यावहारिक शिक्षा और ज्ञान में परिपक्व व्यक्ति अगर किताबी ज्ञान की डिग्रियाँ ले तो सोने पर सुहागा होगा.

*****

वर्तमान अवसर

रचनाकार- डॉ० सत्यवान सौरभ, हरियाणा

अन्य अधिकारों के एक भाग के रूप में स्वतंत्रता प्रत्येक मनुष्य का मानवाधिकार है. उस स्वतंत्रता के साथ, प्रत्येक मनुष्य वह कर सकता है जो वह चाहता है, वह जो कुछ भी उसके पास है और जिस स्थिति में है, उसका उपयोग कर सकता है. दूसरे शब्दों में, कोई भी अपने सभी संसाधनों के साथ अपनी क्षमता के अनुसार कुछ भी कर सकता है, जिस तरह की स्थिति में वह है. यह सच है कि व्यक्ति को पूरी क्षमता से, अपने पास मौजूद सभी संसाधनों के साथ और जिस स्थिति में वह है, वहीं से कार्य करना चाहिए. बेकार बैठने से बेहतर है कि आपके पास मानव संसाधन जैसी सभी क्षमताएँ और भौतिक संसाधन जैसे संसाधन उपलब्ध है; उनका सदुपयोग करें. किसी लक्ष्य को प्राप्त करना व्यक्तियों की बौद्धिक क्षमता पर निर्भर करता है. किसी भी उद्देश्य को प्राप्त करने का कोई आदर्श मार्ग नहीं है. उदाहरण के लिए, मंगलयान मिशन के दौरान इसरो ने इस मिशन के लिए अन्य देशों के पिछले प्रयासों की तुलना में कम कीमत पर और पहले ही प्रयास में परियोजना को पूरा कर लिया है. इस मिशन के लिए कम बजट आबंटन के बावजूद, इसरो वैज्ञानिकों ने इस मिशन के लिए पिछले रॉकेट के सभी उपलब्ध हिस्सों का उपयोग किया है. इस प्रकार, यह देखा जा सकता है कि आपके पास उपलब्ध संसाधनों से शुरुआत करना बेहतर है.

उचित अवसर की प्रतीक्षा करने की अपेक्षा वर्तमान अवसर का उपयोग करना एक बुद्धिमान विकल्प है. सही अवसर जैसा कुछ नहीं होता. यह सब इस बात पर निर्भर करता है कि कब हम पूरी क्षमता और संसाधनों के साथ, सही दिशा में सही प्रयास के

साथ कितनी अच्छी तरह काम करते हैं. जैसा कि एक प्रसिद्ध चीनी कहावत है, एक पेड़ लगाने का सही समय 20 साल पहले है, और अगला सबसे अच्छा समय अब है. इसका तात्पर्य यह है कि वर्तमान अवसर के उपयोग पर जोर दें. कुछ लोग यह तर्क दे सकते हैं कि जल्दबाजी के बजाय सही अवसर उपयुक्त संसाधनों के साथ अधिक दक्षता लाता है. यह सच है लेकिन सही समय पर भी यह इस बात पर निर्भर करता है कि हमें इसके प्रति किस तरह के प्रयास जारी रखने चाहिए. एक प्रसिद्ध कहावत है कि, महान लोग महान कार्य नहीं करते, वे सामान्य कार्य बहुत अधिक करते हैं. इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि हम वर्तमान अवसर का भरपूर उपयोग करें.

कम यात्रा वाला रास्ता अपनाना अच्छा है. जब हम उस रास्ते पर चलते हैं, जिसे हर दूसरा व्यक्ति अपनाता है, तो हमें समान परिस्थितियों में समान परिणामों का सामना करना पड़ सकता है. लेकिन अगर हम कम यात्रा वाला रास्ता अपनाते हैं, तो हमें उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक बेहतर और आसान रास्ता मिल सकता है. लेकिन हम इसकी गारंटी नहीं दे सकते कि कम यात्रा वाले रास्ते में निश्चित रूप से कोई समाधान होगा. हम जिस बात की गारंटी दे सकते हैं वह यह है कि हम किस प्रकार का अनुभव प्राप्त कर सकते हैं. उदाहरण के लिए, जब थॉमस अल्वा एडिसन बल्ब का आविष्कार करने के प्रयास में सैकड़ों बार असफल हुए और उन्हें पता चला कि वह इतनी बार बल्ब का आविष्कार कैसे नहीं कर सकते. किसी को भी अपने पास मौजूद संसाधनों के साथ कम चुने गए रास्ते से डरना नहीं चाहिए.

किसी को आलोचना से हतोत्साहित नहीं होना चाहिए बल्कि किसी विशेष उद्देश्य को पूरा करने के लिए सही प्रयास और इच्छाशक्ति का प्रयोग करना चाहिए और रचनात्मक प्रतिक्रिया के लिए खुला रहना और लगातार सुधार करना चाहिए. यह महत्वपूर्ण है कि हम अपने अंतिम उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए किस प्रकार की कड़ी मेहनत करते हैं. हमें सकारात्मक प्रतिक्रिया और टिप्पणियों के माध्यम से लगातार सुधार करना चाहिए जो हमारे सामूहिक ज्ञान और संसाधन और जिस स्थिति में हम हैं उसके आधार पर परिस्थितियों के लिए सबसे उपयुक्त है. भारत की आजादी के शुरुआती वर्षों के दौरान, जब भारत ने सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार के साथ लोकतंत्र का रास्ता चुना, तो कई राजनीतिक विश्लेषकों ने देखा कि भारत का लोकतंत्र का प्रयास जल्द ही विफल हो जाएगा. आलोचना के बावजूद हमारे नेता इच्छा शक्ति से आगे बढ़े. आज हमारे माननीय

प्रधान मंत्री के अनुसार, "भारत लोकतंत्रों की जननी है." इस प्रकार, अन्य चीजों के साथ-साथ हमारे उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए प्रयास भी मायने रखते हैं.

सहज तत्व, आत्मविश्वास, मानवीय कार्यों की मुख्य प्रेरक शक्ति है. यह हमारे मन और शरीर को शांत करेगा और आंतरिक शांति लाएगा. यह आत्मविश्वास तब बनता है जब हम चुनौती का सामना करने के लिए तैयार होते हैं. आत्मविश्वास के बिना एक बार बौद्धिक क्षमता अपनी पूर्ण दक्षता तक नहीं पहुंच पाती और हम काम बिगाड़ देंगे. पूर्ण फोकस और समन्वय के साथ, हम अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकते हैं, भले ही हमारे पास सीमित संसाधन हों और गंभीर स्थिति हो. उदाहरण के लिए, पाकिस्तान स्थित आतंकवादियों द्वारा उरी हमले के बाद भारतीय सेना के एक गुप्त ऑपरेशन के दौरान हमारे सैन्यकर्मियों ने जोखिमों के बावजूद आत्मविश्वास और समन्वय के साथ संदिग्ध पाकिस्तानी आतंकवादियों पर सर्जिकल हमले में जो प्रयास किए, उससे ऑपरेशन सफल रहा. इस प्रकार, कम महत्वपूर्ण चीजों पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय खुद पर विश्वास रखना महत्वपूर्ण है. इस बात पर व्यापक तर्क हैं कि किसी व्यक्ति को कुछ भी करने की अप्रतिबंधित स्वतंत्रता नहीं होनी चाहिए. ऐसा इसलिए है ताकि समाज के अन्य व्यक्तियों को वह करने की समान स्वतंत्रता मिल सके जो अन्य व्यक्ति करना चाहते हैं. यह समाज, राष्ट्र और मानवता की व्यापक भलाई के लिए भी महत्वपूर्ण है. राष्ट्र विरोधी तत्व, जो राष्ट्रीय सुरक्षा, संप्रभुता और अखंडता और अन्य देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों को खतरे में डालते हैं, उन्हें प्रतिबंधित किया जाना है. ये समान प्रतिबंध हमारे भारतीय संविधान के विभिन्न अनुच्छेदों, जैसे अनुच्छेद 19, में भी निहित हैं.

अनैतिक कार्यों जैसे नशीली दवाओं, हथियारों, सामानों की तस्करी या महिलाओं के लिए अपमानजनक टिप्पणी आदि को प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए. चूँकि इसका कूटनीतिक, आर्थिक, राजनीतिक आदि विभिन्न क्षेत्रों में राष्ट्र की ताकत पर व्यापक प्रभाव पड़ता है. पारंपरिक रूप से गैरकानूनी कार्य जैसे कि समाज में अराजकता पैदा करना, जैसा कि कई घरेलू कानूनों, जैसे यूएपीए, आईपीसी की धारा 124 आदि द्वारा परिभाषित किया गया है या सरकार की स्थिरता को खतरा है, को प्रोत्साहित नहीं किया जाना चाहिए. विभिन्न कानूनों द्वारा लगाए गए अन्य प्रतिबंध हैं जैसे कि चार पूर्वोत्तर राज्यों के लिए स्वदेशी सांस्कृतिक अधिकारों की रक्षा के लिए इनर लाइन परमिट, और अन्य जो अन्य व्यक्तियों की स्वतंत्रता को सीमित करते हैं.निष्कर्षत किसी व्यक्ति या संस्था की क्षमता, उपयोग के लिए उपलब्ध संसाधन और स्थिति का प्रकार अपने अंतिम

उद्देश्यों को अधिक कुशलतापूर्वक और अनूठे तरीके से निर्देशित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं. हालाँकि, सांस्कृतिक कारकों, कानूनी कारकों, नैतिक कारकों आदि के आधार पर समाज में कोई क्या कर सकता है, इसके विभिन्न प्रकार के विवरण हैं. इन कारकों को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अवसर से शुरुआत करना महत्वपूर्ण है, भले ही वह कम चुना गया रास्ता, सही प्रयासों और आत्मविश्वास के साथ.

*****

WORLD WIDE WEB DAY

Writer- Miss K. Sharda, Durg

Introduction

Earlier to know more one has to visit different city's ,state ,country and what not to find wisdom ,but now serious sitting in a toilet and browsing the smart phones one gets wisdom and what not. Whenever we wanna refer ,read ,know ,learn or see about a particular thing the only source for books ,where library are servers and we clients searching a particular data we go library to library for knowing in details .Just imagining a single language with a single entity has 100000 more books and what about world wide topics languages and more and how to maintain such huge volume of books .This into consideration happened world wide web where datas are literally and digitally stored in servers across the globe and when a client send requests via web browsers these servers share data's related to the request with the data available .Without world wide web there is no mean the world is shrinked into a pocket of gadget where we order talk laugh purchase and what not in a our gadgets like mobile phones ,thanks for the foundation of world wide web.

Web Emerges World Wide

In 12th March 1989 Tim Berners Lee from The European Nation Organisation known as CERN ,Genewa! which was known physics nuclear experiment came out with a idea of Hypertext of connecting computers in a link for data sharing called web server and web browser and initiated HTML in 1991 and released the source code public in 1993 .

Anderson launched a web browser called Mosaic which was point and click to connect the servers and launched the website as a portal for data sharing in a alignment like client and server where the browser acts as a client and sends a command for a particular data and behind the servers across will share the dats in request .1994 Anderson's netscape patented webbrowsers and by 1995 the world accessed the browsers about 10 millions users and above .In 1995 Microsoft build IE which is internet explorer and bundled it with its windows 95 os which was a huge hit then.Apple entered the race with its browsers safari in 2003 ,Mozilla Firefox in 2004 raised huge competition to IE and in 2008 Google Happened then it's history now we are in Chat Gpts and Bingos sitting high.

Web and it's interface

Social web - is were we common people look in for news ,information ,entertainment's and more day to day routines .

Deep web - Is the most used web in the prevailing like a company employeee logging in and accesse dats for the company and sharing the same to his colleagues and organising work it's like intermitted information transfer within the company with security scrutiny

Dark web - is nothing but the devil twin of dark web where it's still more security concerns but here mostly law abiders and criminals ,hackers mostly use it for their inner motives ,still 15% of the users use it for good as well .

It's noted that around 10-20% users are using social web and 60-70 percent on daeep web and remaining on dark web.

SAFE BROWSING

To prevent all mischiefs in browsing ensure to use strong passwords ,login only to https websites ,ensure the website logged in original not hackers copy,avoid using public wifi,neglect phishing and scam emails and report same ,multi level authentication , be carefull where you click ,back up data regularly ,close unused accounts ,be careful on what you post and download ,using security softwares ,updating system software programs apps regularly,put up a firewall,raising awareness.

CONCLUSION

Though in the digital world we can't avoid usage of all web browsers for our day in usage but one should be ensured to keep the personal datas safe from hackers and criminals online who phish inn to loot your credit card number your identity and other details and enhance cash for the same or steal money or steal private photo videos and blackmail monetary benefits ,With the world within the pocket via www use it to grow knowledge and enhance prosperity to the world

*****

प्रवेश उत्सव

रचनाकार- श्रीमती हिमोनी बघेल, दुर्ग

मेरे बच्चों मेरे प्यारों
जीवन का नव पहलू,
नव पहल है ये,
याद रहे.

प्रवेश है नव सोपान में
सीखें नव ताल, नव लय,
पर है यह नव समर,
याद रहे.

मन - मस्तिष्क में
नव ज्ञान, नव बोध का
है प्रवेश उत्सव,
याद रहे.

और समर है
स्वयं का,अहं से
करना है नव सोपान में
प्रवेश हर साल
याद रहे.

*****

नारी

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

नारी ऐसी होती है जो सभी
रिश्तो को एक धागे में पिरोती है
मां बहन पत्नी बेटी बन
हर रिश्ते को संजयोती है

भारतीय संस्कृति में नारी
लक्ष्मी सरस्वती पार्वती की रूप होती है
समय आने पर मां रणचंडी दुर्गा,
काली का स्वरूप होती है

मत समझ अब अबला
नारी सबला होकर जीती है
हर क्षेत्र में नारी आगे
भारत कि अब यह नीति है

सम्मान करो नारी का वो
ममता प्यार वात्सल्य का स्वरूप होती है
अपमान न करना नारी का
आज की नारी सबला होती है

कौन कहता है इस युग में
नारी अबला होती है
आज की दुनिया में
नारी सबला होती है

करुणा दया नम्रता ममता से
उसकी परख होती है
इसका मतलब यह ना समझना
वह कमजोर होती है

*****

हमर गांव हमर गोठ

रचनाकार- सुशीला साहू "शीला", रायगढ़

हमर गांव अऊ हमर गोठान,
गांव के चौपाल अऊ गांव के सियान.
दाई ददा अऊ जम्मों किसान,
हमर गांव अऊ हमर गोठान.

अब हरेली अमावश तिहार आगे,
हमर खेतिहर गैंती,अऊ नागर धोआ गे.
"नरवा" में नहावे,"गरवा" अऊ बैला,
पूजा में भोग चढ़ाबो चाऊर के चीला.

किसान के मन मा खुशी आगे,
जम्मों खेत मा हरियाली छागे.
रंग बिरंगी फूल अऊ फूलवारी,
छलकत तरिया अऊ सुग्घर "घुरवा"बारी.

लइका मन गेड़ी चढ़ के भारी खुशी,
हमर गांव देहात के चटनी अऊ बासी.
हमर छ.ग. अऊ हमर पहचान,
हमर गांव अऊ हमर गोठान .

*****

मुझे मेरे देश से प्यार है

रचनाकार- बबीता पटेल, कक्षा 10 वीं

मुझे मेरे देश से बडा़ प्यार है
मेरे भारत पर मुझे नाज है
मेरा भारत सभी देशों का सरताज है
जिस देश में बहती गंगा की धार है
मुझे मेरे उस देश से बडा़ प्यार है
कभी काम आऊं मैं भी मेरे इस देश का
ऐसे दिन का मुझे इंतजार है
मुझे मेरे भारत से बडा़ प्यार है
जिस देश का बच्चा भी देश के लिए बलिदान होने को तैयार है
मुझे उस देश से बडा़ प्यार है
जिस देश में गुरू-शिष्य का रिश्ता सदियों से बरकरार है
मुझे उस देश से बडा़ प्यार है
जिस देश में महान वीरों ने जन्म लिया
जिस देश की गौरव गाथा अपार है
जिस देश में बसता मेरा संसार
इस भारत मां के आँचल से मुझे बडा़ प्यार है
मुझे वतन पर कुर्बान हो जाने का इंतजार है
मैं गर्व से कहती हूं
कि मुझे मेरे देश मेरे भारत से बडा़ प्यार है

*****

पैरेंट्स दर्पण

रचनाकार- स्नेहा सिंह, नोएडा

स्कूरात्फ वाल्डो नामक चिंतक ने कहा है कि आप का व्यक्तित्व इतनी तेज आवाज में बोलता है कि आप के कहे शब्द सुने नहीं जा सकते. पैरेंट्स जब बच्चे से अच्छे व्यवहार और अच्छे काम की अपेक्षा करता है तब यह बात नजरअंदाज नहीं होनी चाहिए. आचार ही प्रचार का श्रेष्ठ साधन है. आचार का असर धर्मग्रंथों के उपदेशों की अपेक्षा भी बढ़ जाता है.

एक अफसर अपने बच्चों को गोल्फ के मैदान में गोल्फ खेलने के लिए ले गया. उसने टिकट काउंटर पर बैठे व्यक्ति से पूछा, "अंदर जाने की टिकट कितने की है?"

वहां बैठे व्यक्ति ने जवाब दिया, "6 साल से ज्यादा उम्र वालों के लिए 3 डालर और उससे कम उम्र वालों के लिए कोई टिकट नहीं है."

अफसर ने कहा, "छोटे की उम्र 3 साल है और बड़े की उम्र 7 साल है. इसलिए मुझे तुम्हें 6 डालर देने होंगे."

टिकट काउंटर पर बैठे युवक ने कहा, "आप की लाटरी लगी है क्या? आप 3 डालर बचा सकते थे. आप मुझसे कह सकते थे कि बड़ा बेटा 6 साल का है. मुझे पता तो था नहीं."

अफसर ने जवाब दिया, "मुझे पता है कि तुम्हें नहीं पता. पर बच्चों को तो पता चल जाता कि उनका पिता झूठ बोल रहा है. मेरे बच्चे मुझे झूठ बोलते सुनेंगे तो वे भी झूठ बोलने में नहीं हिचकेंगे." आज के चुनौती भरे इस समय में नैतिकता पहले की अपेक्षा अधिक

महत्वपूर्ण है. इसलिए पैरेंट्स को अपने बच्चों के सामने अच्छा उदाहरण पेश करना चाहिए. अगर आप अपने बच्चों के व्यक्तित्व में अच्छी बातें चाहते हैं तो यही नियम अपनाएं.

ट्रेन में एक मम्मी और बच्चा यात्रा कर रहा था. 8-10 साल का बच्चा और उसकी मम्मी, दोनों किताबें पढ़ रहे थे. बगल में बैठे किसी व्यक्ति ने पूछा, "आज जब हर बच्चा मोबाइल का दीवाना है तो आप का बच्चा पुस्तक पढ़ रहा है, हैरानी की बात है?"

मम्मी ने हंस कर कहा, "बच्चा हम जो कहते हैं वह नहीं, जो देखता है उसका अनुसरण करता है." बच्चे को अच्छा आदमी बनाने के लिए इन बातों का ध्यान रखें.

0 बच्चे की उपस्थिति में झूठ न बोलें

हम छोटीछोटी बातों में झूठ बोलते रहते हैं, इसलिए बच्चा मान लेता है कि झूठ बोलना खराब चीज नहीं है. अगर आप को किसी वजह से झूठ बोलना ही पड़े तो बच्चे के सामने दिलगिरी व्यक्त करें कि मुझे ऐसा नहीं बोलना चाहिए था, ऐसा बोल कर मैंने गलत किया है. रियली, आई एम सारी. बच्चे को यह भी समझाएं कि हमारे आसपास अनेक लोग झूठ बोलते रहते हैं, बट इट्स नाट फेर... मैं और मम्मी सच बोलते हैं, इसलिए मेरा बेटा भी सच बोलेगा.

0 मोबाइल से बचें

आज पैरेंट्स मोबाइल के लिए बच्चों पर गुस्सा करते हैं. आज की पीढ़ी का मोबाइल के बिना चलता ही नहीं है. क्या यह बात उचित है? अगर पैरेंट्स चाहते हैं कि बच्चा हमेशा मोबाइल में व्यस्त रहने के बजाय कुछ रचनात्मक करे तो इसके लिए पहले पैरेंट्स को सुबह उठ कर मोबाइल में डूब जाना छोड़ना होगा. अगर सुबह समय है तो बच्चे के साथ घूमने जाएं, प्रार्थना करें और अगर सभी फ्री हों तो कार्ड्स वगैरह गेम खेलें. क्रिकेट या बैडमिंटन खेलने जाएं. म्यूजिक सुनें या पुस्तक पढ़ें. आप सोशल मीडिया में डूबे नहीं रहेंगे तो बच्चे पर आप की बात का असर होगा. पापा-मम्मी ऐसा करते हैं या नहीं करते हैं, इसी के आधार पर उचित-अनुचित की धारणा बनती है. पैरेंट्स का व्यवहार संतुलित होना अनिवार्य है.

0 भाषा पर कंट्रोल

पैरेंट्स की भाषा का बच्चे पर सब से अधिक असर होता है. उनका शब्द भंडार पैरेंट्स द्वारा विकसित होता है. इसलिए आप बच्चे के सामने कैसे शब्द, कैसी भाषा और बोलते समय कैसी टोन का उपयोग करते हैं, इसका ध्यान रखना चाहिए. साला, गधा, बदमाश, बिना अक्ल का, पागल, बेवकूफ, नालायक या हरामी जैसे शब्द पैरेंट्स को किसी के भी लिए बोलते सुन बच्चा खुद भी बिना समझे ये शब्द बोलने लगता है. सार्वजनिक रूप से बच्चा ये शब्द बोलता है तो पैरेंट्स चिल्लाते हैं कि मैंने तुम्हें यही संस्कार दिए हैं? बच्चा संस्कार उपदेश से नहीं, आचरण से ग्रहण करता है. जब तक बच्चे में दुनियादारी की समझ न आए, तब तक वह अपने पैरेंट्स के ही व्यवहार को सही मानता है और जब बच्चे में समझ आ जाती है, तब तक बच्चे के व्यक्तित्व में अनेक गलत बातें समा जाती हैं.

0 पालिटिक्स

संयुक्त परिवार हो या विभक्त, ज्यादातर अभिभावक किसी न किसी मुद्दे पर पालिटिक्स खेलते रहते हैं. बच्चे की शार्प नजर में यह सब आता है. पर ठीक से विवेकबुद्धि विकसित न होने से या निर्दोषता होने के कारण ये आप के मन को समझ नहीं सकते और मन में लोगों के लिए गलत अभिप्राय बना लेते हैं और फिर वैसा ही व्यवहार करते हैं. इसलिए अपनी डर्टी पालिटिक्स की छाया बच्चों पर न पड़ने दें. वरना भविष्य में वही पालिटिक्स वे आप के साथ करेंगे. अगर अच्छी संतान चाहते हैं तो अच्छा बनना ही बेस्ट विकल्प है.

*****

बाँधसरोवर की समस्या टली

रचनाकार- टीकेश्वर सिन्हा "गब्दीवाला", बालोद

कुँज जलाशय एक विशाल जलक्षेत्र था। यह चार भागों में विभाजित था. तालगढ़, बाँधसरोवर, दर्रीताल और ताँदुलासर. ये छोटी-छोटी रियासतें थीं. तालगढ़ का राजा था मंडूक मेंढक. बाँधसरोवर की रानी मिन्नी मछली थी. दर्रीताल जेठू जोंक का राज्य था. ताँदुलासर केऊ केकड़ा की रियासत थी. इन चारों पड़ोसी राज्यों में बहुत बढ़िया सम्बंध था. वे एक-दूसरे की मदद करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे. प्रजा भी बहुत खुश थी.

एक बार की बात है. कुँज जलाशय के आसपास ठीक से बारिश नहीं हुई. चारों जलभूमि अलग-अलग भागों में बँट गयी. थलभाग की मेड़नुमा सीमा रेखाएँ उभर आईं. जल स्तर दिन-ब-दिन कम होने लगा. यह सभी राज्यों के लिए एक चिंता का विषय था. अब और अधिक संकट गहराये, इससे पहले विचार-विमर्श करने महाराज मंडूक मेंढक, जेठू जोंक, केऊ केकड़ा और महारानी मिन्नी एक जगह एकत्रित हुए. सभी बड़े चिंतित और दुखी थे.

सर्वप्रथम महाराज मंडूक मेंढक ने अपनी बात रखी- " मित्रो ! हम सभी एक ही समस्या से जूझ रहे हैं. वह समस्या है, हमारे राज्यों का जल स्तर में निरंतर गिरावट आना. और कारण हैं, अत्यंत अल्प वृष्टि व भीषण गर्मी. मेरे तालगढ़ में बहुत ही कम पानी रह गया है. मुझे अपनी प्रजा की बड़ी चिंता हो रही है. अब तक मैं उन्हें ढाँढस बँधाता आ रहा हूँ कि इस बार अच्छी बारिश होगी, और समस्या खत्म हो जाएगी. पर बकरे की अम्मा आखिर कब तक खैर मनाएगी." मंडूक शांत होते हुए बैठा.

फिर रानी मिन्नी मछली ने कहना शुरू किया- "जस हाल माधो का, तस हाल उधो का. वैसे आप सभी जानते हैं कि मेरा राज्यक्षेत्र बाँधसरोवर सबसे छोटा तो है, पर इस बार जलस्तर में बड़ी तेजी से कमी आ रही है. और इसीलिए अधिकतर बगुलों का दल मेरे राज्यसीमा पर मंडराते हुए दिख जाते हैं. मुझे अपने राज्य की सुरक्षा की चिंता खाये जा रही है. हे भगवान ! मेरे राज्य पर आपकी कृपा बनी रही। "मिन्नी ने अपनी वाणी को विराम दिया.

अब जोंक राजा जेठू की बारी आई- "साथियो ! वैसे समस्याएँ तो हम सबकी एक ही जैसी हैं. और आप सभी जानते हैं कि मेरा दर्रीताल सबसे बड़ा राज्य है. हमारी संख्या भी अपेक्षाकृत अधिक है. पर एक सकारात्मक बात यह है कि हम कम पानी में भी रह सकते हैं. दुर्भाग्य ! अल्प वृष्टि के कारण इस बार दर्रीताल बहुत तेजी से सूख रहा है. कुछ दिनों तक पानी नहीं गिरा तो समस्या बड़ी गम्भीर हो जाएगी. "महाराज जेठू जोंक ने अपनी बात पूरी की.

अंत में महाराज केऊ केकड़ा का कहना हुआ - "हमारी समस्या न केवल चिंतनीय है; अपितु शोचनीय भी है. मैंने आप सबकी बातें सुन ली. हम सबको एक ही चिंता सताये जा रही है कि अपने राज्यों को पानी की कमी जैसी समस्या से कैसे बचाएँ. मेरे भाइयो ! सबसे छोटी रियासत होने के बावजूद मिन्नी रानी की समस्या और अधिक गम्भीर है, चिंतनीय है ; क्योंकि उनकी संख्या अधिक है. सो, उन्हें जल की हम सबसे अधिक आवश्यकता है. हम सभी कम पानी में रह सकते हैं. और जरूरत पड़ने पर हम जल व थल दोनों जगहों पर भी रह सकते हैं. "सभी राजा केऊ की बातें बड़े ध्यान से सुन रहे थे.

तभी महाराज जेठू जोंक बीच में ही पूछ बैठा- "जरूरत पड़ने पर ! वो कैसे केऊ महाराज?"

राजा केऊ केकड़ा बोले- "अगर तालगढ़ पूरी तरह सूख गया तो राजा मंडूक और उनकी प्रजा झाड़-झरोखे में छुपकर या जमीन के नीचे गहराई में जाकर रह सकते हैं. उनकी प्राणरक्षा हो जाएगी. क्यों मित्रों , मेरी बात गौर करने योग्य है न ? हम भी बिल बना कर अपनी प्राणरक्षा कर सकते हैं. बारिश होने की प्रतीक्षा कर सकते हैं."

बात शत-प्रतिशत आप सही कह रहे हैं। एक मछली ही सिर्फ जल में ही रहने वाला प्राणी है. थल उसके लिए व्यर्थ हैं. मिन्नी रानी अपनी प्रजा को लेकर भला कहाँ जा सकती है.

फिलहाल हमें मिन्नी रानी के बाँधसरोवर को बचाना ज्यादा जरुरी है. महाराज जेठू जोंक ने अपने मन की बात स्पष्ट करते हुए आगे कहा- "हम लोग भी पानी कम होने पर कुछ दिनों तक कीचड़ में ही रह कर अपनी जान बचा सकते हैं."

"फिर तो मिन्नी रानी के बाँधसरोवर की सुरक्षा सर्वोपरि है. हम पड़ोसी राजाओं का कर्तव्य बनता है कि महारानी मिन्नी और उनकी प्रजा को जलसंकट से उबारा जाय. हर हाल में बाँधसरोवर को बचाया जाय. अगर समय रहते जल की व्यवस्था न की जाय तो बाँधसरोवर के समस्त प्राणी काल के गाल में समा जाएँगे. राजा व प्रजा विहीन राज्य का कोई अस्तित्व नहीं होता। "महाराज मंडूक फुदक कर आगे आये; और बोले- "इसलिए हम सबसे पहले केवल बाँधसरोवर की सुरक्षा के सम्बंध में विचार करें. यह सच है, जब किसी का घरौंदा उजड़ता है, तो वजह जानने के साथ-साथ निकटस्थ घरौंदे के यथावत कायम रहने पर उंगलियाँ उठती हैं. "तभी मिन्नी रानी को चुप और केऊ केकड़ा को कुछ कहते हुए देख महाराज मंडूक ने शांत हो जाना उचित समझा.

"महारानी मिन्नी आप कुछ कहना चाहती हैं, तो अवश्य कहिए. "महाराज केऊ केकड़ा ने कहा.

"अब मैं क्या बोलूँ महाराज ? बारिश के इंतजार के सिवाय भला मैं कर सकती हूँ. मैं अपनी प्रजा को लेकर अन्यत्र जा ही नहीं सकती. "महारानी मिन्नी मछली के स्वर में बड़ी आर्द्रता थी.

"बहुत समय तक जल समस्या व राज्य-सुरक्षा सम्बंधित बातें होती रही. विचार-विमर्श होता रहा. पर किसी न किसी तरह से समस्या निदान का उपाय टल ही जाता. बातें बनते-बनते बिगड़ जातीं. कुछ समय तक सभी खामोश हो जाते. एक-दूसरे को देखते रह जाते. पर आखिर बात कब तक नहीं बनती ? जब समस्या है, तो उसका निदान होना ही है. संसार में हर समस्या का हल है. अंत में महाराज केउ ने बिल्कुल सटीक व सकारात्मक उपाय रखा- "महाराज मंडूक ! महाराज जेठू ! हमें अपने राज्यों का जल महारानी मिन्नी के बाँधसरोवर तक पहुँचाने का प्रबंध करना चाहिए. इससे बाँधसरोवर का जल स्तर बढ़ेगा. प्रजा को राहत मिलेगी. बाँधसरोवर बच जाएगा. मुझे विश्वास है कि बारिश के मौसम आते तक हम तीनों के राज्य तो बच ही जाएँगे. "फिर सबने महाराज केऊ की बातों में हामी भरी. वे अपने-अपने राज्य को लौटे.

दो-तीन दिनों के बाद तालगढ़, ताँदुलासर व दर्रीताल के द्वारा बाँधसरोवर तक जल पहुँचाने का कार्य शुरू हो गया. तीनों राज्य की प्रजा भीड़ गयी. केकड़े जमीन खोदने लगे. मेंढक मिट्टी हटाने लगे. नाली बनने लगी. जोंक जलमार्ग के लिए नाली को साफ करने में लगे रहे. सबने एड़ी चोटी का जोर लगा दिया. सबकी मेहनत रंग आयी. जलमार्ग बन गया. बाँधसरोवर में तीनों जगहों से पानी जाना शुरू हो गया. पर्याप्त पानी होते ही बाँधसरोवर की प्रजा में प्रसन्नता छा गयी. अब चारों राज्य धैर्यपूर्वक बारिश की प्रतीक्षा करने लगे.

*****

बारिश आई

रचनाकार- श्रीमती रजनी शर्मा बस्तरिया, रायपुर

अपक, झपक,लपक,
देखो देखो बारिश आई.

मन्ना,दादा, ताऊ, दीदी,
तुम भी आओ बाहर माई.

आगड़ बागड़ पानी जाए,
बूंदे छपा छप करे छपाई.

बादलों के धूसर कागज पर,
बारिश लिखे लेख लिखाई.

तपती देह धरती की ताके,
बौछार पड़ी मिटी विवाई.

*****

परिश्रम से कमाया धन

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ति

सोनाखान क्षेत्र में एक जमींदर था.वह अपनी प्रजा से बहुत प्रेम करते थे.प्रजा के दुख: में दुखी,प्रजा के सुख में सुखी होते थे. उसकी जमीनदारी क्षेत्र में एक ब्राह्मण गरीब था.जो भिक्षा मांग कर जीवन यापन करते थे. भिक्षा में जो मिले उसी में खुश और संतुष्ट थे.

ब्राह्मण की पत्नी,सभी ब्रह्मणों को जमींदार से धन दौलत मांग कर अमीर बनते देख.अपने पति को भी जमींदार पास जाने के लिए बोलती पर ब्राह्मण नहीं मानते थे.

एक दिन ब्राह्मण अपनी पत्नी की बात में आकर जमींदार के पास चले गए. जमींदार, ब्राह्मण का आदर सत्कार कर बोले,ब्राह्मण देव कैसे आगमन हुआ? ब्राह्मण,जमींदार से अपने परिश्रम से कमाया हुआ एक आना मांगा जमींदार सोच में पड़ गए कि मैंने आज तक एक पैसा भी परिश्रम से नहीं कमाया. जमींदार ,ब्राह्मण को कल आने के लिए बोल कर चले गए.

ब्राह्मण के जाने के बाद जमींदार वेश बदलकर काम की खोज करते हुए लोहार के पास पहुँचा और उसके पास परिश्रम से एक आना कि कमाई करने के बाद अपने महल आया.अगले दिन जमीदार ने ब्राह्मण को एक आना दे दिया. ब्राह्मण देव उस पैसे को अपने पत्नी को दे दिए इस पर पत्नी नाराज होकर उसे तुलसी चौरा में फेंक दी. कुछ दिनों बाद ब्राह्मण की पत्नी प्रतिदिन तुलसी चौरा में पानी अर्पित करने लगी. उसमें पौधा उगता दिखाई दिया जो देखने में बहुत सुंदर था. देखते-देखते वह पौधा पेड़ में परिवर्तित हो गया और उसमे फल लगना प्रारंभ हो गया. उस फल और फूल की खुशबू चारों और आंगन में फैल रहा था . एक बार अचानक उस जमींदार क्षेत्र में भयंकर अकाल पड़ा जमीदार

प्रजा के दुख को देखकर अन्न ग्रहण नहीं कर रहे थे जिसका ज्ञान ब्राह्मण को हुआ तो जमीदार को मिलने के लिए घर से कुछ फल और फूल ले गए . जमीदार फल को ग्रहण करने के पूर्व अपने हंस को दिए हंस ने उसे खाया जमीदार इसे देखकर आश्चर्यचकित हुए और इस फल के बारे में जमीदार ने ब्राम्हण से पूछा ब्राह्मण के बताए जाने पर जमींदार ने ब्राम्हण को बताया कि यह मोती का फल है और उसे देखने उसके घर चले गए जमींदार फल के बदले उसे बहुत धन दौलत दिये , उस पेड़ को अपने महल के आंगन में लगाएं.

शिक्षा -परिश्रम का फल मीठा होता है.

*****

आश्चर्यजनक बातें

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ति

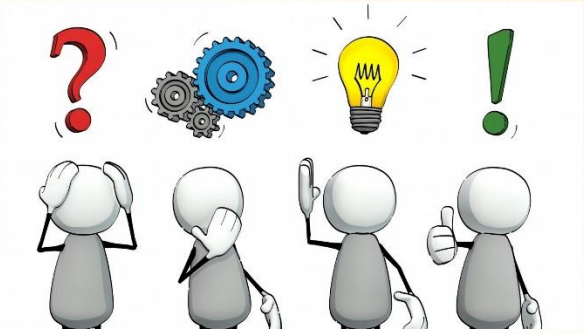

प्रश्न – कछुए के दाँत नुकीले होते हैं या चपटे ?
उत्तर – कछुए के दाँत नहीं होते.

प्रश्न – क्या समुद्र में रहने वाले मेंढक विषैले होते हैं ?
उत्तर – समुद्र में मेंढक नहीं रहते.

प्रश्न – बिना कान, पैर और पलक विहीन आँखों वाला जन्तु कौन हैं ?
उत्तर – साँप.

प्रश्न – वह कौन – सा जन्तु है, जिसकी पीठ के ऊपर आँखें होती है ?
उत्तर – तिलचट्टे की.

प्रश्न वह कौन सी मछली है, जिसके अंग से बिजली प्रवाहित होती है ?
उत्तर – टारपीडो.

प्रश्न – नक्षत्र व ग्रहों में क्या अंतर है ?
उत्तर – नक्षत्र स्वयं प्रकाशित हैं किन्तु ग्रह स्वयं प्रकाशित नहीं होते हैं.

प्रश्न – पृथ्वी के आकार की अपेक्षा सूर्य कितना बड़ा है ?
उत्तर – सूर्य का आकार पृथ्वी से 109 गुना अधिक बड़ा है.

*****

जैसी करनी वैसी भरनी

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ति

एक गांव में एक वृद्ध किसान रहता था.उनके चार पुत्र थे किसान ने अपने पुत्र को पढ़ाया लिखाया और अपने पैरों में खड़ा किये. सभी पुत्र अपने अपने काम धंधे में ध्यान दे रहे थे. किसान अपने पुत्रों के काम करने की लगन को देखकर सही उम्र पर उनका विवाह कर दिया.

कुछ वर्षों बाद किसान का पोता पोती पैदा हुए उनको भी पूर्ण निष्ठा लगन के साथ शिक्षा दीक्षा दिए और बड़े होकर अच्छे पद पर आसीन हुए. जैसे-जैसे समय बीतता गया किसान के पुत्रों ने अपने आपसी विवाद में आकर अपने पिता को घर से बाहर निकाल दिए.

वृद्ध किसान गांव के बाहर खेत में एक झोपड़ी बनाकर जीवन यापन कर रहे थे उनका मन वहा नही लगता था अपने पोता -पोती को देखने के बहाने घर के आस पास आ जाते थे और उन्हे देख खुश होते . कुछ वर्षों बाद पोता पोती का विवाह हुआ विवाह के बाद पोता भी अपने पिता को घर से बाहर निकाल दिए. वृद्ध किसान के पुत्र अपने करनी को समझ गए और अपने वृद्ध किसान पिता के पास क्षमा मांगने गए ,पर किसान भूख प्यास के कारण अपने प्राण त्याग दिए थे. वृद्ध किसान के पुत्रों को अपने करनी पर बहुत पछतावा हुआ.

शिक्षा - हम जो बीज बोते हैं वही फल हमें प्राप्त होता है.

*****

नाव और व्यापार

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ति

एक समय की बात है, एक व्यापारी व्यापार करने के उद्देश्य से शहर से गाँव गया. गाँव के बाहर एक बड़ी सी नदी बह रही थी, जिसे नाव के सहारे कम समय में पार कर गाँव पहुँच सकते थे. सड़क के रास्ते गाड़ी की मदद से जाने पर भी गाँव पहुँचने में कई घंटे लगते थे. व्यापारी ने समय बचाने के लिए नाव का सहारा लिया. कुछ दूर चलने के बाद व्यापारी ने नाव वाले से कहा- मैं आपके गाँव में पानी का फैक्टरी (कारखाना) लगाने आया हूँ. नाविक ने पूछा- यह क्या होता है साहब, हमें तो पता ही नहीं? व्यापारी ने पूछा- क्या कभी शहर नहीं गए हो? नाविक ने बड़े भोलेपन से कहा- मैं कभी शहर नहीं गया हूँ साहब. इस पर व्यापारी ने उसका खूब मजाक उड़ाया, नाविक चुपचाप सुनता रहा और नदी पार ले जाने के लिए लगातार नाव खेता रहा.

सहसा आसमान में बादलों की घटा छा गई , घोर गर्जन के साथ पानी बरसने लगा, नदी में ऊँची लहरें उठने लगी. कुछ समय पश्चात नदी में तेजी से जल स्तर बढ़ने से नाव अनियंत्रित होकर एक बड़े चट्टान से जोरों से टकरा गया, जिससे नाव में छेद हो गया और पानी भर जाने से नाव डूबने लगा. नाविक ने व्यापारी से पूछा- साहब आपको तैरना तो आता है न ? व्यापारी ने बताया कि उसे तैरना नहीं आता. नाविक नाव से कूद गया और धैर्यपूर्वक चुपचाप व्यापारी को अपनी पीठ पर लादकर तैरते हुए नदी पार कर किनारे पहुँचाया. अब नाविक और व्यापारी दोनों सुरक्षित थे, व्यापारी की आँखों में नाविक के प्रति कृतज्ञता के साथ अपनी कही हुई बातों के लिए शर्मिंदगी के भाव थे.

शिक्षा- हमें किसी को छोटा नहीं समझना चाहिए और उसका मजाक नहीं उड़ाने चाहिए.

*****

सदाचार एक नैतिक गुण

रचनाकार- पुष्पेंद्र कुमार कश्यप, सक्ति

सदाचार का अर्थ है सज्जन का आचरण या शुभ आचरण. सत्य, अहिंसा, मैत्री भाव आदि बातें सदाचार में गिना जाता है. सदाचार को धारण करने वाले सदाचारी कहलाते हैं. सत्य भाषण उदारता, विनम्रता और सहानुभूति का गुण जिस व्यक्ति में होता है सदाचारी कहलाते हैं . सदाचारी व्यक्ति का समाज में कुछ विशिष्ट स्थान होता है वह हमेशा पूजनीय होता है. एक कहावत के अनुसार धन हानि होने से मनुष्य का विशेष हानि नहीं होता परंतु चरित्र के नष्ट होने से मनुष्य का सर्वस्व नष्ट हो जाता है. समाज में व्यक्ति सदाचारी नहीं होते तो उसका पतन निश्चित होता है इसलिए सदाचार को सर्वोत्तम पूंजी माना गया है.

सदाचार मनुष्य को सभ्य बनाता है मनुष्य के मन से काम, क्रोध ,मोह लोभ आदि बुराइयां नष्ट हो जाता हैं. सदाचार से बड़ी से बड़ी कठिनाइयों का सामना करने से वह सरल हो जाता है. हमें महापुरुष जैसे राम,कृष्ण, गांधी के आचरण को आदर्श मानकर न्याय प्रिय आचरण करना चाहिए. सभ्य आचरण से एक सशक्त राष्ट्र निर्माण होता है.

सदाचार मनुष्य के व्यक्तित्व को प्रभावित करते हैं .हमें सर्वथा लोगों के साथ-साथ पशु ,पक्षी ,जीव ,जंतु के साथ अच्छा व्यवहार करना चाहिए हमे ऊंचे स्वर में किसी से बात नहीं करना चाहिए .कई बार लोग हमें नाम से ज्यादा व्यवहार से जानते हैं इसलिए हमें सर्वथा सदाचारी होना चाहिए.

*****

माता-पिता में ही ईश्वर अल्लाह समाया है

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी, महाराष्ट्र

माता-पिता में ही ईश्वर अल्लाह समाया है
हजारों पुण्य फल माता-पिता सेवा में समाया है
सारे तीरथ बार बार के तुल्य
माता पिता की सेवा एक बार है

माता पिता मेरे ईश्वर अल्लाह है
यही जमीन मेरी और आसमान हैं
वह खुदा मेंरे और भगवान हैं
माता पिता के चरणों में सारा जहान है

माता-पिता हर घर की शान है
उनके बिना सब बेकार है
माता पिता है तो समाज में नाम है
हमारे लिए वह इंसान नहीं ईश्वर अल्लाह है

माता-पिता से ही मेरी पहचान है
दुनिया में बस यह दोनों ही महान है
नहीं चाहिए मुझे कुछ यह मेरे सब कुछ है
मैं उनसे वह मुझसे बहुत खुश हैं

जानवर से बदतर है जिसने किया
माता-पिता का अपमान है
किस्मत वाले हैं जिनके ऊपर
अभी माता-पिता दृष्टि मान है

ईश्वर अल्लाह से विनती मेरी है
माता पिता के साथ स्थिर रखना मेरे पल
समय का चक्र घूमता है पर कर दो अचल
माता पिता के चरणों में रखना ना भटकूं आज ना कल

*****

स्कूल खुला फिर

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

पढ़ने-लिखने के दिन आए.
स्कूल खुला फिर हमें बुलाए.

बीत गए अब पल मस्ती के,
छोड़ें साथ मटरगश्ती के,
चलो खिलौने छोर टिकाए.
स्कूल खुला फिर हमें बुलाए.

पुस्तक-कापी, ढूंढो पेंसिल,
पढ़-लिख बनना है काबिल,
अपना बस्ता, पीठ लगाए.
स्कूल खुला फिर हमें बुलाए.

अपनी किस्मत स्वयं बनाओ,
जो चाहो वो तुम बन जाओ,
गुरुजन हमको राह दिखाए.
स्कूल खुला फिर हमें बुलाए.

पढ़ने-लिखने के दिन आए.
स्कूल खुला फिर हमें बुलाए.

*****

ओलम्पिक छतीसगढ़िया

रचनाकार- रुद्र प्रसाद शर्मा, रायगढ़

केशकाल के घाटी,
आ खेलबोन बाटी.

बाटी मारबो ठो-ठो,
खेलबो कबडी खो-खो.

जम्मू म घाट चिल्लस,
चल खेलबो बिल्लस.

रजधानी हवय दिल्ली,
खेला होही गिल्ली.

खेत म धान के बोनी,
फुगड़ी खेलबो नोनी.

जगाबोन तुलसी चौरा,
गिंजारबोन डोर म भौंरा.

रईपुर म नाका पचपेड़ी,
दउड़बोन चढ़के गेड़ी.

ओलम्पिक छतीसगढ़िया,
अब्बड़ भारी बढ़िआ.

*****

वर्षा रानी

रचनाकार- सुचित्रा सामंत, जगदलपुर

वर्षा के हर एक बूँद में दिव्य गुण समाई हैं,
अपने बूँदों को समेटकर ये धरती पर आई है.
जैसे ही वर्षा की बूँद पड़ती वृक्ष के ऊपर,
डाली डाली पत्ते पत्ते देखो कैसे हर्षाई हैं.
जब पड़ती खेतों पर बूँदें,फसलें भी लहराई हैं,
भिगा रही सबको बारी बारी,मन में हर्षाई है.
धरती भीगी अम्बर भीगी,सभी ओर हरियाली है,
मन में भी जीने की नई उमंग समाई हैं.
वर्ष के हर एक बूँद में मधुर संगीत समाई है,
रिमझिम- रिमझिम वर्षा रानी पूर्ण यौवन में आई हैं.
मन हर्षित है, तन हर्षित है नई चेतना जगाई हैं,
मानो लगता है बचपन,पुनः द्वार आई है.
हरी- भरी दृश्य मनोरम धरती पर छाई है,
वर्षा रानी के स्वागत में मोर ने सतरंगी पंख फैलाये हैं,
जिसे देख वर्षा रानी,मन ही मन मुस्काई हैं,
माँ भारती के गोद मे,तीन मास रह जाऊ यह इच्छा जतलाई हैं.

*****

सावन

रचनाकार- राधेश्याम सिंह बैस, बेमेतरा

उसनत गरमी म दिन बितगे, सावन म होगे उजियार.
सर -सर हवा के बोली,सावन के बरसा करथे पुकार.
खोचका डबरा के सुसी बुतागे, डारा पाना घलोक हरियागे.
आगे सावन के बरसा, भुइया म नवा फूल आगे.
रुख राई ह घोलोक हरियागे, किसान के रग -रग म ताकत आगे.
ये बरसा म जागे परान,खेत -खार म फसल छागे.
सावन संग म बारिश, भुइया म खुशी आगे.
टर्र -टर्र मेचका के बोली, नान्हे कीरा घोलो नइ पिछवागे.
बोहात पानी म डोंगा दौड़ाये, लइका पिचका पाछू दौड़न लागिस.
बाग बगीचा ह पहिने हरियर लुगरा,नाचत पाना -पाना आगू आगिस.
गिरत पानी म लइका भागे, गाँव गली म चिल्लाइस.
गडढा डिपरा सबो बरोबर, लइका पाछू डोकरा बबा ल आगू पाइस.
बादर होगे करिया -करिया, दहाड़ मारके जोर से चिल्लाइस.
ठाढ़े -ठाढ़े बिजली चमकत, रिमझिम -रिमझिम सावन गीत गाइस.

हो जाथे तन -मन हरियर, हाथ मेहंदी सजवा पाथे.
डारा साखा म झूला झूले, दुनिया ल महकाये बर सावन आथे.
सर -सर पवन पुरवइया, कर देथे मन ल पावन.
जलत काया ह जुड़ाथे,जब आथे सुग्घर सावन.
होवत संझा के बेरा म, बइठे सियान बबा के चौपाल.
भीगत भागे ओरछा कुरिया म, सावन नइ ठगे आसो के साल.

*****

जब देश की आजादी के 100 वर्ष पूरे होंगे

रचनाकार- किशन सनमुखदास भावनानी, महाराष्ट्र

जब देश की आजादी के 100 वर्ष पूरे होंगे
आजादी के अमृत काल तक भारतीय शिक्षा
नीति सारी दुनिया को दिशा देने वाले दिन होंगे
ये ख्वाब हमारे संकल्प सामर्थ्य से पूरे होंगे

अमृत काल में हिंदुस्तान की शिक्षा नीति की
विश्व प्रशंसा करे, यहां ज्ञान लेने आएं,
ऐसा हमारा गौरव हों,विश्व कल्याण की
भूमिका निर्वहन करने में भारत समर्थ होंगे

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को शिक्षकों प्रशासकों
ने गंभीरता से अमल में लाना है
शिक्षा क्षेत्र में भारत को
विश्वगुरु बनाना है

भारतीय युवाओं में प्रतिभा की कोई कमी नहीं
बस गंभीरता से उसे पहचानना है
शिक्षण को स्वांदात्मक बहुआयामी
आनंदमयी अनुभव बनाना है

छात्रों में मूल्यों को विकसित करने शिक्षकों
की महत्वपूर्ण भूमिका रेखांकित करनाहै छात्रों के
आचरण को सुधारने विपरीत परिस्थितियों
का सामना करने आत्मविश्वास जगाना है

भारत को मजबूत स्थिर शांतिपूर्ण देश
के रूप में विकसित करना है
शिक्षा क्षेत्र में भारत को
विश्वगुरु बनाना है

*****

बाल पहेलियाँ

रचनाकार- डॉ०कमलेन्द्र कुमार श्रीवास्तव, उत्तरप्रदेश

1. बच्चे बूढ़े और जवान,
मैं रखता हूँ सबका ध्यान.
पाँच अक्षर का मेरा नाम,
बोलो प्यारे राजा राम.

2. तीन अक्षर का मेरा नाम,
मुझे उड़ाते रानी राम.
बादल से भी मिलकर आऊँ,
बोलो बच्चों क्या कहलाऊँ?

3. साथ साथ मैं चलती जाऊँ,
किन्तु कभी मैं मिल ना पाऊं.
सबको मंजिल तक पहुँचाऊँ,
बोलो बच्चों क्या कहलाऊँ?

4. बिजली से मैं चलता जाऊँ,
तीन पंख या मेरे चार.
गर्मी से राहत पहुँचाऊँ,
मेरी महिमा अपरंपार.

उत्तर 1. टेलीविजन, 2. पतंग, 3. रेल पटरियां, 4. पंखा

*****

साथ मिलकर महत्वपूर्ण भूमिका निभाना हैं

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

साथ मिलकर महत्वपूर्ण
भूमिका निभाना हैं
संकल्प लेकर सुशासन को
आखिरी छोर तक ले जाना हैं

भ्रष्टाचार को रोककर सुशासन को
आखरी छोर तक ले जाना हैं
सरकारों को ऐसी नीतियां बनाना हैं
भारत को सोने की चिड़िया बनानां हैं

आधुनिक प्रौद्योगिकी युग में भी
अपनी जड़ों से जुड़कर रहना है
प्रौद्योगिकी का उपयोग
कुशलतापूर्वक करना है

प्रौद्योगिकी पर जोर देकर
विकास को बढ़ाना हैं

कल के नए भारत को
साकार रूप देना हैं

भारत को परिवर्तनकारी
पथ पर ले जाना हैं
सबको परिवर्तन का सक्रिय
धारक बनाना हैं

न्यूनतम सरकार अधिकतम
शासन प्रणाली लाना हैं
सुशासन को आखिरी
छोर तक ले जाना हैं

भारतीय लोक प्रशासन को
ऐसी नीतियां बनाना हैं
वितरण प्रणाली में भेदभाव
क्षमता अंतराल को दूर करना हैं

लोगों के जीवन की गुणवत्ता
कौशलता विकास में सुधार करके
सुखी आरामदायक बेहतर
ख़ूबसूरत जीवन बनाना हैं

सुविधाओं समस्यायों समाधानों
की खाई पाटना हैं
आम जनता की सुविधाओं को
अधनुतिक तकनीकी से बढ़ाना हैं

*****

व्यायाम

रचनाकार- गौरीशंकर वैश्य विनम्र, लखनऊ

अच्छा स्वास्थ्य मिले बिन दाम.
मित्रो! करो नित्य व्यायाम.

बैठे - बैठे ऊब रहे हो
आलस में क्यों डूब रहे हो
हाथ - पाँव को करो न जाम.

मन में चिंता, तन बेडौल
अपनायी क्यों टाल-मटोल
नियत समय पर कर लो काम.

हितकर योग, मनोरंजन
होता स्वस्थ, सुखी जीवन
पाओगे अच्छे परिणाम.
मित्रो! करो नित्य व्यायाम.

*****

मोर भारत माता के भुइयां

रचनाकार- कलेश्वर साहू, बिलासपुर

मोर भारत माता के सुग्घर भुइयां,
माथ नवा के परंय सब तोर पइयां.
आज तिरंगा के देखव बहुते शान,
सुरता करव शहीद मन के बलिदान.
गांधी, तिलक, सुभाष के मयारू देश,
जिअव अउ जियन दव के दिन संदेश.
मिलजुल के बनाबो भारत ल महान,
तभे हा ेही विश्व म भारत के सम्मान.
हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई के ये देश,
किसिम-किसिम के भाखा हे बिसेश.
झन करव अइसन बुता की होवय हाँसी,
जरूरत पड़ही त कलेश चग जाही फाँसी.
मोर भारत माता के सुग्घर भुइयां,
माथ नवा के परंय सब तोर पइयां.

*****

बारिश

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय, सरगुजा

बारिश की बूंदें जब पड़ती,
तप्त धरा तब नम हो जाती,
हरियाली चहुं ओर है छाती,
कृषक मन को खूब लुभाती.

रिमझिम सी जब पड़े फुहार,
सावन में तब आती बहार,
खेतों में हल चलने है लगते,
कृषक के तब भाग्य है जगते.

मेंढक टर्र -टर्र करने लगते,
झींगुर भी आवाज है करते,
बच्चे छप्पक छैय्या खेलते,
बारिश में जब वो है भींगते.

*****

पिताजी

रचनाकार- हर्षा मिश्रा, रायपुर

होते हैं मजबूत मगर भावुक भी वो होते हैं
अनुशासन को थामे जैसे चाबुक भी वो होते हैं.

भले कमाते हैं पैसे पर खुद पर खर्च नहीं करते
पहन पुरानी पोशाकों में भी शायद हर्ज नहीं करते.

मां में ममता भले बहुत हो,आंखों से छलकाती है
पिता के आंसू आते आते आंखों में मर जाती है.

हिम्मत होते हैं पापा जी भले बहुत कठिनाई हो
जितना भी हो अर्जन करते,जैसी भी कमाई हो.

बच्चों की उपलब्धि में जो सीना चौड़ा करते हैं
बच्चों पर गर आंच आए तो हाथ हथौड़ा करते हैं.

मां की ममता के आगे दुनिया भी नतमस्तक है.
पिता हमारे जीवन का गौरव से उठता मस्तक हैं.

*****

शान तिरंगा

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

भारत का है शान तिरंगा,
बलिदानी का मान तिरंगा.

केसरिया रंग त्याग सिखाता,
श्वेत निर्मल भाव जगाता.
हरियाली से खुशहाली हो,
सबको हरा रंग समझाता.

कहता है यह चक्र निरंतर,
मातृभूमि की मान तिरंगा.

आसमान में यह लहराये,
स्वतंत्रता की याद दिलाये.
सत्य, अहिंसा, शांति-प्रेम से,
जग में समता यश फैलाये.

बोलें जय- जय आओ मिलकर,
हम सबकी पहचान तिरंगा.

जाति- धर्म का नहीं आडम्बर,
शांति- सुधा बरसाता अंबर.

घाटी पर्वत जंगल में भी,
भारत की हर सीमाओं पर.

लहराता है यह लहर- लहर,
भारत माँ की गान तिरंगा.

*****

छतरी

रचनाकार- आशा उमेश पांडेय, सरगुजा

बच्चें करते जिद पापा से.
हमें दिला दो इक छतरी.
रंग बिरंगी रंगों वाली.
नीली पीली और काली.

बारिश घूप से सदा बचाती.
बच्चों के मन को हर्षाती.
नाना जी राजु से कहते.
रखना छतरी सदा साथ में.

छतरी होती बड़े काम की.
नहीं होती ज्यादा दाम की.
आता जब बारिश का मौसम.
बचाती सबको होने से नम.

*****

हमारा तिरंगा

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

भारत का अभिमान तिरंगा,
सभी दिलों का गान तिरंगा.

ऊंचे नभ पे जब लहराता,
लगता भारत शान तिरंगा.

वीर शहीदों के गुण गाता,
सारा हिन्दुस्तान तिरंगा.

सैनिक दल के लिये सदा है,
भारत का सम्मान तिरंगा.

*****

ओस

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

नन्ही नन्ही
नर्म सजीली
ओस सुहाती

शीतल कोमल
लगे लजीली
मन को भाती.

हरीतिमा पे
छम छम करती
नाच दिखाती.

सूरज जी की
गरमी पाकर
वो उड़ जाती.

*****

हाथी

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

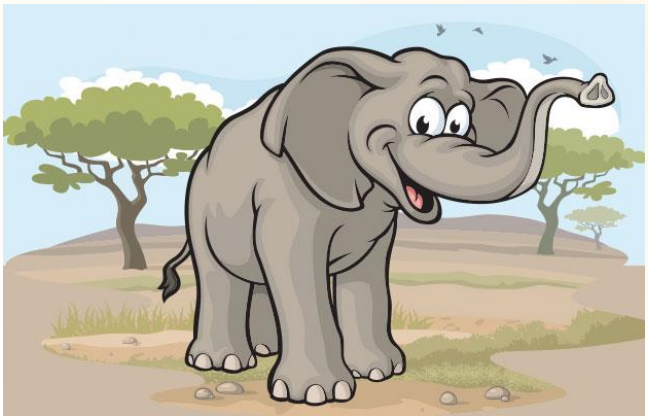

दर्जन केला खाता हाथी,
बन्दर को ललचाता हाथी,

शहद मांग के भालूजी से,
मीठा दिवस मनाता हाथी.

*****

गुरु का महत्व

रचनाकार- हिमकल्याणी सिन्हा, बेमेतरा

गुरु का प्रथम शब्द "गु" है जिसका अर्थ है अंधकार, "रु" का अर्थ है प्रकाश, गुरु हमें अंधकार रूपी अज्ञान से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर ले जाते है उन्हें हम गुरु कहते है. गुरु को भगवान से भी बड़ा बताया गया है, हमारे जीवन में गुरु का विशेष महत्त्व है, जो हमारा पल -पल, मार्गदर्शन करता है, एक बच्चा की प्रथम गुरु उनके माता- पिता होते है, फिर आगे बढ़ते -बढ़ते वह कई लोगों के सम्पर्क में आते है और कुछ न कुछ सीखते जाते है वही उनका गुरु बन जाता है, छात्र जीवन में गुरु का विशेष महत्व होता है यही वह समय होता है ज़ब बच्चा का सर्वांगिण विकास होता है एक तरफ माता पिता संस्कार देते है तो दूसरी तरफ गुरु ज्ञान देता है. गुरु बाहर से कठोर और अंदर से नरम होते है उनके डांट में भी प्यार छिपा होता है, वह हर समय अपने शिष्य का भला चाहता है, गुरु छात्र को हर एक परिस्थिति में जीना एवं हर एक मुश्किलों से लड़ना सिखाता है, शिष्य उच्चतम शिखर तक जाए यह उनके गुरु के लिए गर्व की बात होती है, गुरु का ज्ञान और शिक्षा ही जीवन का आधार है, गुरु के बिना जीवन की कल्पना भी अधूरी है.

अक्षर -अक्षर हमें सिखाते
शब्द शब्द का अर्थ बताते
कभी प्यार से कभी डांट से
जीवन हमें सिखाते.

*****

संगति का असर

रचनाकार- प्रिया देवांगन "प्रियू", गरियाबंद

बहुत पुरानी बात है. बोरसी नामक एक घना जंगल था. वन की दक्षिण दिशा में किरवई नदी बहती थी. नदी की काली-कच्छार भूमि से लगी एक बहुत बड़ी खुली जगह थी. उस जगह का नाम टीला था. वहाँ कई तरह के पक्षी रहते थे. इनमें एक कौए का परिवार था. उसके बच्चों के साथ एक कोयल का भी बच्चा था. उसका नाम था पीहू. उसे सब पीहूरानी कहकर बुलाते थे.

उस पीहू कोयल को पता ही नहीं था कि उसके माता-पिता कौन है. आखिर उसका बचपन कौए के बच्चों के साथ बिता था. पर अब वह वयस्क हो चुकी थी. उसके माता-पिता कौए के घोंसले में अंडा देकर चले गये थे. कौए के बच्चों के साथ पीहू की परवरिश हुई थी. उसका खानपान, व्यवहार व रहन-सहन कौए जैसा था. यहाँ तक उसकी आवाज कर्कश हो गयी थी. अब तक वह अपनी जाति के पक्षी को देखा नहीं था.उसे तो अपनी ही आवाज अच्छी नहीं लगती थी.

अक्सर वह कौए के बच्चों से बतियाया करती थी कि उसे उसकी आवाज बिल्कुल भी पसंद नहीं है. बेसुरा लगता है. किसी से बात करने का तो मन ही नहीं करता. पीहू की आवाज काँव-काँव तो नहीं थी, पर कौए के बच्चों से मिलती जरूर थी. कभी–कभी वह गीत गाने का भी प्रयास करती थी, लेकिन कौए के बच्चों के साथ रहकर उसकी कोशिश रंग में भंग हो जाती थी.

एक दिन पीहू बहुत उदास थी. कौए के साथ रहने का उसका बिल्कुल मन नहीं कर रहा था. अचानक वह उड़ गयी वहाँ से. एक आम के बगीचे में जा पहुँची. फलों से लदे पेड़

देख कर उसका मन आनंदित हो उठा. प्रकृति के सौंदर्य को वह बार–बार निहारती रही. आम का बगीचा उसे स्वर्ग सा लगा. वह एक डाली से दूसरे डाली पर उड़–उड़ कर जाती थी, तो कभी पत्तियों में छिप जाती. ठंडी–ठंडी चलती पुरवाई उसे भा गयी.

इस तरह साँझ होने लगी. जब सूरज ढलने लगा तो उसकी लालिमा आम के फलों में पड़ने लगी. आम और भी खूबसूरत दिखने लगे. पीहू को वहाँ से जाने का बिल्कुल मन ही नहीं हुआ. संध्या होते ही बगीचे में रहने वाले पक्षी आने लगे. उन पक्षियों में पीहू को अपनी जाति के पक्षी भी दिखाई देने लगे. उन्हें देख पीहू घबरा गयी कि वे उसे भगा न दे. वह तुरन्त पेड़ की पत्तियों में छिप गयी. डालियों पर बैठी अन्य कोयल एक–दूसरे से जब बातें करती थी, तो पीहू को बहुत ही अच्छा लगता था. उनकी आवाज में बड़ी मिठास थी. उसने स्वयं को और उन्हें देखने लगी. वे रंग-रूप में अपने जैसे लगे. पीहू सोच में पड़ गयी कि वह तो कौए का बच्चा है. भला इनके साथ कैसे रह सकती है. वहाँ से वह उड़ने ही वाली थी कि अन्य कोयल उसे देख लिये; और अपने पास बुलाकर पूछने लगे- " अरी...! तुम कहाँ से आई हो. बहुत डरी हुई हो; और क्यों ? " पीहू के मुँह से जरा सी भी आवाज नहीं निकल पा रही थी. उसे अपने आप में शर्म महसूस हो रही थी कि दोनों की आवाज में कितना फर्क है. अगर मैं इनके सामने कुछ बोलूँगी तो सभी मेरा मजाक उड़ाएँगे. अंततः ऐसा ही हुआ.

तभी एक कोयल पीहू से बोली- " घबराओ मत. तुम कुछ तो बोलो. तुम तो हमारी जाति की हो. बोलो... बोलो....." पीहू जैसे ही कुछ बोलने की कोशिश कर रही थी बाकी कोयल और उनके बच्चे हँसने लगे, क्योंकि पीहू की आवाज कर्कश थी. उन्हें हँसते देख पीहू को रोना आ गया. तभी एक कोयल ने उसके आँसू पोछते हुए बोली- " इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है. गलती तो हमारी है कि हम अपने घोंसले नहीं बनाते. कौए के घोंसले में अंडे देते है. और तुम जैसे बच्चे हमारी इसी गलती की वजह से फँस जाते हैं. तुम्हारी आवाज का कर्कश होना; तुम्हारा वहाँ रहना ही है. "पीहू सुबकते हुए बोली- " अब मेरी आवाज आप लोगों की आवाज जैसी सुरीली व मीठी कैसे होगी. " एक दूसरे कोयल ने कहा- " चिंता न करो पीहूरानी. अब से तुम हम सबके साथ रहोगी. तुम रोज मीठे-रसीले आम व अन्य मौसमी फल खाओगी. नदी व झरने का मीठा जल पियोगी. और ठंडे छायेदार वृक्षों में रहोगी; साथ ही साथ रोज गीत गाने की कोशिश करेगी तो तुम्हारी आवाज सुरीली व मीठी हो जायेगी. फिर सब तुम्हें पसंद करेंगे. "

उस दिन से पीहू कोयल रोज रसीले आम का आनंद लेने लगी. गाने का भी अभ्यास करने लगी. धीरे–धीरे उसकी आवाज सुरीली होने लगी. आवाज मिठास आ आने लगी. पीहू खुश हो गयी. वह सबको रोज गीत गा-गाकर कर सुनाने लगी. इस तरह पीहू कोयल को अपनी स्वयं की आवाज मिल गयी.

*****

छुप जाता मच्छर

रचनाकार- महेंद्र कुमार वर्मा, भोपाल

घर घर में छा जाता मच्छर,
सबको बहुत सताता मच्छर.

बीमारी फैलाकर भैया,
मंद मंद मुसकाता मच्छर.

गड्ढे का पानी घर उसका,
उसमे फसल बढ़ाता मच्छर.

मच्छरदानी में घुसने की,
अपनी जुगत भिड़ाता मच्छर.

रात जगाता गा के गाना,
सुबह कहीं छुप जाता मच्छर.

*****

सुंदर हिंदुस्तान हमारा है

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग

स्वर्ग से भी सुंदर, हिंदुस्तान हमारा है.
सारी दुनिया में, खास पहचान हमारा है.
स्वर्ग से भी सुंदर, हिंदुस्तान हमारा है.

खुशियों से भरी ये धरती हमारी है.
सितारों से सजा आसमान हमारा है.
स्वर्ग से भी सुंदर, हिंदुस्तान हमारा है.

सर्वत्र मोहक खुशबू बगराती है.
मुस्कुराता हुआ ये गुलदान हमारा है.
स्वर्ग से भी सुंदर, हिंदुस्तान हमारा है.

न कोई भूखा और प्यासा रहता है,
ममता परोसता खेत खलिहान हमारा है.
स्वर्ग से भी सुंदर, हिंदुस्तान हमारा है.

न भेद न शोषण को जगह मिलता है,
सबका पोषक न्यारा संविधान हमारा है.
स्वर्ग से भी सुंदर, हिंदुस्तान हमारा है.

*****

जिम्मेदार सोनू

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग

कल छुट्टी के बाद अपनी गाड़ी से मैं घर के लिए निकला था.सड़क पर एक 13 वर्ष का लड़का मुझे लिफ्ट के लिए रोका.उसकी हालात को देखकर मैं न चाहते हुए भी रुका ,उसे गाड़ी में बैठा लिया.

कुछ दूर चलने पर मैं उससे वार्तालाप शुरू किया.पूछा:-"बेटा तुम्हारा क्या नाम है." बताया:-"सोनू"

"आज स्कूल नहीं गया था"-मैंने फिर सवाल किया. बोला:-भैय्या मैं नहीं पढ़ता क्योकि मेरे पिताजी खतम हो गए हैं, मुझे घर चलाने काम करना पड़ता है.घर मे मेरी विधवा बीमार मां व और दो बहन व एक छोटा भाई है. सोनू लगातार अपने घर के बारे में बताता चला कि मेरी माँ काम नही कर सकती और तीनों भाई बहन को मैं पढा रहा हूँ.क्या काम कर लेता है बेटा"-मैने बीच में सवाल किया. सोनू फिर बताने लगा""मैं मंदिर व गुरुद्वारा में भीख मांगता हूं इकट्ठा पैसा मां को सौप देता हूँ.जिससे घर के लिए राशन खरीदते हैं."

फिर बोला"मैं बहुत फिकर में रहता हूँ.पापा होते तो मैं भी पढ़ता.खैर मैं अपने भाई बहन को खूब पढ़ाऊंगा और पापा के सपना को साकार करूंगा.

बात करते करते गुरुद्वारा आ गया,सोनू गाड़ी से उतर कर भिखारियों के कतार में बैठ गया,और मैं उसके साहस व समर्पण को नमन करते हुए आगे बढ़ गया.

*****

पेड़ लगाओ

रचनाकार- श्रीमती योगेश्वरी साहू, बलौदाबाजार

आओ बच्चों पर लगाये,
धरती हरी-भरी बनाएं.

सुंदर सुंदर फूल खिलेंगे,
मीठे मीठे फल मिलेंगे.

पेड़ के नीचे शीतल छाया,
जिससे होगी निरोगी काया.

पेड़ से मिलती ताजी हवा
सौ रोगों की एक दवा.

*****

उमड़-घुमड़ के आओ बदरा

रचनाकार- जीवन चन्द्राकर "लाल", दुर्ग

उमड़-घुमड़ के आओ बदरा.
और न तुम तरसाओ बदरा.

प्यासी धरती,ताल तलैय्या,
जिनकी प्यास बुझाओ बदरा.

दादुर,चातक तुम्हें पुकारे,
कंठ में उनके उतर जाओ बदरा.

मोर तैयार है नृत्य करने को,
सुर संगीत सजाओ बदरा.

नवांकुर असहाय हुए हैं,
साहस उनके सरसाओ बदरा.

किसान सब खाली बैठे हैं,
खेत की ओर ले जाओ बदरा.
उमड़-घुमड़ के आओ बदरा.

*****

एक और अनोखी उड़ान, क्या होगा भारत का चाँद ?

रचनाकार- प्रियंका सौरभ, हरियाणा

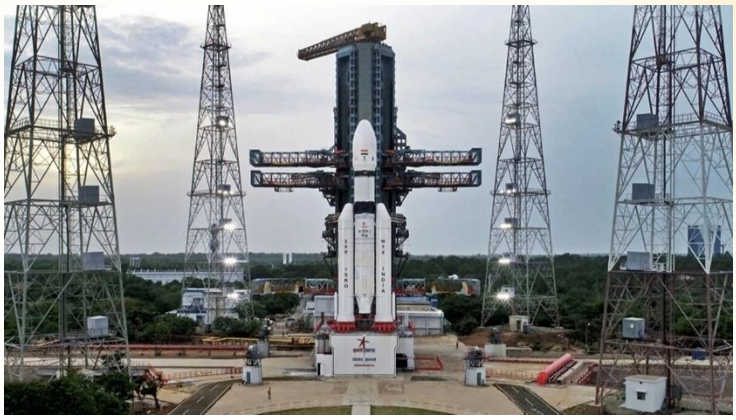

सांप और साधुओं का देश कहा जाने वाला भारत आज स्पेस टेक्नोलॉजी में दुनिया के ताकतवर देशों के साथ खड़ा है. भारत का लक्ष्य अपने चंद्रयान-3 मिशन के साथ चंद्रमा पर सफलतापूर्वक सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला चौथा देश बनना है. चंद्रयान-3 अंतरिक्ष यान का रोवर चांद की सतह का अध्ययन करेगा और यह लैंडर के अंदर बैठकर जा रहा है. इसरो ने बताया है कि चंद्रयान-3 मिशन के तहत इसरो 23 अगस्त या 24 अगस्त को चंद्रमा पर 'सॉफ्ट लैंडिंग' का प्रयास करेगा. लैंडर के मिशन की पूरी अवधि एक चंद्र दिवस की रहने वाली है, जो पृथ्वी के 14 दिन के बराबर है. पिछली बार क्रैश लैंडिंग हुई थी. पर इस बार अमेरिका, रूस और चीन के बाद भारत चांद की सतह पर लैंड करने वाला चौथा देश बनने के लिए तैयार है. 'स्पेस के क्षेत्र में हमारी विशेषज्ञता में जबर्दस्त इजाफा हुआ है. चांद को चूमने में अब भारत को ज्यादा इंतजार नहीं करना है.'

भारत की अंतरिक्ष एजेंसी जल्द ही एक रॉकेट लॉन्च करने के लिए तैयार है जो चंद्रमा पर एक रोवर को उतारने का प्रयास करेगा और अंतरिक्ष अन्वेषण में एक शक्ति और अंतरिक्ष वाणिज्य की नई सीमा के रूप में देश के आगमन को चिह्नित करेगा. 75 मिलियन डॉलर से कम के बजट पर निर्मित, चंद्रयान -3, जिसका संस्कृत में अर्थ है "चंद्रमा वाहन", लॉन्च होने के लिए तैयार है. अपनी पीठ पर चंद्रयान-3 लेकर जब इसरो का 'बाहुबली' रॉकेट अपने साथ 140 करोड़ भारतीयों की उम्मीदों की पोटली भी साथ ले जाएगा. चांद

को चूमने पर ये उम्मीदें हर भारतीय के दिल में खुशी बनकर फूटेंगी. पूरा देश दुआएं कर रहा है. पिछली बार जो कसक रह गई थी, इस बार सब मंगल ही होगा. जी हां, आसमान की तरह मुंह करके बुलंद इरादों के साथ खड़ा भारत का चंद्रयान मिशन पर रवाना होने को तैयार है. पूरे देश को बेसब्री से चंद्रयान की श्रीहरिकोटा से लॉन्चिंग का इंतजार है.

यदि मिशन सफल होता है, तो भारत संयुक्त राज्य अमेरिका, पूर्व सोवियत संघ और चीन वाले देशों के एक छोटे समूह में शामिल हो जाएगा, जिन्होंने चंद्रमा पर सॉफ्ट लैंडिंग की है. इस साल की शुरुआत में एक जापानी स्टार्ट-अप का प्रयास ऊंचाई की गलत गणना के कारण लैंडर के दुर्घटनाग्रस्त होने के साथ समाप्त हुआ, जिसका मतलब था कि अंतरिक्ष यान का ईंधन खत्म हो गया था. स्पेसआईएल और इज़राइल एयरोस्पेस इंडस्ट्रीज (आईएआई) द्वारा निर्मित एक इज़राइली अंतरिक्ष यान भी इस साल की शुरुआत में चंद्रमा की सतह पर दुर्घटनाग्रस्त हो गया था. 2020 में चंद्रयान-2 मिशन में एक ऑर्बिटर को सफलतापूर्वक तैनात करने के बाद भारत का अंतरिक्ष उद्योग इस मिशन से मुक्ति की तलाश में होगा, लेकिन इसके लैंडर और रोवर एक दुर्घटना में नष्ट हो गए थे. चंद्रयान-2 मिशन को स्थायी रूप से छाया वाले चंद्रमा के क्रेटर का अध्ययन करने के लिए डिज़ाइन किया गया था. ऐसा माना जाता है कि इसमें पानी का भंडार है जिसकी पुष्टि 2008 के पहले चंद्रयान-1 मिशन से हुई थी - जिसने चंद्रमा की कक्षा तो ली लेकिन उतरा नहीं.

यदि सब कुछ योजना के अनुसार हुआ, तो 43.5-मीटर (143-फुट) लॉन्च वाहन मार्क-III, रॉकेट अंतरिक्ष यान को 23 अगस्त के आसपास निर्धारित लैंडिंग के लिए चंद्रमा की ओर जाने से पहले एक अण्डाकार पृथ्वी की कक्षा में विस्फोट कर देगा, जहां के पास चंद्रयान-2 दुर्घटनाग्रस्त हो गया. लॉन्च वाहन मार्क-3 एक तीन चरणों वाला रॉकेट है जिसमें दो ठोस-ईंधन बूस्टर और एक तरल-ईंधन कोर चरण है. ठोस-ईंधन बूस्टर प्रारंभिक जोर प्रदान करते हैं, इससे पहले कि तरल-ईंधन कोर चरण रॉकेट को कक्षा में ले जाने के लिए निरंतर जोर सुनिश्चित करता है. चंद्रयान -3 में 2-मीटर (6.5-फुट) लंबा लैंडर शामिल है जिसे चंद्रमा के पास एक रोवर तैनात करने के लिए डिज़ाइन किया गया है. दक्षिणी ध्रुव जहां पानी की बर्फ पाई गई है. उम्मीद है कि प्रयोगों की एक श्रृंखला चलाने के बाद रोवर दो सप्ताह तक कार्यशील रहेगा.

प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार द्वारा निजी अंतरिक्ष प्रक्षेपण और संबंधित उपग्रह-आधारित व्यवसायों में निवेश को बढ़ावा देने के लिए नीतियों की घोषणा के बाद से भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा लॉन्च देश का पहला बड़ा मिशन है. 2020 के बाद से, जब भारत निजी लॉन्च के लिए खुला, अंतरिक्ष स्टार्ट-अप की संख्या दोगुनी से अधिक हो गई है. भारत ने, हाल के वर्षों में, खुद को वाणिज्यिक अंतरिक्ष संचालन के एक प्रमुख आपूर्तिकर्ता के रूप में मजबूत किया है, जिसमें नवंबर 2022 में प्रारंभ नामक मिशन के हिस्से के रूप में अपने पहले निजी तौर पर विकसित रॉकेट, विक्रम-एस का प्रक्षेपण भी शामिल है, जिसका अर्थ है शुरुआत.

भारत चाहता है कि उसकी अंतरिक्ष कंपनियां अगले दशक के भीतर वैश्विक प्रक्षेपण बाजार में अपनी हिस्सेदारी पांच गुना बढ़ा लें, जो 2020 में राजस्व के मामले में 2 प्रतिशत से अधिक है. भारत छोटे उपग्रहों को लॉन्च करने में अनुभवी है और इस बाजार पर कब्जा करने की कोशिश कर रहा है. खुद को उपग्रह प्रक्षेपण सुविधा के रूप में पेश करना है, भारत ने यूके स्थित उपग्रह कंपनी वनवेब के लिए 36 इंटरनेट उपग्रहों को सफलतापूर्वक कक्षा में स्थापित किया है. "भारत अंतरिक्ष को एक रणनीतिक संपत्ति के रूप में देखता है और इसका लक्ष्य बाहरी अंतरिक्ष में अग्रणी खिलाड़ियों में से एक बनना है." "यह भारत के लिए इस उद्योग में अग्रणी बनने का अवसर हो सकता है."

सांप और साधुओं का देश कहा जाने वाला भारत आज स्पेस टेक्नोलॉजी में दुनिया के ताकतवर देशों के साथ खड़ा है. भारत का लक्ष्य अपने चंद्रयान-3 मिशन के साथ चंद्रमा पर सफलतापूर्वक सॉफ्ट लैंडिंग करने वाला चौथा देश बनना है. चंद्रयान-3 अंतरिक्ष यान का रोवर चांद की सतह का अध्ययन करेगा और यह लैंडर के अंदर बैठकर जा रहा है. इसरो ने बताया है कि चंद्रयान-3 मिशन के तहत इसरो 23 अगस्त या 24 अगस्त को चंद्रमा पर 'सॉफ्ट लैंडिंग' का प्रयास करेगा. लैंडर के मिशन की पूरी अवधि एक चंद्र दिवस की रहने वाली है, जो पृथ्वी के 14 दिन के बराबर है. पिछली बार क्रैश लैंडिंग हुई थी. पर इस बार अमेरिका, रूस और चीन के बाद भारत चांद की सतह पर लैंड करने वाला चौथा देश बनने के लिए तैयार है. 'स्पेस के क्षेत्र में हमारी विशेषज्ञता में जबर्दस्त इजाफा हुआ है. चांद को चूमने में अब भारत को ज्यादा इंतजार नहीं करना है.'

*****

झर-झर-झर बरसे पानी

रचनाकार- अशोक पटेल "आशु", शिवरीनारायन

झर-झर-झर बरसे पानी
बुँदे पड़ी है, टप-टप-टप
कूद-कूद कर नाचे बच्चे
पानी करे छप-छप-छप.

कोई बच्चे छतरी पकड़े
कोई भीगे है तर-तर-तर
बारिश में ये खुशी मनाएँ
गली मुहल्ले डगर-डगर.

इधर-उधर ये दौड़ लगाए
मिट्टी के ये खिलौने बनाए
गली-गली उछल कूदकर
ये बच्चे नाव खूब चलाए.

*****

प्रकृति कुछ कह रही है

रचनाकार- गायत्री चन्द्राकर, 9वीं, देवरी

प्रकृति कुछ कह रही है,
कितना कुछ सह रही है,
क्या हमने कभी,
पेड़ों को गिरते है, देखा?
यदि हाँ, तो देखकर,
क्यों कर दिए अनदेखा.
क्यों हमारे अंदर नहीं है,
उनके लिए दया,
जो अपना सब कुछ,
हमें देते ही गया.
ये प्रकृति हमारे लिए,
क्या-क्या न सही है.
प्रकृति कुछ कह रही है.
सब कुछ उनसे ही पाते हैं,
ये हमारे लिए तो वरदान है.
अपने स्वार्थ के लिए,

पेड़ों को कटवा दें,
क्या वो एक इंसान है?
यदि हाँ, तो
हमारे नज़र में नहीं है.
प्रकृति कुछ कह रही है.

*****

रक्षाबंधन

रचनाकार- कन्हैया साहू 'अमित', भाटापारा

राखी लेकर बहना आई,
कहे 'गिफ्ट' देना ओ भाई.

'कैडबरी' का 'गिफ्ट पेक' हो,
मीठा में बस 'मिल्क केक' हो.

देना तुम मुझे 'ड्रेस फैंसी',
नगद नहीं ' क्रिप्टो केरेंसी'.

सुनकर भाई जेब टटोला,
कहने को अपना मुँह खोला.

पहले मैं कुछ पढ़ लिख जाऊँ,
जो चाहे वो तुझे दिलाऊँ.

*****

हिम्मत न हारेंगे

रचनाकार- श्री आसनदास महंत, कोरबा

बढ़ते रहेंगे,बढ़ते रहेंगे
हम हिम्मत न हारेंगे
धुन मंजिल को पाने की है,मंजिल पाकर मानेंगे.
हम हिम्मत न हारेंगे.

रूकने का तो नाम नहीं,हमको बढ़ते ही जाना है.
रूक जाना है मर जाना,बात ये हमने माना है.
नदियों से ले सीख हम्म.
नदियों से ले सीख हम कल कल बहते ही जाएँगे.
धुन मंजिल को.
हम हिम्मत न हारेंगे.

राह कठिन है दुर है मंजिल फिर भी बढ़ते ही जाना है.
रोड़ों बाधाओं तूफानों से हमको तो टकराना है.
कर्मवीर बनकर हम तो.
कर्मवीर बनकर हम तो अपना भाग्य सवारेंगे.
धुन मंजिल को पाने.
हम हिम्मत न हारेंगे

निष्ठा लगन और परिश्रम को हथियार बनाना है
दृढ़ निश्चय से मिले सफलता करके सिद्ध दिखाना है
हौसला विश्वास हमें.
हौसला विश्वास हमें हम जीत ही जाएँगे.
धुन मंजिल को.
हम हिम्मत न हारेंगे
हम हिम्मत न हारेंगे.

*****

मोर गाव

रचनाकार- बलराम नेताम, महासमुंद

आनी बानी के हे रुक राई सुग्घर हे छाव, प्रकृति के कोरा म बसे हावय मोर गांव, ठाकुर देव के जोहार लगाव, शीतला दाई ला माथ नवाव जिहा दाई ददा के परथन पाँव, बढ़ सुग्घर हे संगी मोर गांव.

तरिया पार के पिपर पेड़, खेतखार अउ धरसा मेड़ चिरई चिरगुन के चिव चाव, बढ़ निक हे संगी मोर गांव.

आनी बानी के नता गोता ल मानथे, जौन गांव में रहिथे तौन जानथे. सगा पहुना आय ले कांस के लोटा म देथे पानी, ये तो हरे संगी मोर गांव के कहानी.

*****

स्कूल चलो जायेंगे

रचनाकार- आदित्य बघेल, कक्षा- 8 वीं, शास. पूर्व माध्य. शाला बिजराकापा न, संकुल- लालपुर थाना, वि.ख. लोरमी, जिला- मुंगेली

स्कूल चलो जायेंगे,
वहाँ हम दोस्त बनायेंगे.
स्कूल से पढ़कर आयेंगे,
मम्मी-पापा को बतायेंगे.
स्कूल में पेड़ लगायेंगे,
तभी तो फल खायेंगे.
स्कूल में गाना गायेंगे,
टीचर से डॉट खायेंगे.
स्कूल में टीचर आयेंगे,
हम भी स्कूल जायेंगे.

*****

पर्यावरण

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली, विजयापारा

सुनो भैया सुनो किसान,
पेड़ पर्यावरण की जान,
इसे बचाना हमारा काम,
सबको देती जीवनदान.

पेड़ काटते हैं कुछ नादान,
भयंकर इसका है परिणाम,
बाढ़ ,सूखा उसका अंजाम,
बनता है जीवन बुरा संग्राम.

वर्तमान समय की यही मांग,
पेड़ लगा लो यथा सम्मान,
पर्यावरण जीवन की शान,
समझ ले यह बात वो इंसान.

पर्यावरण बचाना है हम सब को,
जीवन सार्थक बनाना हमको,
प्रकृति के कहर से बचाना हमको,
संवेदन शील बनाना हम सब को.

*****

पेड़

रचनाकार- योगेश्वरी तंबोली

आओ मिलकर पेड़ लगाए,
धरती पर हरियाली लाए.

पेड़ पौधों को पानी दे,
मानव को जिंदगानी दे,
आओ पेड़ लगाएं हम,
जीवन सुखी बनाएं हम.

जंगल हरा भरा बनाएं,
सब मिलकर शपथ उठाएं,
आओ मिलकर पेड़ लगाएं
धरती पर हरियाली लाएं.

खेतों में फसल लहराए,
भंवरे गुन गुन गाना गाएं,
आओ मिलकर पेड़ लगाएं.
धरती पर हरियाली लाएं.

*****

उम्र के पड़ाव

रचनाकार- हरीश कुमार देवांगन, कोण्डागांव

मेरा नाम रिंकू है. यह कहानी हम तीन भाई बहनों की है पिंकू, चिंकू और मैं उनमें सबसे छोटा रिंकू. बरसात का मौसम प्रारंभ हो चुका है और साथ ही स्कूल भी खुल चुके हैं. जैसा कि आप सभी के साथ हमेशा से होता रहा है कि जैसे ही घर से स्कूल जाने और स्कूल से वापस घर लौटने का समय होता है बारिश भी अपनी हाजिरी लगवाने आ ही जाती है. हम तीनों भाई बहन रोजाना स्कूल जाते हैं चाहे बारिश कितनी ही हो. आज भी स्कूल से घर के लिए निकलते ही बारिश ने अपनी दस्तक दे ही दी है. हम तीनों भाई-बहन दौड़ते हुए बाजार के रास्ते बारिश की फुहारों के साथ घर की ओर लौट रहें हैं. हमें रास्ते भर कई प्रकार के लोग देखने को मिल रहें हैं. कोई अपने दिनभर के काम से घर की ओर जा रहे तो कोई बारिश में भुट्टे का मजा और चाय की चुस्कियां ले रहें हैं. सब्जी वाले चाचा अपनी सब्जियों को सुरक्षित स्थान पर ले जा रहें. रिक्शावाले भईया की रिक्शा पानी में फंस गई तो कुछ समझदार लोग उनकी मदद कर रहें. हमारे गांव के इस बाजार में किसी ने छाता से तो किसी ने बरसाती कोट से स्वयं को सुरक्षित रखा हुआ है. बुजुर्ग दादाजी ने चाय की दुकान के पास खड़ा होकर स्वयं को भिगने से तो बचा लिया है लेकिन हमें भिगते हुए देखकर स्वयं के बचपन को याद करने से नहीं बचा पा रहें. कुत्ते खुद को बारिश से बचाने के लिए अपना आशियाना तलाश कर चुके हैं. बारिश के कारण सभी का हाल बेहाल हो रहा लेकिन हम तीनों अपने कपड़े, पुस्तकों की चिंता छोड़ अपनी

मौज में खुशियों से झुमते भिगते हुए घर की ओर लौट रहे हैं. दुपहिया वाहन चालकों ने अपनी सुरक्षा के लिए हेलमेट पहन रखा है. यह सब दृष्य देखकर मेरी खुशी दुगुनी हो चली है.

शिक्षा - हमको उम्र के हर पड़ाव को आनंदमय तरीके से व्यतीत करना चाहिए.

*****

बच्चे और बारिश

रचनाकार- श्रीमती रामेश्वरी सीके जलहरे, बलौदा बाजार

गर्मी की छुट्टी के बाद स्कूल खुल चुके है. सावन का सुहावना मौसम चल रहा है. आकाश में काले-काले बादल घिर आये है,गर्मी से राहत देने वाली हवाएं चलने लगी. ऐसा लग रहा अब बरसात होने वाली है. तभी मुन्नी को याद आया कि उसकी मां ने उसे अपने साथ छतरी रखने के लिए कहा था. पर वो छतरी रखना भूल गयी थी. स्कूल की छुट्टी के बाद मुन्नी घर भागते आ ही रही थी अचानक बाजार पहुँचते ही तेज बारिश शुरू हो गयी. अब मुन्नी अपने दोस्तों के साथ भीगने लगी. मुन्नी को भीगने में बहुत मज़ा आ रहा था. वह खुश होने लगी. बारिश से बचने के लिए कुछ लोग अपने घर की ओर जाने लगे, कुछ लोग आसरा ढूँढने लगे, कुछ अपने साथ रखे छतरी को खोल लिया, एक आदमी ने अपना बरसाती पहना, एक महिला बारिश के सुहावने मौसम में गरम- गरम भुट्टे का स्वाद ले रही थी, कुछ बुजुर्ग चाय की दुकान में चाय का लुत्फ़ ले रहे थे. कामगार व्यक्ति अपने समानों को पहुँचाने में लगे थे. मुन्नी भागते घर पहुँची, घर पहुँचकर अपने भीगे कपड़े निकाले. उसकी मां ने उसे नहाने को कहा. मुन्नी मना करने लगी. मां ने समझाया की बारिश में भीगने से हमारा तबियत खराब हो सकता है, सर्दी- बुखार हो सकता है. मुन्नी नहा धो कर तैयार हो गयी. सीख - हमें हमेशा बड़ों का कहना मानना चाहिए. घर से निकलने के पूर्व अपना सामान जाँच लेना चाहिए. बारिश में भीगने से बचें, क्योंकि भीगने से हमारे किताबें, बैग, यूनिफॉर्म, जूते खराब हो सकते है.

*****

परिवार से बड़ा सृष्टि में कोई लोक नहीं

रचनाकार- किशन सनमुख़दास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

परिवार से बड़ा सृष्टि में कोई लोक नहीं
बहन से बड़ा कोई शुभचिंतक नहीं
माता पिता से बड़ा सृष्टि में कोई अपना नहीं
प्रथम गुरु हैं माता पिता से बड़ा कोई नहीं

बड़े बुजुर्गों से बड़ा कोई धन नहीं
पिता से बड़ा कोई सलाहकार नहीं
मां के आंचल से बड़ी कोई दुनिया नहीं
भाई से बड़ा कोई भागीदार नहीं

करो दिल से सजदा इबादत बनेगी
बड़े बुजुर्गों की सेवा अमानत बनेगी
खुलेगा जब तुम्हारे गुनाहों का खाता
बड़े बुजुर्गों की सेवा जमानत बनेगी

कहने को परिवार घर दीवार छत है परंतु
यह खुशियों का अनमोल खजाना बताते हैं
बड़े बुजुर्गों वृक्ष हम शाखाएं हैं यह बताते हैं
यह सब को सुख सुविधा आरा िवार है फूलों की माला

परिवार है फूलों की माला यह सिखाते हैं
इस माला के हम सब फूल यह बताते हैं
प्रेम सद्भाव से रहना सिखाते हैं
भारतीय संस्कृति की यही पहचान बताते हैं

जिस परिवार में माता-पिता हंसते हैं
उनके आंगन में भगवान बसते हैं
प्रथम गुरु माता-पिता होते हैं
अच्छी सीख परिवार में देते हैं

*****

पृथ्वी

रचनाकार- उदय करन राजपूत, जालौन

अंडे जैसी अपनी धरती,
सूरज का चक्कर है करती
प्यारा सुन्दर रूप मनोहर,
भार बहुत सहन है करती,
चंद्रमा है उपग्रह प्यारा,
शीतलता हमको देता है.
सूरज करता है उजियारा,
कुछ नहीं हमसे लेता है.
पाँच सागरों में जल सारा,
सात द्वीपों में है संसार,
कहते हैं इसको ग्रह नीला,
महिमा इसकी बड़ी आपार.
हरा - भरा सुंदर रंगीले
वृक्ष धरा के हैं आभूषण.
जीवन हमको देते हरदम
करते दूर वायु प्रदूषण.

*****

देश हमारा सबसे प्यारा

रचनाकार- डॉ. सतीश चन्द्र भगत

ऋषि मुनियों का देश हमारा,
देश हमारा सबसे प्यारा.

इसका गौरव गान करें हम
रीति- प्रीत है इसका नारा.

हिम्मत वाले लोग यहाँ के,
हर हालत में करे गुजारा.

राम- कृष्ण की धरती है यह,
बहती है नदियों की धारा

हरे- भरे हैं खेत यहाँ के,
है मंदिर- मस्जिद, गुरद्वारा.

ऊँचे लक्ष्य हमें हैं पाने,
ऐसा हो संकल्प हमारा.

*****

भाखा जनऊला

रचनाकार- दीपक कंवर

1 भी		2			3		4 स		5 र
				6 ल					
7 बि									
				8 ख		9 ब			
			10					11 बे	
12	13				14 छे		15		
				16 गौ					17
	18 म						19	20 ब	
						21 घा			
22 म						23			

बाएँ से दाएँ

1. भिखारी 4. सहला
6. हितैषी 7. सवेरे
8. ओखली 10. एक चिड़िया/ धार कर
11. समय 12. हिलता
14. प्रसिद्ध त्यौहार
16. भगवान गणेश की माता 18. मुक्तिधाम/ कब्रिस्तान 19. किसलिये/ क्यों 22. रिश्तेदारी
23. प्रेमी, प्रेम करने वाला

पिछले भाखा जनउला के उत्तर

1 गु	ड़े	रि	या			2 ह		3 बें	
र					4 ख	ड़	5 खो	ड़ी	या
6 म	र	7 घ	टी	या		8 ब	खी		
टी		सें			9 जु	ड़		10 का	11 ल
या		12 ल	च	13 कु	र	हा			क
	14 चों	हा		ध			15 ब	क	ठा
17 गें				18 र	स	र	स	हा	
ग		19 स		सि			न		
20 र	म	के	लि	या		21 बो	हा	22 त	
वा		ल			23 बा	खा		24 री	ता

ऊपर से नीचे

2. दोपहर 3. सब्जी
4. सपाट 5. छत्तीसगढ़ की प्राचीन राजधानी
7. मांस/मछली का गंध
8. अहाता 9. छौंकना, फ्राई 11. सूरज 13. लाल मिट्टी 14. बकरी
15. बकरी चराने वाला
16. गांव का बड़ा किसान/धनी 17. मेरा
20. बछड़ा 21. धुप